



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी गृह-पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ इक्यावनवां अंक जनवरी-जून, 2025



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124



वियतनाम की राष्ट्रीय असेंबली के उपाध्यक्ष श्री गुएन डुक हार्ई के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल का दौरा



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ इक्यावनवां अंक

हिन्दी गृह-पत्रिका
जनवरी-जून, 2025

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

अनुक्रमणिका

स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

"लेखापरीक्षा प्रकाश" (हिंदी गृह पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ इक्यावनवां अंक

(जनवरी-जून, 2025)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री के. संजय मूर्ति

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

श्री के.एस. सुब्रमण्यम,

उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

एवं

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी,

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री भवानी शंकर

महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनुराग प्रभाकर

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

रचना चयन समिति

श्री भवानी शंकर

महानिदेशक (राजभाषा)

श्री अनुराग प्रभाकर

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

श्री संदीप कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री नमिता सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक : चन्दु प्रैस

469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट,

दिल्ली 110092

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

1. संदेश	3
2. संपादकीय	4
3. पाठकों से दो शब्द	5
4. आपके पत्र	6
लेख	
5. अनिश्चित जीवन और बेवजह की चिंताएं:	सचिन सिंह 9
6. पुस्तकों की महत्ता	सुमित 12
7. अनूठी प्रेरणा	कुमार सौरभ 14
8. कर्नाटक राज्य के प्रमुख दर्शनीय स्थल	एस.जी.श्रीमती 15
9. मेरी कल्पना में श्री राधा-कृष्ण की होली	नमिता सिंह 19
10. बोझ नहीं हैं बुजुर्ग	मनीष भाटिया 21
11. ब्राह्मी लिपि : स्मृति, संरचना और सभ्यता की अक्षर-यात्रा	धीरज कुमार रॉय 23
12. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान	सुदेश कुमारी 25
13. महिलाओं के प्रति समाज की मानसिकता	गोविन्द कुमार 31
14. संयुक्त परिवार	संदीप 33
15. विषय: हिंदी एक परोपकारी भाषा	जय प्रकाश 36
16. पंचतंत्र (एक संकलन)	स्वाति कुमारी 40
17. श्री गुरु रविदास जी: एक महान संत, कवि और समाज सुधारक	सजीव कुमार 43
18. भाषिणी: भारत की भाषाई विविधता से डिजिटल समावेशन की ओर	अमिताभ नाग 45
कहानी	
19. आश्रय	राजीव भाटिया 48
20. पछतावा	अमित उपाध्याय 50
21. वजूद	अमरेंद्र कुमार चौधरी 51
कविताएँ	
22. ऑडिट दिवस	मीना कुमारी 54
23. कुछ करने की पहल	रामानन्द शर्मा 54
24. कौन चित्रकार	देवेन्द्र कुमार 55
25. जनधन के प्रहरी	बिभुदत्त दोरा 55
26. पहलगाम	आरती शर्मा 56
27. मुश्किलों का हल	हरिओम कुमार 56
28. बुरा ना मानो होली है	नवीन देया 57
29. भारत के वीर सपूत	विक्रम सिंह 58
30. सफर और वो	नीतीश कुमार 59
31. सेहत के दोहे	पूनम मुन्जाल 61
32. हर सुबह के नाम एक वादा	कुसुम लता 62
33. हिसाब-किताब	कृष्ण मुरारी जयपुरियार 63
34. मेरी अभिलाषा	ऐनी जीजो 64
35. शुचिता का स्वर : लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा	डा० प्रदीप अग्रवाल 65
36. निजी यादों के नूर	श्री सियाशरण 66
प्रेरक प्रसंग 67	
मुख्यालय समाचार 71	

अस्वीकरण- पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी, आईएएस
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
Nilotpal Goswami, IA&AS
Addl. Deputy Comptroller & Auditor General



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
Office of Comptroller and Auditor General of India

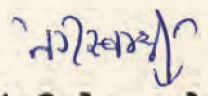
संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 151 वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से एक ओर जहाँ राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है वहीं दूसरी ओर ज्ञानार्जन एवं मनोरंजन भी हो रहा है। कार्यालय की गृह पत्रिका, केंद्र सरकार के अधिकारियों / कर्मचारियों के मध्य राजभाषा का प्रचार प्रसार करने का एक सशक्त माध्यम है। हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 151वें अंक का प्रकाशन इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है। यह पत्रिका राजभाषा को नये शिखर पर ले जाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता का निरूपण करती है, ठीक उसी प्रकार भाषा भी देश को एकरूपता के धागे में पिरोने का कार्य करती है। भारत की सामासिक संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु भारत के संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343-351 के अंतर्गत सभी भाषाओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह पत्रिका हमारे विभाग की गतिविधियों, उपलब्धियों और विचारों का संगम है और समृद्धि व उन्नति की दिशा में प्रेरित करती है।

अपने कार्यभार संभालने के कुछ समय की अवधि में मैंने यह अनुभव किया कि राजभाषा में कार्यालय की पारस्परिक अन्तःक्रिया और हितधारकों के साथ संचार की कुशल दक्षता के उद्देश्य से इस प्रक्रिया को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाना आवश्यक है। मुख्यालय ने इस दिशा में कुछ शृंखलाबद्ध कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है जिनके सकारात्मक परिणाम आने वाले समय में परिलक्षित होंगे। राजभाषा कार्यों में तकनीक के प्रयोग से अब राजभाषा विभाग के वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति गुणवत्तायुक्त, सहज एवं सरल बन जायेगी।

गृह पत्रिका के 151वें अंक के प्रकाशन जैसा लंबा सफर आप जैसे सुधी पाठकों के प्रेम एवं सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकता था। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर पत्रिका परिवार एवं संपादक मण्डल हार्दिक बधाई के पात्र हैं। इस संबंध में अखिल भारतीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान प्रशंसनीय है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी पत्रिका परिवार को आप लोगों का और अधिक योगदान एवं प्रेम प्राप्त होगा।

शुभेच्छा !


(डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी)

संपादकीय



भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

प्रिय पाठकों !

कार्यालय की गृह पत्रिका का उद्देश्य विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में उनकी अपनी भाषा के प्रति दबी हुई हीन भावना को उसी भाषा में मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर देकर समाप्त करना है। एक विदेशी जाति द्वारा विदेशी भाषा में एक लंबे समय तक शासित हुए लोगों के मन मस्तिष्क पर विदेशी भाषा के प्रभाव को हटाने के लिए किसी कार्यालय की गृह पत्रिका से अच्छा विकल्प और कोई नहीं हो सकता। हिन्दी के पक्ष में इससे जोरदार बात नहीं हो सकती कि यह भाषा सरल है, जैसी बोली जाती है

वैसी ही लिखी भी जाती है और इन्हीं वजहों से इस भाषा को सीखना तुलनात्मक रूप से बहुत आसान है। यदि यह कहा जाए कि इस देश में इस भाषा को बोलने समझने वालों की संख्या एक अरब से भी अधिक है और विश्व में यह संख्या डेढ़ से दो अरब हो सकती है तो अतिशयोक्ति न होगी। हिन्दी भाषियों की इतनी बड़ी संख्या का कारण हिन्दी सीखने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर होने वाली वृद्धि ही है। यह हमारी भाषा के लिए एक शुभ संकेत है। इतनी विशाल संख्या का सबसे बड़ा कारण इस भाषा की सरलता ही है। इधर कुछ समय से इस भाषा में लिखी जाने वाली तकनीकी पुस्तकों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी में ज्ञान के हर एक क्षेत्र को अभिव्यक्ति दी जा सकती है। यानि कि विश्व का ऐसा कोई ज्ञान नहीं जिसे हम अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर न सकें। संभवतः इसकी इसी विशेषता के कारण ही संविधान ने सरकार को इस भाषा के प्रचार प्रसार का उत्तरदायित्व दिया है। हमारी सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के माध्यम से इस दायित्व को अच्छी तरह से निभा भी रही है। कंठस्थ, हिन्दी शब्द सिंधु आदि प्रयुक्तियों के अद्यतन विकास के माध्यम से राजभाषा विभाग ने हिन्दी को अनुवाद एवं शब्द सामर्थ्य की दिशा में सशक्त किया है।

परंतु राजभाषा के प्रचार प्रसार का यह दायित्व मात्र राजभाषा विभाग का नहीं अपितु हम सबका है। हमारे कार्यालय ने राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को काफी पीछे छोड़कर इस दायित्व को न सिर्फ निभाया है बल्कि कुछ सीमा तक बांटा भी है। हमारे कार्यालय द्वारा जून 2025 तक के सभी लक्ष्यों को बहुत सहजता एवं सुगमता से पूर्ण किया गया है। कार्यालय की वेबसाइट न सिर्फ द्विभाषी है बल्कि अद्यतित भी है।

पत्रिका का वर्तमान चिरप्रतीक्षित अंक जनवरी 2025 से जून 2025 तक की छमाही को आच्छादित करता है। इस बार पत्रिका में तुलनात्मक रूप से पठन सामग्री अधिक है। स्थान व समय की सीमाओं को देखते हुए सभी प्राप्त रचनाओं को पत्रिका में स्थान देना संभव नहीं हो सका है जिसके लिए हमें खेद है परंतु यह भी हमारा वादा है कि प्रकाशन योग्य जिन रचनाओं को स्थान नहीं मिल सका, वे रचनाएँ पत्रिका के शीघ्र प्रकाश्य अगले अर्थात् 152वें अंक में अवश्य ही पत्रिका की शोभा बढ़ाएंगी।

आशा है कि आपकी रचनाओं के रूप में हमें आपका प्रेम सदैव प्राप्त होता रहेगा।

आपका हितचिंतक

भवानी शंकर

प्रधान संपादक

पाठकों से दो शब्द



अनुराग प्रभाकर

वरिष्ठ प्रशासनिक
अधिकारी (राजभाषा)

प्यारे साथियों !

नमस्कार,,

पत्रिका के इस नए अंक को लेकर हम आपकी सेवा में पुनः उपस्थित हैं। इस बार भी हमें विपुल संख्या में आपकी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं जिससे हम अभिभूत हैं। इनमें प्रशंसा है, सराहना है, प्रोत्साहन है तो कहीं कहीं शिकायतें भी हैं। आपकी प्रतिक्रिया का प्रत्येक पक्ष हमारा संबल बढ़ाता है, हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करता है, पत्रिका में नए नए प्रयोग करने को उत्साहित करता है और आपकी शिकायतें हमें अपनी कमियों को दूर करने की प्रेरणा भी देती हैं। यह हमारी भाषा हिन्दी के लिए गौरव का विषय है कि पत्रिका में एक बड़ी संख्या उन लेखकों की है जो

हिन्दी से इतर भाषा-भाषी क्षेत्रों के हैं। भाषा विवाद, क्षेत्रीयता के इस युग में हिन्दी भाषा के प्रति आपका यह उत्साह भाषा के वर्चस्व के युद्ध के अंधेरे में एक दीप जलाने जैसा है।

आपके जलाए गए इन दीपों से हमारी पत्रिका का यह दीप सदैव आलोकित रहे इसी कामना के साथ आपको यह पत्रिका सौंपता हूँ। बदलते मौसम में अपने स्वास्थ्य का ख्याल अवश्य रखें एवं पत्रिका को अपनी रचनाएँ भेजना न भूलें।

आपका साथी

अनुराग प्रभाकर

संपादक

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना वर्ड सॉफ्ट कॉपी में ही भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 12 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।
संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002
2. कृपया लेख के साथ (i) मौलिकता प्रमाणपत्र, (ii) फोटो, (iii) नाम एवं पदनाम, (iv) कार्यरत/सेवानिवृत्त (यदि कार्यरत हैं तो अनुभाग); (v) यदि सेवानिवृत्त हैं तो, कार्यकाल के दौरान पदनाम; (vi) मूल कार्यालय का नाम और पता संपर्क संख्या के साथ (कार्यरत और सेवानिवृत्त दोनों का); (vii) वर्तमान कार्यालय का नाम, पता और संपर्क संख्या (यदि कार्यरत हैं तो); (viii) लैंडमार्क के साथ वर्तमान आवासीय पता, (ix) ई-मेल एवं मोबाइल नम्बर भी संलग्न करें, बैंक खाता विवरण संलग्न करें।
3. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
4. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
5. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :- **ईमेल: anuragp.cag@cag.gov.in; Contact : 9402275468**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।



आपके पत्र

महोदय/महोदया,

मुख्यालय से प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 150वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर बिभाष रंजन मंडल का लेख 'नाउरू : दुनिया का सबसे छोटा लोकतांत्रिक राष्ट्र', श्री अनुराग प्रभाकर का लेख 'समाज में नारी की स्थिति, श्री उदय प्रताप सिंह का लेख 'मानक देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी', श्री यशवंत कुमार वर्मा का लेख हिंदुस्तान के गौरव गाय, गंगा और गाँव', श्री हरिओम कुमार की कविता 'पुराने दिन', श्री रितेश गुप्ता का लेख 'वायु प्रदूषण सांसें उधार पर तथा श्री विवेक शर्मा की कविता 'बदलता वक्त' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
प्रियांका बी गोस्वामी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
महाराष्ट्र, नागपुर



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका लेखापरीक्षा प्रकाश का 150वां अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका राजभाषा के प्रसार के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय एवं रोचक हैं: विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम सं.	रचनाएँ	रचनाकार
1.	समाज में नारी की स्थिति कल और आज	श्री अनुराग प्रभाकर
2.	वायु प्रदूषण: सांसें उधार पर	श्री रितेश गुप्ता
3.	निवासन	श्री मुनीष भाटिया
4.	मेरे देश की बेटी	श्री रविन्द्र कुमार
5.	मानक देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी	श्री उदय प्रताप सिंह

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन एवं प्रकाशन हेतु संपादन से संबंधित सदस्य बधाई के पात्र है। पत्रिका के आगामी अंकों के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
प्रधान महालेखाकार (ले & ह) का कार्यालय, बिहार, पटना



महोदय/महोदया,

आपकी हिन्दी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 150वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"लेखापरीक्षा प्रकाश" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "युद्ध की भयानकता", "हिंदुस्तान के गौरव: गाय, गंगा और गाँव", "निर्वासन" और "मेरे देश की बेटी" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
ओडिशा, पुरी



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय और रुचिकर हैं। संपादक मंडल द्वारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलतापूर्वक किया गया है। युद्ध की भयानकता, नेतृत्व में प्रभावी संपर्क की शक्ति, हिंदुस्तान के गौरव: गाय, गंगा और गाँव, बदलता वक्त, मेरे देश की बेटी, पुराने दिन आदि रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
कार्यालय: प्रधान महालेखाकार । कार्यालय, (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़-160020



लेख



अनिश्चित जीवन और बेवजह की चिंताएं:



सचिन सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

प्रधान महालेखाकार (लेख. एवं हक.),
हरियाणा चंडीगढ़

जीवन एक अनिश्चित और अप्रत्याशित सफर है। हर सुबह एक नई उम्मीद लेकर आती है, लेकिन उसके साथ ही अनजानी चुनौतियां भी। हम कभी-कभी खुद को इस अनिश्चितता के बीच पाते हैं और इस अनिश्चित भविष्य को लेकर हम में से बहुत से लोग चिंतित हो उठते हैं। ऐसी चिंताएं जो कभी-कभी हमारी सोच से कहीं ज्यादा बड़ी हो जाती हैं। और हमारे मन को इतना परेशान कर देती हैं कि हम खुद को कमजोर और असहाय महसूस करने लगते हैं।

पर क्या ये चिंताएं सचमुच ज़रूरी होती हैं? क्या हम इनका बोझ अपने कंधों पर लेकर अपने जीवन को दुखी और तनावपूर्ण बनाना सही है? आइए हम इस लेख में समझते हैं कि अनिश्चित जीवन की वास्तविकता क्या है, और कैसे हम बेवजह की चिंताओं से मुक्त होकर खुशहाल जीवन जी सकते हैं।

जीवन की अनिश्चितता: एक अनिवार्य तथ्य

पहली बात तो यह है कि जीवन में निश्चितता नाम की कोई चीज़ नहीं है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, सब कुछ परिवर्तनशील है। हम योजना बनाते हैं, सपने देखते हैं, लक्ष्य तय करते हैं, लेकिन कई बार हमारी योजना काम नहीं करती। ऐसा इसलिए क्योंकि जीवन अपने नियमों से चलता है, जो हमसे स्वतंत्र हैं।

जैसे कोई किसान अपनी फसल उगाने की पूरी तैयारी करता है बीज बोता है, पानी देता है, खाद डालता है लेकिन मौसम, बारिश या सूखे पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता। फसल अच्छी होगी या नहीं, यह पूरी तरह से अनिश्चित होता है। किसान अपनी पूरी मेहनत करता है। लेकिन परिणाम को लेकर वह चिंतित नहीं रहता क्योंकि वह जानता है कि वह सब कुछ नहीं नियंत्रित कर सकता।

हम भी अपने जीवन में उसी स्थिति से गुजरते हैं। चाहे नौकरी हो, स्वास्थ्य हो, रिश्ते हों, या पैसा इन सब में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। इस अनिश्चितता को स्वीकार करना ही जीवन का पहला और सबसे बड़ा सबक है।

बेवजह की चिंताएं: मानसिक जाल में फंसना

अधिकांश समय हम भविष्य को लेकर बेवजह की चिंताओं में उलझ जाते हैं। अक्सर यह चिंताएं वास्तविकता से कहीं अधिक होती हैं। हम "अगर कुछ गलत हुआ तो?" या "क्या होगा अगर मैं सफल न हो पाया?" जैसी सोच में इतना खो जाते हैं कि हमारा मन बेचैन और परेशान हो जाता है।

उदाहरण के तौर पर, राकेश ने नौकरी के बारे में एक छोटी सी मुश्किल देखी और उसी से इतना तनाव लिया कि उसका नींद खुल गई। वह लगातार सोचता रहा कि कहीं नौकरी चली न जाए। परिणामस्वरूप उसका काम भी प्रभावित हुआ, उसका स्वास्थ्य बिगड़ा और उसने कई अवसर गंवा दिए। बाद में पता चला कि वह समस्या इतनी गंभीर नहीं थी, लेकिन उसकी चिंता ने उसे मानसिक रूप से कमजोर कर दिया।

ऐसी चिंताएं न केवल समय की बर्बादी हैं। बल्कि हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचाती हैं। अध्ययन बताते हैं कि अत्यधिक चिंता से दिल की बीमारी, उच्च रक्तचाप, पाचन संबंधी समस्याएं और नींद की कमी जैसी समस्याएं होती हैं।

चिंता का चक्र: कैसे बढ़ती है समस्या?

जब हम चिंतित होते हैं, तो हमारा मन नकारात्मक विचारों से भर जाता है। हम छोटी-छोटी समस्याओं को भी बड़ा बना लेते

हैं। इस सोच का दुष्प्रक्र शुरू हो जाता है जो हमें घेर लेता है। कभी-कभी यह स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि व्यक्ति अपनी सामान्य दिनचर्या में भी बाधा महसूस करता है। उसकी सोच सीमित हो जाती है, वह किसी भी निर्णय को लेने में असमर्थ हो जाता है और धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास भी घटता जाता है।

यहाँ तक कि छोटी-छोटी बातों पर तनाव लेना, जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को नज़रअंदाज कर देना, और अपने प्रियजनों के साथ भी दूरियां बढ़ने लगती हैं।

अनिश्चितता को कैसे स्वीकार करें?

जीवन की अनिश्चितता को स्वीकार करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यह जरूरी है। इसे स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं कि हम अपनी जिम्मेदारी छोड़ दें। बल्कि इसका मतलब

है कि हम अपने प्रयासों को परिणाम की चिंता किये बिना जारी रखें।

महान ग्रंथ भगवद गीता में कहा गया है: "कर्म करते रहो, फल की चिंता मत करो।" इसका मतलब है कि हमें अपने कार्य पूरे मन से करने चाहिए, पर परिणाम को लेकर चिंता नहीं करनी चाहिए।

वर्तमान में जिएं और चिंता को दूर करें

भविष्य को लेकर चिंता करना भविष्य को सुधारने में मदद नहीं करता। बल्कि यह हमें वर्तमान से दूर कर देता है। इसलिए हमें वर्तमान में जीना सीखना चाहिए।

सुमित एक विद्यार्थी है। वह अपनी परीक्षा को लेकर बहुत चिंतित रहता था। इतना कि वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाता था। एक दिन उसके शिक्षक ने उसे सलाह दी कि वह



भविष्य के परिणाम की चिंता छोड़कर पढ़ाई पर पूरा ध्यान दे। सुमित ने ऐसा किया और देखा कि उसका तनाव कम हुआ और उसका प्रदर्शन बेहतर हुआ।

कुछ उपाय जो चिंता कम करने में मदद करते हैं

1. दिनचर्या बनाएं:

रोज़ाना का एक सही समय निर्धारित करें, जिसमें आप काम, पढ़ाई, आराम और मनोरंजन का संतुलित मिश्रण करें।

2. सकारात्मक सोच विकसित करें:

हर परिस्थिति में कुछ अच्छा खोजने की कोशिश करें। हर कठिनाई के साथ सीख और विकास भी आता है।

3. ध्यान और योग:

रोज़ाना ध्यान और योग करने से मन शांत रहता है और चिंता कम होती है।

4. स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं:

अच्छा खाना खाएं, पर्याप्त नींद लें और नियमित व्यायाम करें।

5. अपनों से बात करें:

अपने मन की बात परिवार या दोस्तों से साझा करें। बातचीत से तनाव कम होता है।

6. अपने आप को स्वीकारें:

खुद को वैसा ही स्वीकारें जैसा आप हैं। कोई भी इंसान सम्पूर्ण नहीं होता।

जिंदगी की सुंदरता अनिश्चितता में है

अगर जीवन हमेशा निश्चित और पूर्वानुमेय होता, तो शायद



उसमें उत्साह और रोमांच नहीं होता। हम जो अनुभव करते हैं, वे ही हमें जीवन में सीख और बढ़त देते हैं। अनिश्चितता हमें तैयार करती है नए बदलावों के लिए, नए रास्तों को खोजने के लिए।

अंत में यह कहना गलत नहीं होगा कि चिंता एक मानसिक रोग की तरह है जिसे हमें समझदारी से संभालना है। अनिश्चित जीवन को समझना, उसे स्वीकार करना और बेवजह की चिंताओं से ऊपर उठना ही सच्ची खुशी का रास्ता है।

निष्कर्ष

जीवन हमेशा निश्चित नहीं होता। और यही उसकी खूबसूरती है। हम अनिश्चितताओं से डरने के बजाय उन्हें स्वीकार करें। चिंता को अपने जीवन पर हावी न होने दें।

अपनी ऊर्जा और समय को उन चीजों पर लगाएं जिन्हें आप नियंत्रित कर सकते हैं अपने कर्म, अपने प्रयास और अपने सोच। अपने वर्तमान में पूरी तरह जीओ, और आने वाले कल की चिंता में खुद को न खोएं।

याद रखें, जीवन का असली सुख और शांति तभी मिलती है जब हम अनिश्चितता को स्वीकार कर, वर्तमान में संतुष्ट और खुश रहना सीख जाते हैं।

पुस्तकों की महत्ता



सुमित

लेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखा व हक), हरियाणा

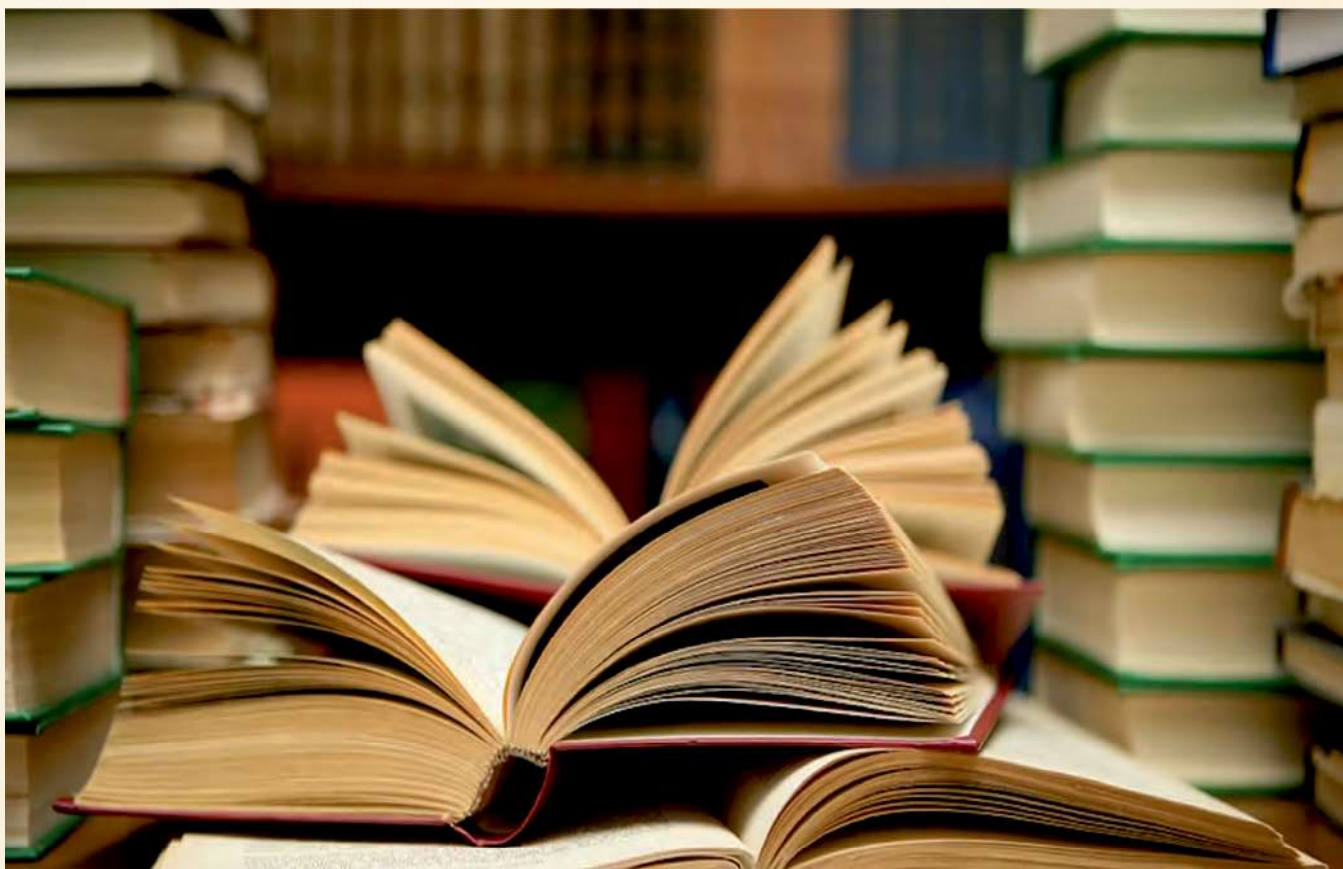
“अगर तुम्हारे पास एक बगीचा है और एक पुस्तक, तो तुम्हारे पास वह सब है जो तुम्हें चाहिए।” मार्क्स टुलियस सिसरो

अब ज़रा सोचिए, अगर ये किताबें न होती तो क्या होता? इतिहास की किताब न होती तो आज भी हम सोचते कि पानीपत की लड़ाई शायद दो पानीपत वालों के बीच कोई कुश्ती का मैच था। विज्ञान की किताब न होती तो बिजली को देखकर अब भी लोग डर के मारे ताली बजा देते या भगवान समझकर धूप दिखाते। और गणित... ओह गणित । अगर उसकी किताब न होती, तो हमें कभी पता ही न चलता कि

जिंदगी में “X” और “Y” से भी कोई बड़ा पंगा है। आज के ज़माने में लाइब्रेरी जाना वैसा ही है जैसे धोती पहनकर मेट्रो में चढ़ जाना-संस्कार है पर लोग हँसते हैं।

किताबें क्यों पढ़ें?

किताबें पढ़ने से इंसान का दिमाग वैसे ही चमकने लगता है जैसे संगमरमर पर धूप। आपको हर विषय की थोड़ी-थोड़ी जानकारी मिलने लगती है कौन राजा कब लड़ा, कौन वैज्ञानिक क्या फोड़ आया, और कौन सा कवि किसके लिए



रोता रहा। जो लोग किताबें पढ़ते हैं, उनकी भाषा में मिठास होती है। वो बात ऐसे करते हैं जैसे समोसे में चटनी हो थोड़ा तीखा, थोड़ा मीठा और हमेशा मजेदार। और जो नहीं पढ़ते, उनकी भाषा अपरिष्कृत एवं अक्सर “क्या बोल रहा है बे” टाइप की होती है। किताबें बताती हैं कि झूठ बोलना गलत है, चोरी करना पाप है और पड़ोसी की खिड़की में झांकना गंदी बात है। मतलब हर वो काम जो आपके माता-पिता बचपन से समझाते हैं, किताबों में भी वैसा ही लिखा होता है बस ज़रा साफ-सुथरे शब्दों में।

अब कुछ लोग सोचते हैं “अरे यार, हम तो मोबाइल पर सब पढ़ लेते हैं, किताबें क्यों पढ़ें?” तो भाइयों और बहनों, किताबें मोबाइल की तरह बार-बार नोटिफिकेशन नहीं भेजती कि “Sale चल रही है।” या “आपका दोस्त शर्ट खरीद रहा है।” किताबें शांति से एक कोने में बैठी रहती हैं, जब मन करे, खोलिए और ज्ञान लीजिए। और हाँ, किताबें आपकी गोपनीयता भी नहीं बेचतीं। ये नहीं बतातीं कि आपने “How to become smart in 10 days” सर्च किया था।

डिजिटल जमाने में किताबें

कभी वो ज़माना था जब किताबें सीने से लगाई जाती थीं। आज वो वक्त है जब किताबें शेल्फ पर धूल खा रही हैं और मोबाइल चार्जिंग केबल से लटककर उन्हें जलन हो रही है। किताबें सोचती हैं “हम तो जान की देवी के चरणों की धूल थे। अब तो मोबाइल की बैटरी के नीचे दबे पड़े हैं।” डिजिटल इंडिया आया, सबको “डिजिटल” बना दिया। अब लोग गूगल से पूछते हैं। गीता से नहीं। रामायण” पढ़ने का टाइम नहीं, पर Netflix पर ‘रामानंद सागर’ फिर से देख रहे हैं।

किताबें अब बस सजावट का हिस्सा हैं। कुछ घरों में तो किताबें background décor बन गई हैं -जूम मीटिंग में दिखाने के

लिए पीछे रखी जाती हैं ताकि लगे कि “भई पढ़े-लिखे इंसान हैं।

लाइब्रेरी का हाल

लाइब्रेरी अब उस बूढ़े दादा जी की तरह हो गई है जो कोने में बैठा रहता है, जिसके पास नहीं आता। कभी छात्र वहाँ झगड़ते थे, सीट के लिए, अब वहीं “Wi-Fi” की रेंज पकड़ी जाती है। एक ज़माना था जब लोग लाइब्रेरी में जाते थे ज्ञान अर्जित करने, आजकल जाते हैं Wi-Fi अर्जित करने। जहाँ कभी किताबों की खड़खड़ाहट सुनाई देती थी, अब वहाँ मोबाइल की नोटिफिकेशन टनटनाहट गूँजती है। लाइब्रेरी का मतलब अब “शांति का स्थान” नहीं रहा, अब ये एक ऐसी जगह है जहाँ आप “पढ़ने का नाटक” कर सकते हैं और इनस्टाग्राम की रील्स भी बिंज कर सकते हैं। अब समय ऐसा है कि लाइब्रेरी में अगर कोई इंसान दिख जाए, तो लोग समझते हैं “ज़रूर नेट बंद हो गया होगा।”

लाइब्रेरी में आने वाले कुछ खास कैरेक्टर:

1. Wi-Fi वॉरियर: जो किताब लेने नहीं, नेटवर्क चुराने आता है।
2. AC भक्त: बाहर 45°C हो. अंदर 25°C... पढ़े न पढ़े, सो तो लेगा।
3. Instagram Reader: किताब खोले बैठा है, पर पढ़ रहा है “20 ways to look smarter in public.”
4. भटकती आत्मा: बस आया, बैठा, घूमा, एक किताब उठाई, फोटो खींची, और चला गया।

अब भी समय है कि हम लाइब्रेरी को मज़ाक का पात्र नहीं, सम्मान का स्थल बनाएं। हर दिन थोड़ी देर किताबों से बात करें, बिना filter, बिना charger, बिना distraction। क्योंकि किताबें कहती हैं “हमारे अंदर Wi-Fi नहीं, लेकिन ‘Why’ का जवाब ज़रूर है।”

अनूठी प्रेरणा



कुमार सौरभ

लेखापरीक्षक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

(कें.) मुम्बई का कार्यालय

एक रात मैंने पानी में चने भिगोने डाले थे। अगली सुबह भीगे हुए चने देखकर एक विचार अकस्मात मेरे मन में तैर गया और उस विचार से एक प्रेरणा उत्पन्न हुई थी। वो प्रेरणा क्या है, आइए हम आपको बताएं।

हाँ, तो जब अगली सुबह मैंने चने को देखा तो बड़ी विचित्र चीज़ देखने को मिली। सभी चने पानी से फूलकर आकार में एक समान बड़े हो गए थे, लेकिन अधिकतर चनों में अंकुरण नहीं हुआ था। हालांकि, कुछेक चनों में अंकुरण हो गया था, मैं आपका ध्यान इन्हीं चनों की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूँ। ज़रा सोचिए, जब मैंने रात को चने भिगोने डाले होंगे तो ऐसा तो नहीं हुआ होगा कि उन्हें पानी में यह अभिमंत्रित करके छोड़ा होगा कि फ़लाँ-फ़लाँ चना अंकुरित हो जाए और उनके अतिरिक्त शेष में अंकुरण ना हो! आप भी मानते हैं ऐसा नहीं हो सकता, तो ऐसी क्या बात हुई होगी कि समान परिस्थिति और एक समान वातावरण तथा संसाधन से सज्ज होकर भी कुछ चने के दाने ज़्यादा तरक्की पा गए? दरअसल चने यहां उदाहरण मात्र हैं, मैंने इनका सांकेतिक उपयोग किया है। यह संकेत किसके लिए हो सकता है, आप सब भली-भांति समझ सकते हैं। स्रष्टा (दुनिया बनाने वाला/भगवान) ने किसी के साथ कोई बेईमानी नहीं की है, सबको एक ही दुनिया में पैदा किया है। किसी को जन्म से सबल बना कर भेजा है, तो किसी को श्रम करके सिद्धि पाने का हुनर देकर भेजा है। स्रष्टा ने अंततः सबको सिद्धि और सफलता मिलनी नियत किया है (यदि वे सतत प्रयासरत रहें तो)। हाँ यह बात अलग है कि कई मामलों में वे जो जन्मजात सबल

होते हैं, वे अपने साधन-संपन्न होने की खुमारी में अकर्मण्य होकर सबकुछ खो देते हैं, वहीं वह जो साधनहीन था; परंतु हुनरमंद था, वो कभी हार न मानने वाले जज़्बे से और अपने निरंतर प्रयास से सब कुछ पा जाता है। दुनिया में अगड़ा-पिछड़ा, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, फलाना-धिमकाना का रोना छोड़कर यदि उपलब्ध संसाधनों के साथ ही ईमानदार प्रयास किया जाए तो हर वो लक्ष्य प्राप्य है, जिसकी आकांक्षा हम सबको है। और प्रयास करने के लिए किसी बाहरी समर्थन या कृपा की आवश्यकता नहीं है, आवश्यक है तो सिर्फ और सिर्फ प्रेरणा की। प्रेरणा यह कि मुझे अमुक लक्ष्य प्राप्त करना है, प्रेरणा यह कि मुझे खुद को साबित करना है और प्रेरणा यह कि मुझे अपने लक्ष्य को पाने के लिए किसी बाह्य समर्थन या विशेष प्रावधान की कोई ज़रूरत नहीं है। आत्मा से उत्पन्न प्रेरणा दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त की गोली है, जिसका सेवन करके मनुष्य मुश्किल से मुश्किल काम कर जाता है और असाध्य को भी साध सकता है। प्रयास करिए, करते रहिए, सफलता थाल में परोसी हुई नहीं मिलेगी। अपने प्रयास में आप गिरेंगे, संभलेंगे, फिर गिरेंगे, फिर संभलेंगे और ऐसा करते-करते एक समय वो आएगा जब आपकी दृढ़ता और निरंतरता देखकर सफलता खुद आपके पैरों में आ गिरेगी।

चने के कुछेक दाने अगर हमें करके दिखा सकते हैं, तो हम तो यह निश्चित ही कर सकते हैं, अंकुरित हो सकते हैं। अन्यथा सिर्फ फूलकर ही संतुष्ट रह लेना है, तो चयन आपका है।

कर्नाटक राज्य के प्रमुख दर्शनीय स्थल

कर्नाटक राज्य अपने विस्तृत भूगोल एवं लंबे इतिहास के कारण, अत्यन्त आकर्षक पर्यटन स्थल बन गया है। राज्य में, एक ओर प्राचीन शिल्पकला से परिपूर्ण मंदिर हैं तो वहीं आधुनिक नगर भी हैं। नैसर्गिक पर्वतमालाएँ, वन संपदा, और लंबे सुनहरे रेतीले एवं शांत सागरतट भी हैं।

कोड़गु (कूर्ग):- यह एक लोकप्रिय हिल स्टेशन है जो भव्य पहाड़ों के बीच स्थित है। यह स्थल अपनी खूबसूरत हरी-भरी पहाड़ियों और उनसे होकर बहने - वाली नदियों के लिए लोकप्रिय है। यह अपनी संस्कृति के कारण एक लोकप्रिय गंतव्य के रूप में प्रसिद्ध है। मड़िकेरी इस क्षेत्र का केन्द्रबिन्दु है जहाँ से आने-जाने के लिए सभी परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कूर्ग की यात्रा पर विराजपेट, मुशालनगर, गौनिकोप्पल, सोमवारपेट जैसे खूबसूरत शहरों का भी भ्रमण कर सकते हैं।



बादामी: कर्नाटक के बागलकोट जिले में स्थित बादामी, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का हिस्सा है जो भारत के पारंपरिक मंदिर वास्तुकला का सबसे अच्छा उदाहरण है। यहाँ की वास्तुकला,



सं. ग. श्रीमती

सेवानिवृत्त (हिन्दी अधिकारी)

सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड

एजिज लेआउट, बेंगलूर, कर्नाटक

दक्षिण और उत्तर भारतीय शैलियों के उदाहरण है। बादामी गुफाओं में तीन हिन्दू मंदिर और एक जैन मंदिर हैं।



मैसूर:- यह शहर अपनी चमकदार शाही विरासत, जटिल वास्तुकला, प्रसिद्ध रेस रेशम साड़ियाँ, चामुंडी पहाड़, कृष्णराज सागर पुल, चिडियाघर आदि दर्शनीय स्थलों से परिपूर्ण है। इस नगर के एक लोकप्रिय तत्व है अष्टांग योग विद्यालय।



गोकर्ण: यह क्षेत्र अपने प्राचीन समुद्र तटों और लुभावने पर्यटकों के साथ, एक प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ शहर है। नारियल के पेड़, तथा साफ रेत से भरपूर गोकर्ण, देश का एक प्रसिद्ध तीर्थ-शहर है।



उडुपी - यह कर्नाटक का एक तटीय शहर है जो पूरे देश में अपने शाकाहारी व्यंजनों, और दक्षिण भारतीय व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है। एक पवित्र शहर होने के नाते, यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण कृष्ण मंदिर है। "मलपे बीच" एक आकर्षक केन्द्र है पर्यटन के लिए कर्नाटक के सबसे खूबसूरत समुद्र तट **उडुपी** में है। यहाँ से, यात्री लोग नाव से सेंट मेरी द्वीप जा सकते हैं जो अपनी काली चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है।



चिकमगलूर:- यह स्थल कर्नाटक की "कॉफी-भूमि" के रूप में लोकप्रिय है। यह नगर "मुल्लय्यगिरी" रेंज की तलहटी में स्थित है। चिकमगलूर कर्नाटक के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। अपने ऊँचे पहाड़ों, हरे-भरे जंगलों और अपने शांत

वातावरण के लिए प्रसिद्ध चिकमगलूर एक लोकप्रिय स्थान है पर्यटन के यहाँ के "काफी-एस्टेट" अत्यन्त सुन्दर है। यह एक लोकप्रिय ट्रकिंग जगह है जैसे मुल्लय्यनगिरि, केम्पनगुंडी और बाबा बुड़नगिरि। मुल्लय्यनगिरि कनटिक की सबसे ऊँची चोटी है और पहाड़ों के पीछे से उगते सूरत का बेहतरीन दृश्य देखने लायक है।



जोग फाल्स:- भारत में दूसरा सबसे ऊँचा झरना, जोग फाल्स, एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। यह कर्नाटक का सबसे ऊँचा झरना है।

जोग फाल्स, शिवमोग्गा शहर से 2 घंटे की यात्रा पर स्थित है। गेस्सोप्पा फाल्स या जोग फाल्स फाल्स के नाम से प्रख्यात यह मौसमी झरना, चार खंडों में विभाजित हैं। राजा, रोअरूर राकेट और रानी। उनका नाम, धाराओं की कुछ विशेषताओं के आधार पर रखा गया है। राजा एक अखंड धारा है, रोअरूर एक मजबूत धारा है, राकेट विभिन्न धाराओं में बहती हैं और रानी डाक शांत धारा है



दांडेली:- यह स्थल, उत्तर कर्नाटक के पश्चिमी घाट पर स्थित है। यह हरे-भरे जंगलों से भरपूर है और काली नदी के तट पर स्थित है। दांडेली, वन्यजीव अभयारण्य नाम से प्रसिद्ध है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह सुन्दर जगह है। दांडेली में कावला गुफाएँ, उलवी मंदिर, साथीली झरना जैसे प्रसिद्ध आकर्षक जगह हैं। कैपिंग यहाँ एक लोकप्रिय गतिविधि है और यहाँ यात्रियों के लिए शानदार सेवाएँ और यादगार अनुभव मिलता है।



बड़ीपुर (राष्ट्रीय उद्यान):- यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह मैसूर के महाराजा का शिकारगाह का स्थान था। यह राष्ट्रीय उद्यान मैसूर-ऊटी से 80 किमी दूर पर स्थित है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अत्यन्त मनमोहक है।

बीजापुर, कर्नाटक के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। बीजापुर, कर्नाटक राज्य का एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक जिला है। यह नगर भजन गोलगुम्बज और ऐतिहासिक धरोहरों के अन्य स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है। "इब्राहिम रोजा" बीजापुर का एक महत्वपूर्ण स्मारक है जिसे दक्षिण का ताजमहल कहा जाता है।

"देवबाग" कर्नाटक का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जो अपने सुन्दर नीले पानी, सुन्दर पहाड़ों से पर्यटकों को एक शानदार अनुभव प्रदान करता है। यह एक अद्भुत विदेशी द्वीप है जहाँ हर तरह का आनंद मिलता है। गोवा से के दक्षिणी भाग से लगभग २ किलोमीटर की दूरी पर, अरब सागर के तट पर स्थित देवबाग अत्यन्त सुन्दर स्थल है।

नंदी हिल्स: यह एक बहुत ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है जो राज्य की राजधानी बेंगलूर से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। समुद्र तट से लगभग 4851 फीट की ऊँचाई पर स्थित इस जगह से सूर्योदय का आकर्षक दृश्य हम देख सकते हैं।

हम्पी शहर:- यह शहर अपने खंडहरों के लिए काफ़ी प्रसिद्ध है। इसकी वजह से इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा भी मिला है। कर्नाटक राज्य में पहाड़ियों और घाटियों की गहराई में स्थित हम्पी शहर पर्यटकों के लिए एक ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ विजयनगर के साम्राज्य के अनेक स्मारक, सुन्दर मंदिर तथा कई प्राकृतिक स्थल स्थित है।



कूर्ण (कोड्यु) यह अत्यन्त मनमोहक हिल स्टेशन है। इसे भारत का "स्काटलैंड" कहा जाता है। यह पर्यटन स्थल प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है। खूबसूरत हरी पहाड़ियों और उसके साथ बहने वाली नदियों के लिए प्रसिद्ध है।

बेंगलोर:- एक गार्डन सिटी होने के साथ, भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में विकसित हो गया है। यहाँ पर अनेक आकर्षक पर्यटन योग्य केन्द्र हैं।

लाल बाग:- एक वनस्पति उद्यान है जो हैदर अली द्वारा 1760 में बनाया गया।

बन्नरघट्टा जैव उद्यान:- यह जगह बेंगलूर शहर से 22 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस में चिड़िया घर सफारी, बटरफ्लाई पार्क और जैसी विभिन्न ईकाईयां हैं।

वंडरला अम्युजमेंट पार्क:- इसे, अत्यन्त मनोरंजक पार्क कहा जाता है। यह हाई-थ्रिल, हाई राइड्स के लिए प्रसिद्ध है।

फ्रीडम पार्क:- नवंबर 2008 में जनता के लिए इस पार्क का उद्घाटन हुआ। इस पार्क में एक पुस्तकालय, बच्चों का खेल क्षेत्र और एक हिस्सा विरोध प्रदर्शन के लिए समर्पित है।

ऐतिहासिक स्मारक:

बेंगलूर फोर्ट:- 1537 ई० में केंपेगौडा द्वारा निर्मित एक किला है।

टीपू सुल्तान का ग्रीष्मकालीन महल 1791 में बनाया गया। यह एक संग्रहालय है जिसमें हैदर- टीपू शासन में निर्मित कलाकृति शामिल हैं।

मेयो हाल:- लार्ड मेयो की याद में बनाया गया है। यह ब्रिटिश वास्तुकला के डिजाइनों में बनाया गया है।

सरकारी भवन:-

1. सरकारी संग्रहालय की स्थापना 1865 में की गयी। यह पुराने आभूषणों, मूर्तिकला, सिक्कों और शिलालेखों सहित पुरातात्विक और भौगोलिक कलाकृतियों का एक दुर्लभ संग्रह है।
2. केम्पेगौड़ा म्यूजियम:- बेंगलूर शहर के संस्थापक श्री केम्पेगौड़ा (1513-1596) को समर्पित है। यह संग्रहालय मेयो हॉल की पहली मंजिल पर स्थित है।
3. जवाहरलाल नेहरू तारामंडल:- यह बेंगलूर शहर का एक लोकप्रिय आकर्षण है एवं बेंगलूर एसोसिएशन फार साइंस एजुकेशन (BASE) द्वारा प्रशासित किया जाता है। पूरी स्थापना विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों के लिए है, जिसका उद्देश्य पृथ्वी और अंतरिक्षीय पहलुओं का ज्ञान रोमांचक तरीके से प्रदान करना है।

एचएएल एयरोस्पेस संग्रहालय:- यह भारत का प्रथम एयरोस्पेस संग्रहालय है जो बेंगलूर में हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड परिसर में स्थित है। इसमें विभिन्न विमानों और हेलीकाप्टरों का प्रदर्शन, विमान इंजन मंडल, उड़ान सिमुलेटर और भारतीय विमानन इतिहास का प्रदर्शन है।

विश्वेश्वरैया औद्योगिक और तकनीकी संग्रहालय:- यह संग्रहालय, भारत रत्न सर एम विश्वेश्वरैया के सम्मान में बनाया गया है। इसका उद्घाटन भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा सन 1962 में किया गया।

गैलरी:-

नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट:- यह एक सुन्दर गैलरी है जिसका उद्घाटन 2009 में हुआ।

कर्नाटक चित्रकला परिषद:- यह उच्च मानकों वाली एक कला गैलरी है।

वेंकटप्पा आर्ट गैलरी:- प्रसिद्ध कलाकार वेंकटप्पा के नाम पर, अनेक प्रसिद्ध कलाकारों के शानदार काम प्रदर्शित हैं।

लुंबिनी गार्डन:- यह पार्क अपनी अवधारणा में अद्वितीय है। यह लोगों का आकर्षण पार्क है।

अभिनव फिल्म सिटी:- एक मनोरंजन और थीम पार्क है जो कार्टिंग, स्टेज तथा स्टूडियो सुविधाओं के साथ है।

क्रेजी वाटर्स:- बेंगलूर में एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित एक मनोरंजक पार्क है।

स्नो सिटी:- यह एक अनोखा पर्यटन स्थल है। पार्क में बच्चों के लिए झूलों, स्लाइड और एक भव्य बर्फ महल भी है।

बेंगलूर में अनेक सुन्दर मंदिर हैं जैसे शिव मंदिर, रागीगुड्डा ओजनेय मंदिर, इस्कान आदि। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि कर्नाटक एक प्रेक्षणीय राज्य है जो बहु संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है।

मेरी कल्पना में श्री राधा- कृष्ण की होली

"हरित होली, खुशहाल धरा।

रंगों संग प्रकृति से भी करे प्यार ज़रा।"

होली भारत का एक प्रमुख त्योहार है, जिसे रंगों का पर्व कहा जाता है। यह त्योहार न केवल रंगों से खेलने का, बल्कि आपसी प्रेम, भाईचारे और समरसता को बढ़ावा देने का भी प्रतीक है। होली का त्योहार भारत की संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं में विशेष स्थान रखता है। यह केवल रंगों का पर्व नहीं, बल्कि प्रेम, उल्लास और भक्ति का संगम भी है। जब हम होली की बात करते हैं, तो राधा-कृष्ण की होली की कल्पना स्वतः ही मन में उभर आती है। मथुरा, वृंदावन और बरसाना — ये वे पावन स्थल हैं, जहाँ राधा-कृष्ण की अनगिनत कहानियाँ प्रचलित हैं। इन स्थानों पर होली का उल्लास मात्र एक उत्सव नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव होता है। आइए, हम महसूस करें कि राधा और कृष्ण किस प्रकार इन पावन स्थलों पर होली खेलते रहे होंगे।



नमिता सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

बरसाना की लट्टमार होली: प्रेम और शरारत का संगम

होली में लोक संगीत, लोकनृत्य और पारंपरिक लोकगीतों की भी धूम है। देशभर में अलग-अलग क्षेत्रों में मनाई जाने वाली होली की विविधता इस पर्व को और भी रंगीन बनाती है। ब्रज की लट्टमार होली, वृंदावन की फूलों की होली, शांति निकेतन की सांस्कृतिक होली, और कुमाऊं की खड़ी होली जैसे आयोजन इस पर्व की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण हैं। बरसाना, राधा का जन्मस्थान, होली के सबसे अनूठे आयोजनों में से एक के लिए प्रसिद्ध है—लट्टमार होली। महसूस करें कि कृष्ण अपने सखाओं के साथ नंदगांव से बरसाना आए हैं, राधा और उनकी सखियाँ पहले से ही तैयार हैं। कृष्ण और उनके सखा होली खेलने के लिए बरसाना आते हैं, लेकिन यहाँ की गोपियाँ लाठियाँ लेकर उनका स्वागत करती हैं। राधा अपने हंसमुख और चंचल स्वभाव से कृष्ण को चिढ़ाती हैं, और गोपियाँ उनकी टोली पर लाठियाँ चलाने लगती हैं।

कृष्ण मुस्कुराते हुए अपने बचाव में इधर-उधर दौड़ रहे हैं, उनके सखा भी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि वे रंगों की बौछार से बच सकें। वातावरण हंसी-ठिठोली और प्रेम की भावना से भर जाता है। यह दृश्य केवल एक त्योहार का नहीं, बल्कि प्रेम, खेल और भक्ति का दिव्य रूप है। राधा अपने रंग से कृष्ण को सराबोर कर देती हैं, और कृष्ण प्रेमपूर्वक इसे स्वीकार करते हैं।

वृंदावन में फूलों और रंगों की होली

वृंदावन, जहाँ कृष्ण ने अपना बाल्यकाल बिताया, वहाँ की होली पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहाँ हम महसूस कर सकते हैं कि राधा-कृष्ण रासलीला के रूप में होली खेल रहे हैं। वृंदावन की गलियों में बांसुरी की मधुर ध्वनि गूंज रही है, और कृष्ण अपनी मनमोहक छवि में राधा के साथ होली खेल रहे हैं। फूलों की होली का दृश्य अद्भुत है—गोपियाँ और ग्वाल

कनेर, गुलाब, चमेली और टेसू के फूलों से एक-दूसरे को रंग रहे हैं।

"स्मेरं भावं नयनैः प्रविष्टं,

**व्रजांगनानां कृत चित्त मोहम्।" (भागवत पुराण
10.32.2)**

**(यह श्लोक बताता है कि कृष्ण की मोहक मुस्कान और
रंगों की छेड़छाड़ ने व्रज की गोपियों का मन मोह लिया है।)**

राधा और कृष्ण के बीच एक अनोखी छेड़छाड़ हो रही है। कृष्ण ने अपने हाथों में अबीर-गुलाल लिया है, और वे राधा को रंगने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन राधा की चतुराई के आगे वे भी हार मानने को विवश हो जाते हैं। राधा और उनकी सखियाँ कृष्ण को पूरी तरह रंगों में रंग देती हैं, और इस होली का रूप एक अलौकिक आनंद में बदल जाता है। वृंदावन की यह होली आत्मा को प्रेम और भक्ति से सराबोर कर देती है।

मथुरा की भव्य होली: भक्ति और उल्लास का संगम

मथुरा, जहाँ कृष्ण का जन्म हुआ, वहाँ की होली अनोखी होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीकृष्ण मथुरा की गलियों में घूमते हुए अपने भक्तों के साथ होली खेल रहे हैं। रंगों की वर्षा हो रही है, अबीर और गुलाल से पूरा वातावरण लाल-गुलाबी हो गया है। मंदिरों में भजन-कीर्तन गूँज रहे हैं, और भक्तगण कृष्ण के रंगों में रंगने के लिए उत्साहित हैं।

विशेष रूप से द्वारकाधीश मंदिर की होली का दृश्य बेहद मनमोहक होता है। कृष्ण और राधा की मूर्तियों को सुंदर रंगों से सजाया गया है, और श्रद्धालु भगवान को अबीर और गुलाल अर्पित कर रहे हैं। महसूस करें कि स्वयं कृष्ण और राधा भक्तों के बीच उपस्थित होकर उन्हें रंगों से सराबोर कर रहे हैं। यह दृश्य इतना पवित्र और आनंददायक है कि हर भक्त उसमें खो जाता है।

राधा-कृष्ण की होली: भक्ति, प्रेम और आनंद का प्रतीक

राधा और कृष्ण की होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि यह भक्ति, प्रेम और आत्मिक आनंद का प्रतीक भी है। यह हमें सिखाता है कि प्रेम यह दिव्यता और आत्मा की पवित्रता से जुड़ा होता है। बरसाना की लट्ठमार होली में प्रेम और शरारत

का संगम दिखता है, वृंदावन की फूलों की होली में सौंदर्य और माधुर्य समाहित होता है, और मथुरा की होली में भक्ति और भव्यता का नजारा देखने को मिलता है।

जब हम इन स्थलों पर राधा-कृष्ण की होली की महसूस करते हैं, तो हमें प्रतीत होता है कि यह केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा का परमात्मा से मिलन है। हर रंग, हर हंसी, हर छेड़छाड़ एक आध्यात्मिक संदेश देती है कि जीवन में प्रेम और आनंद से बढ़कर कुछ नहीं।

होली केवल रंगों का खेल नहीं है, बल्कि यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक भी है। होली का यह संदेश और अधिक प्रासंगिक हो गया है, जब समाज को एकजुटता, प्रेम और सौहार्द की सबसे अधिक आवश्यकता है। होली की आग हमें यह सिखाती है कि हम अपने भीतर की नकारात्मकता को जलाकर सकारात्मकता और प्रेम को अपनाएं।

निष्कर्ष

होली एक ऐसा पर्व है, जिसमें परंपरा, आधुनिकता, पर्यावरण-संवेदनशीलता और सामाजिक समरसता का सुंदर समावेश है। यह केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों का जीवंत प्रतीक है। जब हर चेहरे पर रंग और मुस्कान खिलते हैं, तब यह त्योहार हमें सिखाता है कि जीवन को प्रेम, रंग और आनंद से भर देना ही असली होली है।

राधा-कृष्ण की होली केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं, बल्कि प्रेम और भक्ति का जीवंत उदाहरण है। बरसाना, वृंदावन और मथुरा की होली में सम्मिलित होना एक दिव्य अनुभव है। इन स्थलों पर होली खेलते हुए कृष्ण और राधा की महसूस करना हमें आध्यात्मिकता और आनंद की अनुभूति कराता है। यह त्योहार केवल रंगों का नहीं, बल्कि हृदय की भावनाओं का, आत्मा की पवित्रता का और प्रेम की शक्ति का प्रतीक है। जब भी हम होली खेलें, तो हमें राधा-कृष्ण के इस दिव्य प्रेम को याद रखना चाहिए, जिससे यह पर्व और भी पावन और आनंदमय बन जाए।

"राग द्वेष विमुक्तैः तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।

आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥"

(भगवद गीता 2.64)

इस श्लोक में राग-द्वेष से मुक्त होकर प्रसन्नता प्राप्त करने का संदेश है, जो होली की भावना को दर्शाता है।

आलेख

बोझ नहीं हैं बुजुर्ग



मुनीष भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रत्यक्ष कर अनुभाग

कार्यालय प्रधान निदेशक,

लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

उम्र एक ढलती परछाई की तरह हर दिन घटती जाती है, और हर गुजरते पल के साथ हमारा जीवन एक दिन कम हो जाता है। यह अटल सत्य है कि हमारी साँसों का सिलसिला कब थम जाएगा, यह रहस्य केवल प्रकृति के पास है। शायद यही जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है कि हमें अपने अंत का समय नहीं पता। कर्म का सिद्धांत यही है कि हम जो भी कार्य या व्यवहार करते हैं, उसका परिणाम हमें अवश्य मिलेगा, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन पर लागू होता है। यह पूरी तरह से हमारे हाथ में है कि हम किस प्रकार के कर्म करना चाहते हैं—क्या हम स्नेह, सम्मान और प्यार के बीज बोते हैं या फिर उपेक्षा और नकारात्मकता के।

बच्चे अपने माता-पिता और बड़ों से ही सीखते हैं। यदि हम अपने बुजुर्गों के प्रति आदर और सम्मान नहीं दिखाते हैं, तो बच्चे भी यही सीखेंगे और हमसे उम्मीद नहीं करेंगे कि हम उन्हें समझाएं या मार्गदर्शन करें। यह एक चक्र है—हमारी हर क्रिया उनके लिए एक उदाहरण बनती है, और हमारे व्यवहार से ही वे अपने मूल्यों को विकसित करते हैं। जब हम अपने बड़ों की कद्र करते हैं और उनके साथ प्रेम और सम्मान का व्यवहार करते हैं, तो हम अपने बच्चों को भी यही सीख देते हैं। यही सही मायने में जीवन का सार है—सकारात्मक कर्म करना और उसे आने वाली पीढ़ियों को सिखाना है। बच्चे अपने आसपास के लोगों से, विशेषकर अपने माता-पिता और बड़ों से बहुत कुछ सीखते हैं। अगर हम अपने बड़ों का आदर नहीं करेंगे, उनकी बातों को महत्व नहीं देंगे, तो यह संदेश हम अपने बच्चों को दे रहे होते हैं कि उनके लिए भी

ऐसा व्यवहार सामान्य है। इससे यह अपेक्षा रखना कि भविष्य में बच्चे हमारी बात मानेंगे या हमारा सम्मान करेंगे, अनुचित होगा। यदि हम प्रेम, सम्मान और सहानुभूति के साथ अपने परिवार और समाज के प्रति व्यवहार करेंगे, तो यही मूल्य हमारी अगली पीढ़ी भी सीखेगी। कर्म का यह चक्र हमें इस बात की याद दिलाता है कि हमारा वर्तमान व्यवहार हमारे भविष्य का निर्माण करता है।

जीवन में वास्तविक सुख तो बुजुर्गों के साथ ही है, क्योंकि उनके पास जीवन का अनमोल अनुभव, ज्ञान और समझ होती है। वे अपने अनुभवों के आधार पर जो कुछ भी कहते हैं, वह हमें तुरंत नहीं समझ में आता, लेकिन समय के साथ उनकी बातों की सच्चाई और गहराई का एहसास होता है। बुजुर्गों का डांटना, रोकना और टोकना उनके प्रेम और जिम्मेदारी का ही हिस्सा होता है। वे हमें गलत रास्तों पर जाने से रोकते हैं, हमें सही और गलत का ज्ञान कराते हैं, ताकि हम जीवन में सफलता और संतुलन पा सकें। जैसे एक बुद्धिमान



व्यक्ति की कही बातें हमें तब तक समझ में नहीं आतीं, जब तक हम खुद जीवन के संघर्षों से न गुजरे वैसे ही बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह, चेतावनी, और अनुभव का मूल्य हमें बाद में तब समझ आता है, जब हम उन परिस्थितियों से गुजरते हैं। बुजुर्गों के पास जीवन का पूरा खाका होता है। उन्होंने समय की कसौटी पर चीजों को परखा होता है, इसलिए उनकी बातें और सुझाव अमूल्य होते हैं। वे हमारे लिए मार्गदर्शक होते हैं, और जब हम उनकी बातों को ध्यान से सुनते हैं, तो हमें उनके ज्ञान की असली ताकत का एहसास होता है। लेकिन जिस दिन हम उनकी बातों को अनसुना करना शुरू कर देते हैं, और उनकी सलाह या मार्गदर्शन को नजरअंदाज करने लगते हैं, यही वह पल होता है जब हमारी जीवन दिशा गलत मोड़ लेने लगती है। यह संकेत है कि हम अपने जीवन की बुनियादी समझ और मूल्यों से भटक रहे हैं। माता-पिता का अनुभव और ज्ञान हमारे लिए एक अमूल्य खजाना है, और उनकी बातें हमेशा हमें सही दिशा में रखने का प्रयास करती हैं। उनकी बातों को सुनना और समझना हमारा सुरक्षा कवच है।

बुढ़ापा जीवन का एक ऐसा दौर होता है, जब व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है, और उसे परिवार के स्नेह और समर्थन की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता के प्यार और देखभाल का भूखा होता है, वैसे ही वृद्ध व्यक्ति भी जीवन के इस पड़ाव पर बच्चों जैसा बन जाता है। इस उम्र में उनका दिल बच्चों की मासूम किलकारियों की ओर खींचता है, और वे परिवार के साथ का आनंद लेना चाहते हैं। यह वह दौर होता है जब शरीर भले ही थक चुका हो, लेकिन दिल और आत्मा में परिवार के प्रति उनका समर्पण और कर्तव्य अभी भी मजबूत होता है। यही वह समय होता है जब हमें उनके त्याग और बलिदान को समझ कर उनका सम्मान और देखभाल करने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए। आज के समाज में बुजुर्गों की स्थिति वास्तव में चिंताजनक है। जिन लोगों ने अपना पूरा जीवन अपने बच्चों और परिवार के लिए समर्पित कर दिया, अब उन्हें मार्गदर्शक समझने के बजाय बोझ माना जाता है। यह दुखद है कि कुछ लोग अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिए अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देते

हैं, बिना यह समझे कि वे वही लोग हैं जिन्होंने उन्हें जीवन की हर खुशी और संसाधन दिए हैं। जब बुजुर्गों को समाज में बोझ के रूप में देखा जाता है, तो यह हमारी संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है। उनकी भावनात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं को अनदेखा कर दिया जाता है, और उन्हें केवल वृद्धावस्था पेंशन या किसी अन्य आर्थिक लाभ के रूप में देखा जाता है। यह बेहद दुखद है कि उन लोगों की उपेक्षा की जाती है, जिन्होंने जीवन भर परिवार के लिए संघर्ष किया, प्यार और मार्गदर्शन दिया। वास्तव में, बुजुर्ग हमारे समाज का वह आधार हैं जिनसे हम सीख सकते हैं और उनके अनुभवों से प्रेरणा ले सकते हैं। उनकी उपेक्षा करना न केवल अनैतिक है, बल्कि यह समाज के मूल्यों के पतन का भी संकेत है। हमें उनके प्रति प्रेम, सम्मान और सहानुभूति दिखानी चाहिए, ताकि वे अपने अंतिम समय में अकेलापन या परित्यक्त महसूस न करें।

सौंदर्य, यौवन, और माता-पिता जीवन के वो रंग हैं जो समय के साथ खो जाते हैं। बुजुर्ग हमारे जीवन का ऐसा अनमोल खजाना होते हैं जिनका मूल्य तब समझ आता है जब वे हमारे साथ नहीं होते। यह कुदरत का नियम है कि ये सभी चीजें लौटकर नहीं आतीं। इसलिए, हमें इन क्षणों की कद्र करनी चाहिए, जब वे हमारे पास हैं। बुढ़ापा एक ऐसा समय होता है जब शारीरिक और मानसिक रूप से वे हम पर निर्भर होने लगते हैं। जिस तरह से उन्होंने हमारे जीवन के हर मोड़ पर हमें संभाला, अब हमारी बारी है कि हम उनकी देखभाल करें। हमारा नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है कि हम अपने बुजुर्गों की समस्याओं को समझें, और उन्हें वह सम्मान दें जिसके वे हकदार हैं। जिस तरह से उन्होंने हमारे जीवन के हर मोड़ पर हमारा साथ दिया, अब समय है कि हम उनके साथ खड़े हों, उनकी जिम्मेदारी उठाएं, और उनका सहारा बनें। बुजुर्गों की उपेक्षा, दुर्व्यवहार, या उनका तिरस्कार करना एक सामाजिक और मानवीय पतन को दर्शाता है। हमें यह समझना चाहिए कि हम जो बीज बोते हैं, वही फल पाते हैं। यदि आज हम बुजुर्गों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, तो कल जब हम उस स्थिति में होंगे, हमें भी वही स्नेह और सम्मान मिलेगा।

ब्राह्मी लिपि : स्मृति, संरचना और सभ्यता की अक्षर-यात्रा



धीरज कुमार राय

वरिष्ठ अनुवादक

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) का कार्यालय, आंध्र प्रदेश, विजयवाडा

भारत की सभ्यता केवल मंदिरों, मूर्तियों और ग्रंथों की स्थिर विरासत नहीं है, वह उन रेखाओं की निरंतर यात्रा भी है जिनमें मानव चेतना ने स्वयं को पहली बार स्थायित्व दिया। जब वाणी समय के प्रवाह में विलीन होने लगी, तब लेखन स्मृति का आश्रय बना। इसी ऐतिहासिक आवश्यकता से ब्राह्मी लिपि का उदय हुआ—एक ऐसी लिपि जो केवल ध्वनियों का संकेत नहीं, बल्कि भारतीय बौद्धिक परंपरा की आधारशिला है। इतिहासकार डी. डी. कोसांबी के अनुसार, भारत की बौद्धिक संरचना को यदि किसी एक लिपि ने संगठित किया है, तो वह ब्राह्मी ही है। वास्तव में, भारतीय उपमहाद्वीप से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैली लिपियों के मूल में ब्राह्मी की यही मौन, किंतु सशक्त उपस्थिति दिखाई देती है।

जैन परंपरा ब्राह्मी की उत्पत्ति को एक आध्यात्मिक आख्यान के रूप में देखती है। वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों ब्राह्मी को लेखन एवं सुंदरी को गणित का ज्ञान दिए जाने की कथा में भाषा और संख्या को स्त्री चेतना के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भारतीय ज्ञान-परंपरा के संदर्भ में लिखा है कि भारत में विद्या कभी मात्र बौद्धिक उपक्रम नहीं रही, वह सांस्कृतिक आस्था का विषय रही है। इस दृष्टि से ब्राह्मी लिपि केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान की पवित्र वाहिका बन जाती है। यद्यपि आधुनिक विद्वान इन कथाओं को प्रतीकात्मक मानते हैं, फिर भी यह निर्विवाद है कि जैन परंपरा ने लेखन और लिपियों के संरक्षण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

सम्राट अशोक के शिलालेखों और स्तंभों पर उत्कीर्ण अक्षर आज ब्राह्मी कहलाते हैं, किंतु यह नाम संभवतः मौर्य कालीन

नहीं है। 'ब्राह्मी' शब्द का प्रथम स्पष्ट उल्लेख हमें बाद के बौद्ध साहित्य में मिलता है। लगभग तीसरी शताब्दी ईस्वी में रचित ललितविस्तार सूत्र में राजकुमार सिद्धार्थ द्वारा सीखी गई लिपियों की सूची में ब्राह्मी का नाम सर्वप्रथम आता है। पुरालेखविद् डी. सी. सरकार के अनुसार, अशोककालीन लिपि का यह नामकरण आधुनिक विद्वानों की सुविधा का परिणाम है, किंतु इसकी ऐतिहासिक निरंतरता पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता।

संरचनात्मक दृष्टि से ब्राह्मी लिपि भारतीय भाषिक चिंतन की एक विलक्षण उपलब्धि है। यह न तो लैटिन लिपि की भाँति स्वर और व्यंजन को पूर्णतः पृथक् करती है, न ही सेमिटिक लिपियों की तरह स्वरों को गौण बनाती है। यह एक **आबूगीदा** (आबूगीदा ऐसी लिपि को कहा जाता है जिसमें व्यंजन और स्वर को एक इकाई में लिखा जाये। उदाहरण के लिए देवनागरी एक आबूगीदा है, क्योंकि "क" के व्यंजन और "ओ" के स्वर को एक ही ईकाई में मिलाकर "को" लिखा जाता है) है, जिसमें व्यंजन केंद्र में प्रतिष्ठित रहता है और स्वर उसके चारों ओर मात्रा बनकर जुड़ते हैं। भाषाविद् सुनीति कुमार चटर्जी ने इस व्यवस्था को भारतीय भाषाओं की ध्वन्यात्मक चेतना का सटीक प्रतिबिंब कहा है। यहाँ भाषा यांत्रिक नहीं, सृजनात्मक सत्ता बन जाती है, जिसमें पुरुष और स्त्री तत्व का सांस्कृतिक समन्वय निहित है।

अशोक के युग में गंधार क्षेत्र में खरोष्ठी लिपि भी प्रचलित थी। यह लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी और उस पर फारसी-अरामी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि ब्राह्मी बाएँ से दाएँ लिखी जाती रही और स्वतंत्र भारतीय परंपरा का प्रतिनिधित्व करती रही। इतिहासकार रोमिला थापर के अनुसार, ब्राह्मी

और खरोष्ठी का सह-अस्तित्व प्राचीन भारत की सांस्कृतिक बहुलता और वैचारिक उदारता को दर्शाता है। कालांतर में खरोष्ठी लुप्त हो गई, जबकि ब्राह्मी ने निरंतर रूपांतरण के माध्यम से स्वयं को जीवित रखा।

लिपियाँ सभ्यताओं के संवाद की मौन साक्षी होती हैं। ब्राह्मी के अक्षर बौद्ध भिक्षुओं और व्यापारियों के साथ समुद्र पार कर दक्षिण-पूर्व एशिया पहुँचे, जहाँ उन्होंने नई लिपियों को जन्म दिया। इसके विपरीत चीन में चित्रात्मक लिपि की परंपरा विकसित हुई, जिसमें हजारों चिह्न हैं। इस संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन ने उल्लेख किया है कि भारत की देन केवल विचारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्हें संप्रेषित करने की प्रणालियाँ भी विश्व-संस्कृति का अंग बनीं।

प्राचीन भारत में लेखन को सहज स्वीकार्यता नहीं मिली। स्मृति और श्रुति को ही ज्ञान का श्रेष्ठ माध्यम माना गया। 300 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी तक लेखन प्रायः प्राकृत भाषाओं में सीमित रहा। लगभग चार शताब्दियों के पश्चात संस्कृत ने लिखित रूप ग्रहण किया और 300 से 1300 ईस्वी तक यह अफगानिस्तान से वियतनाम तक सत्ता और संस्कृति की भाषा बनी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतीय परंपरा के संदर्भ में लिखा है कि भारत में ज्ञान का प्रवाह पहले कंठ से चला और बाद में लेखनी तक पहुँचा।

मौखिक परंपरा की सीमाएँ तब उजागर हुईं जब दिगंबर और श्वेतांबर जैन परंपराओं के बीच मतभेद उभरे। दिगंबरों ने अकाल के कारण मौखिक ज्ञान के नष्ट होने का दावा किया और श्वेतांबरों की परंपरा को अस्वीकार किया। संभवतः इन्हीं परिस्थितियों ने अशोक को लेखन को राज्याश्रय देने के लिए प्रेरित किया, ताकि नीति और धर्म की शिक्षाएँ काल के प्रवाह में नष्ट न हों। रोमिला थापर के अनुसार, अशोक के अभिलेख केवल राजाज्ञाएँ नहीं, बल्कि स्मृति-संरक्षण की ऐतिहासिक परियोजना थे।

ब्राह्मी की सबसे बड़ी विशेषता उसका निरंतर रूपांतरण है। उत्तर भारत में भोजपत्र पर लिखे गए अक्षरों ने कोणीय रूप ग्रहण किया, जबकि दक्षिण भारत में ताड़पत्र पर उकेरे

गए अक्षर गोलाकार बन गए। दक्षिण में वट्टेलुतु और ग्रंथ लिपियाँ विकसित हुई—एक तमिल भाषा की आत्मा बनी, दूसरी संस्कृत की वाहक। उत्तर में गुप्तकालीन नागरी से सिद्धम्, शारदा और नागरी विकसित हुई। शारदा से गुरुमुखी और नागरी से देवनागरी का विकास हुआ। के. एम. मुंशी ने देवनागरी को भारतीय भाषिक एकता का सेतु कहा है।

लगभग एक सहस्राब्दी पूर्व देवनागरी ने अपना स्थायी रूप ग्रहण कर लिया और उन्नीसवीं शताब्दी तक यह लगभग सौ भाषाओं की लिपि बन चुकी थी। संस्कृत की कोई स्वतंत्र लिपि न होते हुए भी उसका आधुनिक स्वर देवनागरी में ही मुखर हुआ।

इस प्रकार ब्राह्मी लिपि केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक धारा है। अशोक की शिलाओं से लेकर आधुनिक पुस्तकों के मुद्रित पृष्ठों तक इसकी यात्रा अखंड रही है। यह लिपि ध्वनि को रूप, विचार को स्थायित्व और संस्कृति को स्मृति प्रदान करती है। जैसा कि हजारप्रसाद द्विवेदी ने कहा है—जो लिपि संस्कृति को सँभाल ले, वही इतिहास में अमर होती है। ब्राह्मी उसी अमरता की भारतीय कथा है।

संदर्भ-सूची

1. डी. डी. कोसांबी, भारतीय इतिहास के अध्ययन का एक परिचय।
2. हजारप्रसाद द्विवेदी, भारतीय साहित्य की भूमिका।
3. डी. सी. सरकार, भारतीय पुरालेख।
4. सुनीति कुमार चटर्जी, इंडो-आर्यन और हिंदी।
5. रोमिला थापर, प्रारंभिक भारत: उत्पत्ति से 1300 ईस्वी तक।
6. राहुल सांकृत्यायन, वोल्गा से गंगा, लोकभारती।
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास।
8. रोमिला थापर, अशोक और मौर्यों का पतन।
9. के. एम. मुंशी, भारतीय संस्कृति।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान



सुदेश कुमारी

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा, उत्तर पश्चिम रेलवे,
जयपुर

जैसा कि कहा जाता है कि हर कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत की स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में से अनेक ऐसे थे जिन्हें उनके परिवारों में किसी न किसी महिला ने उत्साहित किया था। फिर चाहे वो छत्रपति शिवाजी हों जिन्हें उनकी मां जीजा बाई ने स्वराज के लिए प्रेरित किया। फिर चाहे गांधी हो जिन्हें स्वतंत्रता संग्राम में उनकी पत्नी कस्तूरबा का साथ हर कदम पर मिला। गांधी ने स्वयं माना था कि स्वतंत्रता पाने की इच्छा कस्तूरबा में उनसे ज्यादा है। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं में पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिला कर भाग लिया। ये उस समय कि बात है जब भारत जैसे राष्ट्र में महिलाओं को अपने अधिकार भी पूर्णतया प्राप्त नहीं थे। ऐसे समय में अनेक महिलाओं ने देश के लिए सोचा। कुरीतियों के बोझ से दबे होने के बावजूद महिलाएं सामाजिक रूप से इतनी उन्नत नहीं थीं फिर भी भारत की स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अनेक कुरीतियों के शिकार महिलाएं अपने व्यक्तिगत कठिनाईयों को भूल कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। न केवल आत्मिक बल अपितु पूरे साहस से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। सामाजिक बेडियों को तोड़ कर 1857 से प्रारंभ हुए इस संघर्ष में महिलाओं के साहस समर्पण और त्याग में भारत की स्वतंत्रता में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। इतिहास गवाह है कि वे महिलाएं चूल्हे चौके से आजाद हो कर स्वतंत्रता पाने के लिए स्वातंत्र्य संग्राम के नभ में विस्तृत हो रही थीं। कभी इतना बड़ी संख्या में महिलाओं ने किसी संग्राम में भाग नहीं लिया था। हर दर्ज, हर क्षेत्र, हर आयु की महिला अपने स्तर पर इस संग्राम का अभिन्न अंग बनने

को आतुर थी। महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली महिलाओं में जो नाम लिये जाते हैं उनमें कुछ नामों की चर्चा निम्न की गई है -

1. रानी लक्ष्मीबाई: ये वह नाम है जिससे भारत की बच्चा-बच्चा परिचित है। रानी लक्ष्मीबाई ऐसी महिला थीं जिनकी वीरता का लोहा अंग्रेज अफसरों को भी मानना पड़ा था। रानी लक्ष्मीबाई बचपन से ही शस्त्र विद्या में निपुण थीं। अपने राज्य की स्वतंत्रता के लिए युद्ध भूमि में ही वीरगति को प्राप्त होने वाली रानी लक्ष्मी बाई अदम्य साहस का प्रतीक तो थीं ही साथ ही देश भक्ति और राष्ट्रीय गौरव की मिसाल भी थीं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में ये नाम सुनहरे अक्षरों से सदा अंकित रहेगा।



2. सरोजिनी नायडू: ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ने वाली सबसे प्रभावशाली और प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक भारत कोकिला के नाम से जानी जाने वाली स्वतंत्रता सेनानी, स्वतंत्र कवयित्री और कार्यकर्ता थीं। सरोजिनी नायडू को सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलनों में भाग लेने के लिए जेल भी हुई। महिला सशक्तिकरण, सामाजिक कल्याण और स्वतंत्रता के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता लाने के लिए शहर से शहर यात्राएं की और व्याख्यान दिए। भारत में फैले प्लेग महामारी में लोगों की सेवा करने के लिए भारत सरकार ने उन्हें कैसर-ए-हिंद की उपाधि दी जिसे जलियावाला बाग हत्या कांड के प्रति रोष व्यक्त करने हेतु सरोजिनी नायडू द्वारा वापिस कर दिया गया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली दूसरी महिला थीं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।



3. बेगम हजरत महल: भारत की सबसे प्रतिष्ठित महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक जिन्हें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के समकक्ष के रूप में भी जाना जाता था। 1857 में, पहले स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं जिन्होंने ग्रामीण लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने और अपनी आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने लखनऊ पर अधिकार कर अपने बेटे को अवध का राजा घोषित किया जो कि आसान नहीं था। ब्रिटिश सरकार ने राजा से लखनऊ का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। अंग्रेजों की गुलामी मंजूर न होने के

कारण उन्हें नेपाल जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहीं उनकी मृत्यु हुई।



4. किचूर रानी चेत्रम्मा: हम शायद ही इस नाम से परिचित हों। भारत की आजादी में एक प्रमुख हस्ती जो उन शुरुआती भारतीय शासकों में से थीं जिन्होंने भारत की आजादी के लिए ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अपने बेटे और पति की मृत्यु के बाद अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और अपने राज्य को बचाने की कोशिश की। उन्होंने एक सेना का नेतृत्व किया, किचूर रानी चेत्रम्मा की युद्ध के मैदान में मृत्यु हो गई। कर्नाटक की सबसे बहादुर महिला के रूप में उनके साहस की रोशनी आज भी देश में है।



5. अरुणा आसफ अली: अरुणा जी ने 1930, 1932 और 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह, 1942 ई. के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में समय जेल की सज़ाएँ भोगीं। नमक सत्याग्रह में प्रमुख भूमिका निभाई। अरुणा आसफ अली जी ने अंग्रेजों

की जेल में बन्द होने के बदले भूमिगत रहकर अपने अन्य साथियों के साथ आन्दोलन का नेतृत्व करना उचित समझा। उन्हें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण जेल भी हुई थी। जब वह जेल से रिहा हुई तो उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया। इससे पता चलता है कि भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाएं कितनी निडर थीं।



6. उषा मेहता: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली सबसे कम उम्र की प्रतिभागियों में से एक थीं जिसने केवल आठ साल की आयु में 'साइमन वापस जाओ' विरोध में भाग लिया था। स्वतंत्रता संग्राम में साहसपूर्वक लड़ी। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ क्रांति फैलाने के लिए रेडियो का उपयोग किया जिस से क्रांतिकारियों का हौसला बढ़ा। उन्हें जेल भी इसी कारण से हुई थी।



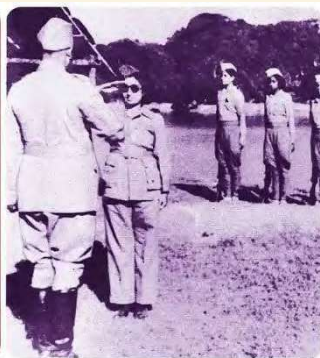
7. भीकाजी कामा: वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं मैडम कामा। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय नागरिकों के मन में महिला

समानता और महिला सशक्तिकरण के बीज बोये। पारसी होने के बावजूद उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए अन्य महिलाओं को भी जागरूक किया। राष्ट्रीय आंदोलनों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



8. लक्ष्मी सहगल: एक साहसी युवा लड़की जिसकी एकमात्र महत्वाकांक्षा भारत की स्वतंत्रता थी। उन्होंने झाँसी की रानी रेजिमेंट नाम की महिला डिवीजन बनाई। सुभाष चंद्र बोस से प्रभावित और प्रेरित लक्ष्मी सहगल उन्हें अपना आदर्श मानती थीं जिस कारण वे भारतीय राष्ट्रीय सेना की सक्रिय सदस्य बनीं। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लगभग सभी आंदोलनों में भाग ले कर हर बाधा के खिलाफ संघर्ष किया। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की एक महत्वपूर्ण योद्धा थीं।

9. नीरा आर्या: भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली महिलाओं की फेहरिस्त में एक ऐसा नाम जिसका जिक्र न किया जाए तो अन्याय होगा। नीरा आर्या जिन्हें "नीरा नागिनी" के नाम से भी जाना जाता है। "नागिनी" नाम उन्हें सुभाष चंद्र बोस ने दिया ही दिया था। नीरा आर्या के त्याग की गाथा चकित कर देती है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने पति की बलि देकर अतुलनीय सहयोग दिया था। नारी आर्या के पति ब्रिटिश सरकार के मुलाजिम थे और उसे सुभाष चंद्र बोस को मारने का जिम्मा दिया गया था। जिस कारण नीरा आर्या ने उसे मार कर स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ में आहुति दी एवं सुभाष चंद्र बोस के प्राणों की रक्षा की थी। वे भारतीय राष्ट्रीय सेना की पहली जासूस थीं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया।



10. मातंगिनी हाजरा: जिन्हें बूटी गांधी के नाम से जाना जाता है। बाल विधवा, दुर्भाग्य की शिकार और अफीम की शौकीन मातंगिनी कब स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी उन्हें ही पता नहीं चला। 1932 में संग्राम से जुड़ी और 1933 में लगभग एक साल के अंतराल में ही 'करबन्दी आंदोलन को दबाने के लिए बंगाल के तत्कालीन गवर्नर एण्डरसन के विरोध प्रदर्शन में सबसे आगे काला झण्डा लिये डटी थीं जिस कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। तामलुक के ऐसे ही आंदोलन में शिरकत करते हुए पुलिस की गोलियों का शिकार हुई और वीरगति को प्राप्त हुई।

11. दुर्गाबाई देशमुख: 1909 में जन्मी असाधारण प्रतिभा और समर्पण की महिला एक प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक, जिनके बहुमुखी योगदान ने भारत के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी, वह थीं दुर्गाबाई। सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली देशमुख भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्रिय सदस्य थीं। जिसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराना था। दुर्गाबाई देशमुख की भारत के स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक कारणों के प्रति अथक प्रतिबद्धता ने आने वाली पीढ़ियों को अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित किया।

11. कमला चट्टोपाध्याय: कमला चट्टोपाध्याय, या कमलादेवी चट्टोपाध्याय के नाम विख्यात, एक उल्लेखनीय भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राजदूत थीं। 1903 में जन्मी, वह एक बहुमुखी व्यक्तित्व थी, जिन्होंने

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और इसकी सांस्कृतिक विरासत में गहरा योगदान दिया। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। अपनी राजनीतिक सक्रियता से परे, उन्होंने भारत की पारंपरिक कलाओं और हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कमलादेवी चट्टोपाध्याय की विरासत स्वतंत्रता सेनानी और सांस्कृतिक पुनरुत्थानवादी के रूप में भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित करती है। भारत सरकार द्वारा कमला चट्टोपाध्याय को 1955 में पद्म विभूषण से अलंकृत किया गया।

12. दुर्गा भाभी: पंडित बांके बिहारी के घर 07 अक्टूबर 1907 को शहजादपुर ग्राम में इनका जन्म हुआ। सरकारी अधिकारियों के परिवार में जन्मी दुर्गा साहस की प्रतिमा थी। इनके पति क्रांतिकारी संगठन के प्रचार सचिव थे। वर्ष 1920 में प्रत्यक्ष रूप से क्रांति में आए और अपने पति का दुर्गा भाभी ने भी पूर्ण रूप से सहयोग किया। दुर्गा भाभी का मायका व ससुराल दोनों पक्ष संपन्न थे। इस दंपति ने ससुराल एवं मायके से प्राप्त धन का उपयोग क्रांतिकारियों के साथ मिलकर देश को आजाद कराने में किया। मार्च 1926 में भगवतीचरण वोहरा व भगत सिंह ने संयुक्त रूप से नौजवान भारत सभा का प्रारूप तैयार किया और रामचंद्र कपूर के साथ मिलकर इसकी स्थापना की। इनके पति क्रांतिकारियों के साथ जुड़े थे जिस कारण सभी इन्हें भाभी संबोधन करने लगे और वे दुर्गा भाभी के नाम से जानी जाने लगीं। 28 मई 1930 को रावी नदी के तट पर साथियों के साथ बम बनाने के बाद परीक्षण करते समय दुर्गा भाभी के पति के शहादत के बाद भी दुर्गा भाभी साथी क्रांतिकारियों के साथ सक्रिय रहीं। 9 अक्टूबर 1930 को दुर्गा भाभी ने गवर्नर हैली पर गोली चलाई जिसमें गवर्नर हैली की बजाय सैनिक अधिकारी टेलर घायल हो गया। दुर्गा भाभी ने ही मुंबई के पुलिस आयुक्त को गोली मारी थी जिसके परिणाम-स्वरूप अंग्रेज पुलिस इनके पीछे पड़ गई। दुर्गा भाभी व साथी यशपाल को मुंबई के एक फ्लैट से गिरफ्तार कर लिया गया। साथी क्रांतिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल लाना व ले जाने का काम दुर्गा भाभी का



था। अंग्रेजों से लड़ते वक्त चंद्रशेखर आजाद ने जिस पिस्तौल से खुद को गोली मारी थी दुर्गा भाभी ने ही लाकर उनको दी थी। उस समय भी दुर्गा भाभी उनके साथ थीं। साथी क्रांतिकारियों के शहीद हो जाने के बाद दुर्गा भाभी अपने पांच वर्षीय पुत्र शचींद्र को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था करने के उद्देश्य से दिल्ली चली गईं फिर पुलिस के परेशान करने के कारण दिल्ली से लाहौर चली गईं, जहां पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और तीन वर्ष तक नजरबंद रखा। 1931 से 1935 तक फरारी, गिरफ्तारी, रिहाई को सिलसिला चलता रहा। 1935 में गाजियाबाद में प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी करने लगी और कुछ समय बाद पुनः दिल्ली चली गईं और कांग्रेस में काम करने लगीं। कांग्रेस का जीवन रास न आने के कारण उन्होंने 1937 में छोड़ दिया। 14 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद में उन्होंने सबसे नाता तोड़ते हुए इस दुनिया से अलविदा कर लिया।

इन सब महिलाओं के अलावा भी अनेक महिलाओं द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका का निर्वाह किया। वे महिलाएं जो आंदोलनों में शामिल हुईं, जेल गईं, परिवारों समाज की बेड़ियां तोड़ कर आगे आईं और स्वतंत्रता के बाद गुमनामी के अंधकार में खो गयीं। उन्हें नामों से न सही परन्तु सामूहिक तौर पर याद किया जा सकता है। यूं तो स्वतंत्रता संग्राम में अनेक आंदोलनों के जरिये भारतीय अपना रोष, अपना क्रोध व्यक्त करते रहे थे। फिर भी मुख्यधारा के स्वतंत्रता आंदोलनों में महिलाएँ पुरुषों के कंधों से कंधा मिला कर खड़ी रही। वे आंदोलन जो एक सीमित जगह पर न होकर देशव्यापी रहे, उन्हें मुख्यधारा के आंदोलन कहा जा

सकता है। मुख्यधारा के आंदोलन स्वदेशी आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन रहे। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत से ही महिलाएँ स्वतंत्रता के आंदोलन को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही थीं। संघर्ष की दिशा तय करने में विभिन्न राष्ट्रवादी अभियानों और आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने अहम भूमिका निभाई।

स्वदेशी आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का एक उल्लेखनीय उदाहरण 1905-1908 का स्वदेशी आंदोलन रहा। जिसमें महिलाओं ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार और ब्रिटिश उत्पादों के बहिष्कार के लिए जोश से रैली निकाली। ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए महिलाएँ स्वदेशी रूप से निर्मित वस्तुओं के उपभोग की कट्टर समर्थक बन गईं।

शुरुआती राष्ट्रवादी आंदोलनों में सहभागिता के लिए महिला संगठनों का निर्माण होने लगा, जिसकी कड़ी में 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (अ भा म स) एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इसके माध्यम से महिलाओं की समस्याओं को संबोधित किया गया और सामाजिक सुधारों की वकालत की गई। राष्ट्रवादी आंदोलन को और अधिक जोश देने में महिला क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के उदय ने सहयोग दिया। महिला नेताओं ने पूरे देश की महिलाओं को स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

अपने समकक्ष पुरुषों के साथ सहयोग करते हुए, उन्होंने मार्च आयोजित किए, सलाखों के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और सत्याग्रह (अहिंसक विरोध) में शामिल हुईं। औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा हिरासत, कारावास और हिंसा का सामना करने, जेल, कारावास, और अनेक अत्याचारों के बावजूद इन महिलाओं ने उल्लेखनीय साहस दिखाया। अपने व्यक्तिगत लाभों की परवाह न करके देश की स्वतंत्रता के लिए महिलाओं ने अपना सहयोग दिया।

महिलाओं ने 1920 के असहयोग आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध, प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा अभियानों में सक्रिय रूप से शामिल हुईं।

महिलाओं ने ब्रिटिश राज को आर्थिक चोट पहुँचाने के लिए स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई। आत्मनिर्भरता और ब्रिटिश आर्थिक शोषण के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में खादी (हाथ से काता हुआ कपड़ा) के कताई को महिलाओं ने प्रोत्साहित किया। खुद का काता सूत पहन कर विदेशी का बहिष्कार करने में हर तबके की महिला आगे आईं। लोगों को ब्रिटिश कपड़े खरीदने से रोकने के लिए महिलाओं ने विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया। महिलाओं ने गांवों में खादी कलाई और बुनाई को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी ली। आंदोलन में भाग लेने और आजीविका कमाने के लिए ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए कताई मंडल (चरखा सभा) का आयोजन किया जाने लगा। महिलाओं ने सार्वजनिक प्रदर्शनों, धरना-प्रदर्शनों और जुलूसों में सक्रिय रूप से भाग ले कर औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा गिरफ्तारी और कारावास का जोखिम भी उठाया जो महिलाओं के उल्लेखनीय साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय था। उन्होंने धन जुटाने, पर्चे बांटने और स्थानीय समुदायों को संगठित करने जैसी गतिविधियों में शामिल होकर पुरुष राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं को समर्थन प्रदान किया। असहयोग आंदोलन से महिलाओं को आगे बढ़ने, आत्मविश्वास हासिल करने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए एक मंच प्राप्त हुआ। स्वतन्त्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी से महिलाओं में उपजे आत्मविश्वास से पर्दा प्रथा और बाल विवाह को समाप्त करने जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों को लागू करने में भी मदद मिली। उनमें जागरूकता का संचार हुआ। ब्रिटिश कपड़े जला कर, विदेशी वस्तुओं की होली जला कर महिलाओं ने प्रतिरोध के प्रतीकात्मक कार्यों में भाग लिया जिससे ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का एक शक्तिशाली संदेश गया।

असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं को कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिसमें गिरफ्तारी, कारावास और पुलिस की बर्बरता शामिल थी। इन चुनौतियों के बावजूद, वे स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ रहीं। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और योगदान ने औपनिवेशिक उत्पीड़न को चुनौती देने के उनके दृढ़ संकल्प को असहयोग आंदोलन में प्रदर्शित किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आने वाले चरणों में उनकी बढ़ती भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया। भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक ऐसा संग्राम था जिसमें महिलाएं किसी भी प्रकार से पीछे नहीं थीं अपितु परिवार, समाज की बेडियां को तोड़ कर इस संग्राम में आगे आई थीं।

महिलाओं की अदम्य भावना और अटूट समर्पण देश के इतिहास का वो अभिन्न अंग है जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा है। महिलाओं ने अपने खिलाफ उत्पीड़न को चुनौती देने, बदलाव की वकालत करने और स्वतंत्रता के लिए योगदान देने के उनके दृढ़ संकल्प ने एक ऐसी स्थायी विरासत छोड़ी जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी कर उभरी है। भारत के भाग्य को आकार देने और प्रगति और समानता की ओर चल रही यात्रा के महायज्ञ में महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार करना अनिवार्य हो जाता है। महिलाओं की अमूल्य भूमिका पर विचार करने से हम पाते हैं की प्रत्येक वह महिला जिसने इस संग्राम में अपना योगदान दिया, की अपनी अनूठी कहानी और योगदान है। महिलाओं ने हर कदम पर हर क्षेत्र में अपने साहस का परिचय दिया। उनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है, और हमें हमारे महान राष्ट्र के भाग्य को आकार देने में महिलाओं द्वारा निभाई गई अभिन्न भूमिका की याद दिलाती है। ये संघर्ष अहिंसात्मक आंदोलनों से ही अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचा अपितु ने इस यज्ञ में हजारों महिला सेनानियों की प्राणाहुति दी गयी थी। हमारी महिला स्वतंत्रता सेनानियों को शत शत प्रणाम !

महिलाओं के प्रति समाज की मानसिकता

गोविन्द कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक रक्षा वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय
बेंगलुरु, कर्नाटक-560001

आधुनिक युग में, महिलाओं की महत्ता परिवारों, समुदायों तक ही सीमित नहीं, बल्कि वे किसी भी देश के विकास की रीत मानी जाती हैं। इन सब के बावजूद भी, वे अपने वास्तविक अधिकारों, समानता और सम्मान के लिए आज भी लड़ाई लड़ रही हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच का यह गहरा अंतर, व्यक्तिगत विचारों में बदलाव से ही कम किया जा सकता है।

महिलाओं का सम्मान, केवल उनके मानवाधिकारों को पहचानने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सम्मानित भी करना है, जिनके पास स्वयं के अधिकार, विचार एवं आकांक्षाएँ हों। 'पंचायत' जैसी ओटीटी सीरीज एक सामाजिक हकीकत है जहाँ हम महिलाओं को सरपंच तो बनाते हैं परंतु, उनका नियंत्रण पुरुषों के हाथ में ही होता है और उन्हें स्वयं का निर्णय लेने हेतु प्रेरित नहीं किया जाता। इस समस्या का मुख्य कारण रुढ़िवादी परंपराएँ, सांस्कृतिक मान्यताएँ, धार्मिक व्याख्याएँ, पितृसत्तात्मक समाज, गलत धारणाएँ आदि हैं जो समाज में एक ऐसा श्रेणीबद्ध ढांचा बना चुकी हैं, जिसमें आज भी पुरुषों को श्रेष्ठतर मानकर अक्सर महिलाओं को पतिव्रता और माताओं के रूप में अधीनस्थ कर दिया है। देश के विकास के लिए यह आवश्यक है कि समाज में महिलाओं को देखने तथा उनके साथ व्यवहार करने के तरीके

में बदलाव लाया जाए, ताकि उनका सम्मान मानवता के हर पहलू का एक मौलिक हिस्सा बन सके।

यह सत्य है कि पिछली एक सदी में, महिलाएँ प्रगति के पथ पर बहुत अग्रसर हुई हैं, फिर भी लिंगभेद जैसी मानसिकता से उत्पन्न असमानता के अवशेष आज भी यथास्थिति और पूर्वाग्रह के रूप में बने हुए हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि महिलाओं का स्थान पुरुषों से कमतर हो, उनका मूल्य उनकी देखभाल करने की क्षमता या पारंपरिक भूमिकाओं को निभाने से मापा जाए, आदि। इस तरह की मानसिकताएँ ही बाल विवाह, घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न जैसी हानिकारक प्रथाओं को जन्म देती हैं जो महिलाओं के अधिकार, गरिमा और स्वायत्तता के सम्मान को प्रभावित करती हैं। जब तक



समाज इन हानिकारक प्रथाओं को अस्वीकार नहीं करता और महिलाओं के प्रति अपने व्यवहार को बदलने के लिए मानसिकता में परिवर्तन नहीं लाता, तब तक उनकी अस्मिता दबे और हाशिए पर ही रहेंगी।

महिलाओं के प्रति विचारों में बदलाव हेतु एक ऐसे नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो दीर्घकालिक यथास्थित प्राचीन प्रथाओं को चुनौती देने के साथ-साथ यह समझ भी विकसित कर मके कि: महिलाएं भी पुरुषों की तरह व्यक्ति हैं जिनकी अपनी इच्छाएं, सपने और आकांक्षाएं हैं। यह पर्याप्त नहीं है कि हम कहें कि महिलाओं को सम्मान मिलना चाहिए बल्कि, यह समझना होगा कि उन्हें यह सम्मान क्यों मिलना चाहिए। महिलाओं को समाज में उचित सम्मान हेतु हमें मुख्यतः निम्न तीन पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए:

(1) महिलाओं के पास पुरुषों के समान दक्षता है इसलिए हर गतिविधियों (चाहे कार्यस्थल हो, घर हो या सामाजिक भागीदारी हो) में महिलाओं को पुरुषों के समान साझेदार के रूप में देखा जाना चाहिए। महिलाओं को केवल मां, पत्नी या बेटी के रूप में नहीं, उनकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और लक्ष्यों के साथ पहचानना होगा। 1

(2) हमें समाज में समाहित हानिकारक लिंग आधारित धारणाएँ जैसे महिलाएं स्वाभाविक रूप से भावुक, पोषक या कमजोर होती हैं आदि, को चुनौती देनी चाहिए जो महिलाओं के अवसरों को सीमित करती हैं और कार्यस्थलों में भेदभावपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देती हैं। यह प्रमाणित है कि जब कभी महिलाओं को संकुचित सामाजिक अपेक्षाओं के परे, अपने लक्ष्य के लिए प्रोत्साहित किया गया है, तो उन्होंने अपनी दक्षता से अपने आप सिद्ध करते हुए सभी को अचंभित किया है। कल्पना चावला, मैरीकोम या डॉ. मुतुलक्ष्मी रेड्डी जैसे कई उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी क्षमता से अपने क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है।

(3) यह भी आवश्यक है कि हमें हर रिश्तों चाहे वह पारिवारिक हो, रोमांटिक हो या साझेदारी हो, में आपसी सम्मान के महत्व को बढ़ावा देना चाहिए। महिलाओं को पुरुषों के अधीन नहीं,

बल्कि समान अधिकारों वाली साझेदार के रूप में देखा जाना चाहिए, जो प्यार, देखभाल के साथ-साथ समर्थन के योग्य हैं। वास्तव में, आपसी सम्मान पर आधारित रिश्ते सभी पक्षों के लिए लाभकारी होते हैं जो एक ऐसा माहौल सृजित करते हैं, जिसमें दोनों पक्ष एक-दूसरे की भलाई में योगदान करते हुए बढ़ सकते हैं और समृद्ध हो सकते हैं।

उपरोक्त विचारधाराओं को प्राप्त करने या रुढ़िवादी मानसिकताओं को बदलने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है 'शिक्षा'। बच्चों में बाल्यकाल से ही महिलाओं की महत्ता की समझ साथ-साथ यह आलोचनात्मक सोच भी विकसित करनी चाहिए जिससे उन्हें यह समझ हो कि मीडिया में दिखाई गई महिलाओं की भूमिकाएं, उनकी वास्तविक क्षमता या मूल्य को परिभाषित नहीं करतीं। ऐसे सही सोच से विकसित बच्चे ही भविष्य में महिलाओं का व्यक्तिगत सम्मान समाज में सुनिश्चित कर सकेंगे। समाज के हर वर्ग को, हर उस सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना होगा जो महिलाओं के सम्मान और समानता से प्रेरित हो और एक ऐसे सांस्कृतिक बदलाव में योगदान करती है, जो हर व्यक्ति की गरिमा को महत्व देता है क्योंकि एक देश की प्रगति समाज पर निर्भर है जो परिवारों के व्यवहार पर आश्रित है जिसकी गुणवत्ता पुरुष और महिला की सोच ही तय कर सकती है।

अंततः ऐसे बदलाव सिर्फ एक दिन में किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं लाया जा सकता, इसके लिए सामूहिक रूप से, एक सामयिक सोच के साथ क्रमबद्ध रूप से अथक प्रयास करना होगा। यह परिवर्तन हममें से हर एक से, हमारे विचारों, शब्दों या कार्यों से शुरू होगा जो अपनी मानसिकता में बदलाव लाकर और सम्मान तथा समानता का वातावरण बनाकर एक ऐसे भविष्य की नींव रख सकता है, जिसमें महिलाओं को सम्मानजनक मानव के रूप में देखा जा सके क्योंकि महिलाओं का सम्मान केवल एक नैतिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज का मौलिक स्तंभ भी है।

संयुक्त परिवार



संदीप

कनिष्ठ अनुवादक,
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

संयुक्त परिवार, जिसमें एक साथ एक ही घर में कई पीढ़ियों के लोग रहते हैं जिस परिवार में तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ साथ निवास करते हैं जिनकी रसोई, पूजा पाठ एवं संपत्ति सामूहिक होती है उसे ही संयुक्त परिवार कहते हैं। एकल परिवार में पति पत्नी एवं उनके बच्चे होते हैं या केवल पति पत्नी ही होते हैं।

संयुक्त परिवार के लाभ

मनुष्य को अपने विकास के लिए समाज की आवश्यकता हुई, इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाज की प्रथम इकाई के रूप में परिवार का उदय हुआ क्योंकि परिवार के बिना समाज की रचना के बारे में सोच पाना असंभव था। समुचित विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सुरक्षा का वातावरण का होना नितांत आवश्यक है। परिवार में रहते हुए परिजनों के कार्यों का वितरण आसान हो जाता है। साथ ही भावी पीढ़ी को सुरक्षित वातावरण एवं स्वास्थ्य पालन पोषण द्वारा मानव का भविष्य भी सुरक्षित होता है उसके विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। परिवार में रहते हुए ही भावी पीढ़ी को उचित मार्ग निर्देशन देकर जीवन संग्राम के लिए तैयार किया जा सकता है।

आज भी संयुक्त परिवार को ही सम्पूर्ण परिवार माना जाता है। वर्तमान समय में भी एकल परिवार को एक मजबूरी के रूप में ही देखा जाता है। हमारे देश में आज भी एकल परिवार को मान्यता प्राप्त नहीं है। औद्योगिक विकास के

चलते संयुक्त परिवारों का बिखरना जारी है। परन्तु आज भी संयुक्त परिवार का महत्त्व कम नहीं हुआ है। संयुक्त परिवार के महत्त्व पर चर्चा करने से पूर्व एक नजर संयुक्त परिवार के बिखरने के कारणों, एवं उसके अस्तित्व पर मंडराते खतरे पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। संयुक्त परिवारों के बिखरने का मुख्य कारण है रोजगार पाने की आकांक्षा, बढ़ती जनसँख्या तथा घटते रोजगार, जिस के कारण परिवार के सदस्यों को अपनी जीविका चलाने के लिए गाँव से शहर की ओर या छोटे शहर से बड़े शहरों को जाना पड़ता है और इसी कड़ी में विदेश जाने की आवश्यकता पड़ती है। परंपरागत कारोबार या खेती बाड़ी की अपनी सीमाएं होती हैं जो परिवार के बढ़ते सदस्यों के लिए सभी आवश्यकतायें जुटा पाने में समर्थ नहीं होता। अतः परिवार को नए आर्थिक स्रोतों की तलाश करनी पड़ती है। जब अपने गाँव या शहर में नयी सम्भावनाएं कम होने लगती हैं तो परिवार की नयी पीढ़ी को रोजगार की तलाश में अन्यत्र जाना पड़ता है। अब उन्हें जहाँ रोजगार उपलब्ध होता है वहीं अपना परिवार बसाना होता है



क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं होता की वह नित्य रूप से अपने परिवार के मूल स्थान पर जा पाए। कभी कभी तो रोजगार के लिए सैंकड़ों किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। संयुक्त परिवार के टूटने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण नित्य बढ़ता उपभोक्तावाद है जिसने व्यक्ति को अधिक महत्वकांक्षी बना दिया है। अधिक सुविधाएँ पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनशक्ति समाप्त होती जा रही है, और स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। अब वह अपनी खुशियाँ परिवार या परिजनों में नहीं बल्कि अपने परिवार के लिए अधिक सुख साधन जुटाने में ढूँढता है जो संयुक्त परिवार के बिखरने का कारण बन रहा है। एकल परिवार में रहते हुए मानव भावनात्मक रूप से विकलांग होता जा रहा है। मनुष्य को जिम्मेदारियों का बोझ और बेपनाह तनाव सहन करना पड़ता है परन्तु दूसरी तरफ उसके सुविधा संपन्न और आत्म विश्वास बढ़ जाने के कारण उसके भावी विकास का रास्ता खुलता है।

अनेक मजबूरियों के चलते हो रहे संयुक्त परिवारों के बिखराव के वर्तमान दौर में भी संयुक्त परिवारों का महत्त्व कम नहीं हुआ है बल्कि उसका महत्त्व आज भी बना हुआ है। उसके महत्त्व को एकल परिवार में रह रहे लोग अधिक अच्छे से समझ पाते हैं। उन्हें संयुक्त परिवार के फायदे नजर आते हैं क्योंकि किसी भी वस्तु का महत्त्व उसके अभाव को झेलने वाले अधिक समझ सकते हैं। अब संयुक्त परिवारों के लाभ पर सिलसिले वार चर्चा करते हैं।

सुरक्षा और स्वास्थ्य

परिवार के प्रत्येक सदस्य की सुरक्षा की जिम्मेदारी सभी परिजन मिलजुल कर निभाते हैं। अतः किसी भी सदस्य की स्वास्थ्य ,सुरक्षा ,आर्थिक समस्या पूरे परिवार की होती है। कोई भी अनपेक्षित रूप से आई परेशानी सहजता से सुलझा ली जाती है जैसे यदि कोई गंभीर बीमारी से जूझता है तो भी परिवार के सब सदस्य अपने सहयोग से उसको बीमारी से निजात दिलाने में मदद करते हैं। किसी भी सदस्य को कोई आर्थिक या रोजगार की समस्या आड़े नहीं आती। ऐसे ही गाँव में या मोहल्ले में किसी की उनसे पंगा लेने की हिम्मत नहीं होती। संगठित होने के कारण पूर्ण सुरक्षा मिलती है। व्यक्ति हर प्रकार के तनाव से मुक्त रहता है।

विभिन्न कार्यों का विभाजन

परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण कार्यों का विभाजन आसान हो जाता है। प्रत्येक सदस्य के हिस्से में आने वाले कार्य को वह अधिक क्षमता से कर पता है और विभिन्न अन्य जिम्मेदारियों से भी मुक्त रहता है। अतः तनाव मुक्त हो कर कार्य करने में अधिक खुशी मिलती है। उसकी कार्य क्षमता अधिक होने से कारोबार अधिक उन्नत होता है। परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है और जीवन उल्लास पूर्ण व्यतीत होता है।

भावी पीढ़ी का समुचित विकास

संयुक्त परिवार में बच्चों के लिए सर्वाधिक सुरक्षित और उचित शारीरिक एवं चारित्रिक विकास का अवसर प्राप्त होता है। बच्चे की इच्छाओं और आवश्यकताओं का अधिक ध्यान रखा जा सकता है। उसे अन्य बच्चों के साथ खेलने का मौका मिलता है। माता पिता के साथ साथ अन्य परिजनों विशेष तौर पर दादा ,दादी का प्यार भी मिलता है जबकि एकल परिवार में कभी कभी तो माता पिता



का प्यार भी कम ही मिल पाता है यदि दोनों ही कामकाजी हैं। दादा, दादी से प्यार के साथ ज्ञान और अनुभव भी भरपूर मिलता है। उनके साथ खेलने और समय बिताने से मनोरंजन भी होता है। उन्हें संस्कारवान बनाना, चरित्रवान बनाना, एवं हष्ट पुष्ट बनाने में अनेक परिजनों का सहयोग प्राप्त होता है। यह सब एकल परिवार में संभव नहीं हो पाता।

संयुक्त परिवार में रहकर कुल व्यय कम

बाजार का नियम है की यदि कोई वस्तु अधिक मात्रा में खरीदी जाती है तो उसके लिए कम कीमत चुकानी पड़ती है अर्थात् संयुक्त रहने के कारण कोई भी वस्तु अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में खरीदनी होती है। अतः बड़ी मात्रा में वस्तुओं को खरीदना सस्ता पड़ता है, दूसरी बात कि अलग अलग रहने से अनेक वस्तुएं अलग अलग खरीदनी पड़ती है जबकि संयुक्त रहने पर कम वस्तु लेकर काम चल जाता है। उदाहरण के तौर पर एक परिवार तीन एकल परिवारों के रूप में रहता है उन्हें तीन मकान, तीन कार या तीन स्कूटर, तीन टेलीविजन, और तीन फ्रिज, इत्यादि प्रत्येक वस्तु अलग अलग खरीदनी होगी परन्तु वे यदि एक साथ रहते हैं उन्हें कम मात्रा में वस्तुएं खरीद कर धन की बचत की जा सकती है, जैसे तीन स्कूटर के स्थान पर एक कार, एक स्कूटर से काम चल सकता है, तीन फ्रिज के स्थान पर एक बड़ा फ्रिज और एक ए.सी. लिया जा सकता है। इसी प्रकार तीन मकानों के स्थान पर एक पूर्णतया सुसज्जित बड़ा सा मकान लिया जा सकता है। टेलीफोन, बिजली, मकान के अलग अलग खर्च के स्थान पर बचे धन से कार व ए.सी. मेंटेनेंस का खर्च निकल सकता है। इस प्रकार से उतने ही बजट में अधिक उच्च जीवन शैली के साथ जीवन यापन किया जा सकता है।

भावनात्मक सहयोग

किसी विपत्ति के समय, परिवार के किसी सदस्य के गंभीर रूप से बीमार होने पर, पूरे परिवार के सहयोग से आसानी से पार पाया जा सकता है। जीवन के सभी कष्ट सब के सहयोग से बिना किसी को विचलित किये दूर हो जाते हैं। कभी भी आर्थिक समस्या या रोजगार चले जाने की समस्या उत्पन्न नहीं

होती क्योंकि एक सदस्य की अनुपस्थिति में अन्य परिजन कारोबार को देख लेते हैं।

चरित्र निर्माण में सहयोग

संयुक्त परिवार में सभी सदस्य एक दूसरे के आचार व्यवहार पर निरंतर निगरानी बनाए रखते हैं, किसी की अवांछनीय गतिविधि पर अंकुश लगा रहता है अर्थात् प्रत्येक सदस्य चरित्रवान बना रहता है। किसी समस्या के समय सभी परिजन उसका साथ देते हैं और सामूहिक दबाव भी पड़ता है। कोई भी सदस्य असामाजिक कार्य नहीं कर पाता, बुजुर्गों के भय के कारण शराब, जुआ या अन्य कोई नशा जैसी बुराइयों से बचा रहता है और हर बड़े तथा छोटे का पूरा प्यार और दुलार मिलता है।

एकल परिवार:-

ऊपर बताई गई सभी सुविधायें एवं फायदें एकल परिवार में नहीं मिल पाते हैं जिसके कारण बच्चों का संपूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाता है। एकल परिवार में बच्चों में मिलजुल कार्य करने की भावना, सहयोग की भावना, भावनात्मक सहयोग आदि की भावना पनप नहीं पाती है एवं वे परिवार के बाकी सदस्यों से अपने को अलग समझते हैं क्योंकि कई बार तो परिवार के अन्य सदस्यों से उनकी मुलाकात भी काफी समय के बाद होती है। एकल परिवार में खर्च ज्यादा होता है जिसके कारण भविष्य में कभी जरूरत पड़ने पर समस्या उत्पन्न होती है। कई बार पति-पत्नी में मतभेद होने पर उन्हें समझाने वाला कोई नहीं होता जिसके कारण रिश्ता टूटने तक की नौबत आ जाती है। सामाजिक असुरक्षा की भावना भी होती है। अलग-अलग घरों या स्थान पर रहने के कारण परिवार के सभी सदस्य भावनात्मक रूप से जुड़ नहीं पाते हैं।

निष्कर्ष:

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि भारत एक विशाल देश है। यहां प्रत्येक क्षेत्र में विविधता होना स्वाभाविक है। परिवारों से ही समाज का निर्माण होता है। प्रत्येक परिवार (संयुक्त या एकल) का अपना महत्व होता है।

विषय: हिंदी एक परोपकारी भाषा



जय प्रकाश

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
प्रत्यक्ष कर विभाग
सीएजी मुख्यालय,
नई दिल्ली 110010

भूमिका

भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास हुआ है। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशेष संस्कृति, सोचने का ढंग और सामाजिक दृष्टिकोण लेकर आती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी न केवल जनसामान्य की भाषा है, बल्कि साहित्य, संस्कृति और भावनाओं की संवाहक भी है। दूसरी ओर अंग्रेज़ी एक वैश्विक भाषा के रूप में जानी जाती है, जिसका प्रयोग शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय संवाद में व्यापक रूप से होता है।

अक्सर यह देखा जाता है कि हिंदी में लिखते समय लेखक इस बात का ध्यान रखता है कि पाठक या श्रोता बात को आसानी से समझ सके। हिंदी की वाक्य-रचना सीधी, सरल और भावप्रधान होती है। इसके विपरीत अंग्रेज़ी भाषा की संरचना अपेक्षाकृत जटिल मानी जाती है, फिर भी अंग्रेज़ी बोलना हिंदी की तुलना में कई लोगों को आसान लगता है। इसका कारण यह है कि अंग्रेज़ी में मन की बात को बिना अधिक सरल बनाए भी व्यक्त किया जाता है। इसी विचार को आधार बनाकर यह विस्तृत निबंध हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा की प्रकृति, संरचना, सामाजिक प्रभाव और अभिव्यक्ति की शैली का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

हिंदी भाषा की उत्पत्ति और स्वभाव

हिंदी भाषा का विकास संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से होता हुआ आधुनिक रूप में हुआ है। यह भाषा सदियों से भारतीय जनमानस के साथ विकसित हुई है। हिंदी का स्वभाव मूलतः संवादात्मक और संवेदनशील है। इसमें भावनाओं को व्यक्त

करने की अद्भुत क्षमता है। हिंदी के शब्द सीधे मन और हृदय से जुड़ते हैं।

हिंदी में प्रयुक्त शब्द अक्सर दैनिक जीवन से जुड़े होते हैं, इसलिए वे सहज और बोधगम्य होते हैं। उदाहरण के लिए—माँ, पिता, घर, प्रेम, दुख, सुख—ये सभी शब्द सरल हैं, फिर भी गहन भाव व्यक्त करते हैं। यही कारण है कि हिंदी कविता, कहानी और लोकगीतों में अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती है। जैसे दुःख शब्द इतना प्रभावशाली है कि उर्दू के शायर फैज़ अहमद फैज़ भी गम की जगह दुःख का प्रयोग करते हैं—और भी दुःख है जमाने में मुहब्बत के सिवा।

हिंदी की वाक्य-रचना और सरलता

हिंदी की वाक्य-रचना पाठक और श्रोता की सुविधा को ध्यान में रखकर विकसित हुई है। सामान्यतः हिंदी में कर्ता-कर्म-क्रिया का क्रम अपनाया जाता है, जिससे वाक्य का अर्थ स्पष्ट रहता है। इसके अतिरिक्त, हिंदी में लिंग, वचन और काल का प्रयोग स्पष्ट संकेत देता है, जिससे भ्रम की संभावना कम हो जाती है।

हिंदी में लेखन करते समय लेखक यह प्रयास करता है कि भाषा अलंकारिक होने के बावजूद जटिल न हो। अर्थात् हिंदी में ओज के अतिरिक्त प्रसाद गुण भी रहता है। इसलिए हिंदी निबंध, लेख और भाषण जनसामान्य तक आसानी से पहुँचते हैं। हिंदी की यह विशेषता इसे लोकतांत्रिक भाषा बनाती है।

पाठक और श्रोता केंद्रित हिंदी (भारतीय वाक्-सिद्धांत और जूलिया क्रिस्टेवा का संदर्भ)

हिंदी भाषा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह पाठक और श्रोता को केंद्र में रखती है। हिंदी में संवाद करते समय सामने वाले की समझ, भावनाओं और मानसिक अवस्था को विशेष महत्व दिया जाता है। यही कारण है कि हिंदी में वक्ता सीधे

सूचना देने के बजाय पहले भावनात्मक स्तर पर श्रोता से जुड़ता है। यह विशेषता केवल सामाजिक नहीं, बल्कि भाषिक और दार्शनिक भी है।

भारतीय भाषिक परंपरा में वाणी के चार स्तर माने गए हैं— परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी। हिंदी में वक्ता की भाषा इन स्तरों से होकर गुजरती है। परा स्तर पर विचार अव्यक्त होता है, जहाँ भाषा और अर्थ में कोई भेद नहीं होता। पश्यंती स्तर पर विचार का पहला बोध होता है—यहाँ भाव और अर्थ एक साथ उभरते हैं। मध्यमा स्तर पर विचार शब्दों का रूप लेने लगता है और अंततः वैखरी स्तर पर वह स्पष्ट, श्रव्य भाषा के रूप में प्रकट होता है।

हिंदी भाषा में वक्ता प्रायः पश्यंती और मध्यमा स्तर के भावों को बनाए रखते हुए वैखरी तक पहुँचता है। इसी कारण हिंदी की वैखरी भाषा भी भावनात्मक गहराई से युक्त होती है। श्रोता केवल शब्द नहीं सुनता, बल्कि उनके पीछे छिपे भावों को भी ग्रहण करता है।

यदि इस भाषिक प्रक्रिया को जूलिया क्रिस्तेवा के भाषा-सिद्धांत के आलोक में देखें, तो हिंदी में पश्यंती और मध्यमा स्तर को सिम्प्टोमैटिक (Symptomatic / लाक्षणिक) स्तर के रूप में समझा जा सकता है। यह वह स्तर है जहाँ भाषा तर्क से अधिक भाव, लय और अनुभूति से संचालित होती है। वहीं वैखरी भाषा का स्तर सिंबॉलिक (Symbolic / प्रतीकात्मक) संरचना से जुड़ा है, जहाँ व्याकरण, नियम और सामाजिक व्यवस्था प्रभावी होती है।

हिंदी की विशेषता यह है कि वह सिम्प्टोमैटिक और सिंबॉलिक—दोनों स्तरों के बीच संतुलन बनाए रखती है। वक्ता जब हिंदी में बोलता है, तो उसकी वैखरी भाषा के पीछे पश्यंती का भाव प्रवाह सक्रिय रहता है। यही कारण है कि हिंदी संवाद श्रोता को बौद्धिक ही नहीं, भावनात्मक स्तर पर भी स्पर्श करता है।

इस प्रकार हिंदी भाषा पाठक और श्रोता को निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि भावात्मक सहभागी बना देती है। यही गुण हिंदी को जनभाषा, साहित्यिक भाषा और संवाद की सशक्त भाषा बनाता है।

इसी संदर्भ में यदि गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) को देखा जाए, तो हिंदी भाषा की संरचना और प्रयोग उससे गहरे स्तर पर सामंजस्य स्थापित करते दिखाई देते हैं। गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार मनुष्य किसी भी अनुभव को टुकड़ों में नहीं, बल्कि समग्र रूप (Whole) में ग्रहण करता है—अर्थात् पूरा अपने हिस्सों के योग से बड़ा होता है।

हिंदी भाषा श्रोता और पाठक के सामने अर्थ को खंडित रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि भाव, लय, संदर्भ और सांस्कृतिक संकेतों को जोड़कर एक समग्र अनुभव निर्मित करती है। हिंदी में कही गई बात केवल शब्दों का अर्थ नहीं होती, बल्कि वह एक संपूर्ण भावात्मक संरचना होती है, जिसे श्रोता एक साथ ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया गेस्टाल्ट सिद्धांत के प्रेग्नान्ज़ (Prägnanz), सम्पूर्णता और अर्थ-निर्माण की अवधारणाओं से मेल खाती है।

भारतीय वाक्-सिद्धांत के पश्यंती और मध्यमा स्तर, जहाँ विचार अभी पूर्णतः शब्दों में विभाजित नहीं हुआ होता, गेस्टाल्ट की उसी समग्र अनुभूति को प्रकट करते हैं। वहीं वैखरी स्तर पर पहुँचकर भी हिंदी भाषा उस समग्र भाव को बनाए रखती है। इस प्रकार हिंदी में अर्थ-ग्रहण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया बन जाता है, जिसमें श्रोता अर्थ को जोड़ता नहीं, बल्कि पहचानता है। जब कालिदास लिखते हैं—“वागर्थाविव सम्प्रुक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ “ तो शब्द और अर्थ की इसी अन्विति और सम्यकता की बात कर रहे होते हैं।

इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा न केवल भाषावैज्ञानिक और दार्शनिक सिद्धांतों से, बल्कि आधुनिक मनोविज्ञान के गेस्टाल्ट सिद्धांत से भी स्वाभाविक रूप से समर्थित है।

अंग्रेज़ी भाषा की संरचना और जटिलता

अंग्रेज़ी भाषा की उत्पत्ति और विकास हिंदी से भिन्न परिस्थितियों में हुआ है। अंग्रेज़ी में व्याकरणिक नियमों की संख्या अधिक है। कालों का विस्तृत प्रयोग, सहायक क्रियाएँ, पूर्वसर्ग और आर्टिकल्स का सही उपयोग अंग्रेज़ी को संरचनात्मक रूप से जटिल बनाता है।

अंग्रेज़ी में एक ही विचार को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द और वाक्य संरचनाएँ उपलब्ध हैं। इससे भाषा समृद्ध तो होती है, लेकिन सीखने और समझने में कठिन हो जाती है।

अंग्रेज़ी बोलने में सरल क्यों प्रतीत होती है

यद्यपि अंग्रेज़ी की संरचना जटिल है, फिर भी बोलने में आसान प्रतीत होती है क्योंकि जो मन में आता है वक्ता वही कह देता है श्रोता के लिए उसे समझने में क्या कठिनाई होगी उसका ध्यान नहीं रखता। अंग्रेज़ी में भावों को शब्दशः सरल करने की अपेक्षा नहीं की जाती। व्यक्ति जो सोचता है, उसे सीधे शब्दों में व्यक्त कर सकता है। इसे ही विर्जिनिया वूल्फ स्ट्रीम ऑफ़ कॉन्सिसेस कहके साहित्यिक वैधता प्रदान की जाती है।

इसके अतिरिक्त, अंग्रेज़ी को विश्वभर में दूसरी भाषा के रूप में बोला जाता है। इसलिए उच्चारण और व्याकरण की छोटी-छोटी त्रुटियाँ स्वीकार कर ली जाती हैं। यह स्वीकार्यता अंग्रेज़ी बोलने वालों में आत्मविश्वास बढ़ाती है। अंग्रेज़ी का यह दुहरा व्यवहार यानी एक तरफ़ व्याकरण की गुलामी दूसरी तरफ़ त्रुटि करने की छूट इसे एक अराजक भाषा बनाता है। इसलिए व्यक्ति केन्द्रित अराजक पश्चिमी समाज में यह इतना लोकप्रिय है।

हिंदी बोलने में श्रमसाध्यता के सामाजिक कारण

यह एक विडंबना है कि हिंदी हमारी मातृभाषा होते हुए भी कई लोग इसे धाराप्रवाह और मानक रूप में बोलने से झिझकते हैं। इसका मुख्य कारण सामाजिक मानसिकता है। हिंदी बोलते समय लोग शुद्धता को लेकर अधिक सतर्क रहते हैं, जिससे संकोच उत्पन्न होता है।

आधुनिक समाज में अंग्रेज़ी को प्रतिष्ठा, शिक्षा और सफलता से जोड़ दिया गया है। परिणामस्वरूप हिंदी को कम महत्व दिया जाने लगा है। यह मानसिकता हिंदी को बोलने में असहज बना देती है, जबकि वास्तव में हिंदी सहज और स्वाभाविक भाषा है।

शिक्षा प्रणाली और मीडिया का प्रभाव

शिक्षा प्रणाली में अंग्रेज़ी माध्यम को श्रेष्ठ माना जाना हिंदी के प्रति हीन भावना को जन्म देता है। विद्यालयों में बच्चों को अंग्रेज़ी

में सोचने और बोलने के लिए प्रेरित किया जाता है, जबकि हिंदी को केवल एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

मीडिया और विज्ञापनों में भी अंग्रेज़ी और हिंग्लिश का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इससे हिंदी की प्रकृति और आत्मीयता प्रभावित हो रही है। धीरे-धीरे लोग हिंदी को सरल नहीं, बल्कि जटिल और औपचारिक भाषा समझने लगे हैं।

भविष्य की दृष्टि से भाषा

भविष्य में वही समाज सशक्त होगा, जो अपनी मातृभाषा में सोचने और अभिव्यक्त करने में सक्षम होगा, साथ ही अन्य भाषाओं को भी सम्मान देगा। हिंदी में सोचने से विचार अधिक स्पष्ट और मौलिक होते हैं। अंग्रेज़ी का ज्ञान हमें वैश्विक मंच पर आगे बढ़ने में सहायता करता है।

यदि हम हिंदी को आत्मविश्वास के साथ अपनाएँ और अंग्रेज़ी को आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करें, तो भाषा का यह द्वंद समाप्त हो सकता है। आज के युग के बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता का यही मर्म है।

हिंदी भाषा और सांस्कृतिक चेतना

हिंदी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि वह भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन-दर्शन की वाहक है। हिंदी के माध्यम से पीढ़ियों ने अपने अनुभव, विश्वास और मूल्य एक-दूसरे तक पहुँचाए हैं। लोककथाएँ, भजन, दोहे, कहावतें और मुहावरे हिंदी की सांस्कृतिक शक्ति को दर्शाते हैं।

जब हिंदी में कोई बात कही जाती है, तो उसमें केवल शब्द नहीं होते, बल्कि उसके साथ एक सांस्कृतिक संदर्भ भी जुड़ा होता है। यही कारण है कि हिंदी में कही गई बात अक्सर अधिक आत्मीय और प्रभावशाली होती है।

अंग्रेज़ी भाषा और आधुनिक सोच

अंग्रेज़ी भाषा आधुनिकता, विज्ञान और तकनीक से जुड़ी हुई है। यह भाषा औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक विकास और वैश्वीकरण के साथ तेजी से फैली। आज अंग्रेज़ी को अंतरराष्ट्रीय संपर्क भाषा माना जाता है किन्तु इसका कारण अंग्रेज़ी का कोई आन्तरिक गुण नहीं बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी वर्चस्व है।

विचारों की अभिव्यक्ति में अंतर

हिंदी और अंग्रेज़ी में विचारों की अभिव्यक्ति का तरीका अलग-अलग है। हिंदी में भावनाओं को विस्तार से व्यक्त किया जाता है, जबकि भाषा के स्तर पर समग्रता है जबकि अंग्रेज़ी में भाव के स्तर पर संक्षिप्तता को महत्व दिया जाता है मगर भाषा के स्तर पर स्फीति है।

हिंदी में एक ही बात को कई वाक्यों में समझाया जाता है ताकि श्रोता पूरी तरह भाव को ग्रहण कर सके। अंग्रेज़ी में उसी बात को कम शब्दों में कहा जाता है। यही कारण है कि अंग्रेज़ी बोलते समय व्यक्ति को कम सोच-विचार करना पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मातृभाषा में सोचना और बोलना अधिक स्वाभाविक होता है। हिंदी बोलते समय भावनाएँ स्वतः प्रवाहित होती हैं। किंतु सामाजिक दबाव के कारण व्यक्ति हिंदी बोलते समय आत्मसंकोच का अनुभव करता है।

अंग्रेज़ी बोलते समय व्यक्ति भावनाओं से कुछ दूरी बनाए रखता है, जिससे संकोच कम हो जाता है। यही कारण है कि अंग्रेज़ी बोलना कई लोगों को आसान लगता है।

भाषा और आत्मविश्वास

भाषा और आत्मविश्वास का गहरा संबंध है। जिस भाषा में व्यक्ति स्वयं को सहज महसूस करता है, उसी में वह अधिक आत्मविश्वास से बोलता है। दुर्भाग्यवश आज आत्मविश्वास को अंग्रेज़ी से जोड़ दिया गया है।

यदि हिंदी को भी शिक्षा और समाज में समान सम्मान मिले, तो हिंदी बोलने में कठिनाई स्वतः समाप्त हो जाएगी।

वैश्वीकरण और भाषा

वैश्वीकरण के इस युग में भाषाओं का आपसी संपर्क बढ़ गया है। हिंदी अर्थ को जोड़ने नहीं, बल्कि पहचानने की प्रक्रिया को महत्व देती है अतः यह सम्पर्क की सर्वोत्तम भाषा है। साथ ही हिंदी को एक **अनुभवात्मक (experiential) भाषा** है अतः इसमें अनुभव का इतिहास सुरक्षित रहता है अतः यह संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखती है।

यदि हिंदी भाषा की इस समग्र, अनुभवात्मक प्रकृति को **संज्ञानात्मक भाषाविज्ञान (Cognitive Linguistics)** के संदर्भ में देखा जाए, तो **जॉर्ज लैकोफ (George Lakoff)** और **मार्क जॉनसन (Mark Johnson)** का रूपक-सिद्धांत (Conceptual Metaphor Theory) विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है। लैकोफ और जॉनसन के अनुसार भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का साधन नहीं है, बल्कि मनुष्य की **सोच स्वयं रूपकात्मक (metaphorical)** होती है। मनुष्य अमूर्त विचारों को ठोस, शारीरिक और अनुभवजन्य संरचनाओं के माध्यम से समझता है।

हिंदी भाषा इस रूपकात्मक सोच को अत्यंत स्वाभाविक ढंग से प्रकट करती है। हिंदी में प्रयुक्त अनेक दैनिक वाक्य—जैसे “दिल भारी है”, “मन टूट गया”, “रास्ता साफ़ है”, “विचार गहरे हैं”—यह दर्शाते हैं कि भावनात्मक और मानसिक अवस्थाओं को शारीरिक अनुभवों के माध्यम से समझा और व्यक्त किया जाता है। यह वही प्रक्रिया है जिसे लैकोफ और जॉनसन **Embodied Cognition** कहते हैं।

हिंदी में वक्ता जब वैखरी स्तर पर बोलता है, तब उसके शब्द पश्यंती और मध्यमा स्तर के अनुभवों से संचालित होते हैं। यही अनुभवात्मक आधार भाषा को केवल प्रतीकात्मक न रखकर **अनुभूत अर्थ (felt meaning)** में बदल देता है। इस दृष्टि से हिंदी भाषा लैकोफ-जॉनसन के सिद्धांत का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करती है, जहाँ भाषा, शरीर और अनुभव एक-दूसरे से पृथक नहीं, बल्कि अंतःसंबद्ध हैं।

अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी में यह रूपकात्मकता अधिक जीवंत और सहज प्रतीत होती है, क्योंकि हिंदी सांस्कृतिक रूप से अनुभव और संवेदना को विचार से अलग नहीं करती। अतः हिंदी भाषा न केवल गेस्टाल्ट मनोविज्ञान, बल्कि संज्ञानात्मक भाषाविज्ञान के आधुनिक सिद्धांतों के साथ भी गहरे स्तर पर संगति स्थापित करती है। इस तरह हिंदी एक भाषा नहीं एक सभ्यता है एक संस्कृति है एक पूरा संसार है। जर्मन दार्शनिक हाईडेगर के शब्दों में कहें तो —dasein (पूरा संविश्व)

पंचतंत्र (एक संकलन)



स्वाति कुमारी

(कनि. अनुवादक)
महालेखाकार का कार्यालय
(लेखा एवं हकदारी),
त्रिपुरा, अगरतला

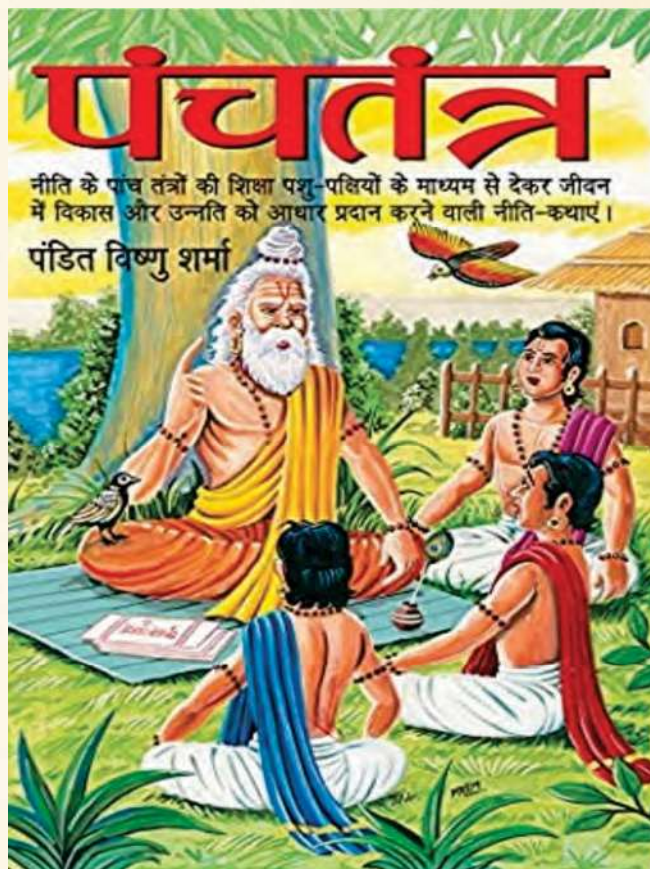
नीति कथाओं में **पंचतंत्र** को प्रथम स्थान प्राप्त है। यह संस्कृत साहित्य की एक सुप्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक है। यह नीति और शिक्षा पर आधारित कहानियों का संग्रह है। पंच यानि 'पाँच' और तंत्र यानि 'सिद्धांत या नियम' दोनों को मिलाकर पंचतंत्र बना। पंचतंत्र शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है परंपराओं और शिक्षाओं के पाँच धागों को एक पाठ में पिरोना। इस पुस्तक का विभाजन कुल पाँच अध्यायों में किया गया है। इन्हें ही तंत्र कहा जाता है। पंचतंत्र में निम्नलिखित पाँच तंत्रों का उल्लेख मिलता है:

1. **मित्रभेद** : मित्रभेद का तात्पर्य है- मित्रों में मनमुटाव एवं अलगाव।
2. **मित्रलाभ** : मित्रलाभ या मित्रसम्प्राप्ति का अर्थ है- मित्र प्राप्ति एवं उसके लाभ।
3. **काकोलुकीय** : काकोलुकीय यानि शत्रु के साथ परिस्थितिवश मैत्री संबंध स्थापित हो जाने पर भी उससे सावधान रहना और गुप्तचरों की भूमिका का महत्त्व।
4. **लब्धप्रणाश** : लब्धप्रणाश का तात्पर्य है- शत्रु की विजय को मिट्टी में मिलाने के उपाय।
5. **अपरीक्षित कारक** : अपरीक्षित कारक यानि जिसको परखा नहीं गया हो उसे करने से पहले सावधान रहें; हड़बड़ी में कोई भी कदम बिल्कुल न उठायें।

पंचतंत्र में निहित ये पाँच तंत्र मानव जाति को जीवन के गूढ़ रहस्य सिखाने का कार्य करते हैं। समाज में होने वाले राजनीति तथा आंतरिक द्वंद से हमारा परिचय कराते हैं। साथ ही सही मार्ग चुनने में भी मददगार साबित होते हैं। यह हमें सही व

गलत के बीच के अंतर को भी समझाते हैं। ये कह सकते हैं कि पंचतंत्र पाठकों के समक्ष गागर में सागर समाहित करने का एक विश्वप्रसिद्ध उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पंचतंत्र का रचयिता पंडित विष्णु शर्मा को माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब उन्होंने इसकी रचना की तो उस समय उनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष थी। कहा जाता है कि पंडित विष्णु शर्मा जी के पास एक राजा के पुत्र को शिक्षा देने का प्रस्ताव आया। सभी लोगों का मानना था कि वह एक निरा मूढ़ बालक है। अतः अब उसे शिक्षा प्रदान करना उनके लिए एक



चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया। अंततः उन्होंने अपनी सूझ-बूझ दिखाते हुए इस समस्या का एक हल सोचा और उस बालक को शिक्षा देने के लिए कहानियों का सहारा लेना उचित समझा। चूँकि कहानी के माध्यम से कही गई बात आसानी से समझ आती है। साथ ही इसे काफी लंबे समय तक आसानी से याद रखा जा सकता है।

पंचतंत्र संस्कृत साहित्य का एक सुप्रसिद्ध और प्राचीन ग्रंथ है। यह पशु दंतकथाओं का एक प्राचीन भारतीय संग्रह है। इसमें जानवरों की कहानियों के माध्यम से नैतिक शिक्षाएँ दी गई हैं। इसके पात्र मनुष्यों के इतर पशु-पक्षी भी हैं। ये कहानियाँ काफी रोचक, मनोरंजक व शिक्षाप्रद होती हैं। पंचतंत्र की कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं:

• नैतिक शिक्षा:

पंचतंत्र की प्रत्येक कहानी में कोई न कोई नैतिक शिक्षा दी गई है, जो जीवन के महत्वपूर्ण पाठों को सिखाती है। ये मनुष्य के दिन प्रतिदिन के क्रियाकलापों के लिए भी काफी मददगार साबित होती है।

• पशु-पक्षियों की कहानियाँ:

पंचतंत्र की कहानियाँ मुख्यतः पशु-पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं के माध्यम से नैतिक शिक्षा प्रदान करती हैं, जो बच्चों को अत्यधिक आकर्षित करती है। कई बार तो पशु-पक्षियों को मनुष्य से बेहतर यानि ज्यादा गुणी व सभ्य दिखाया गया है।

• सरल भाषा:

पंचतंत्र की कहानियाँ सरल और सुगम भाषा में लिखी गई हैं। जिससे सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए समझने में आसानी हो। साथ ही यह सर्वसुलभ भी है। ताकि इसका मुख्य उद्देश्य जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

• विश्वसनीयता :

पंचतंत्र की कहानियों को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। उनका विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

पंचतंत्र की कहानियाँ जीवन को सफलतापूर्वक जीने के लिए कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ भी देती हैं। इन नैतिक कहानियों से सीख कर मनुष्य अपने जीवन को यकीनन बेहतर बना सकता है। उनमें से प्रमुख निम्नवत हैं :

• मित्रता :

पंचतंत्र की कहानियाँ सही मित्र की पहचान, मित्रता का महत्व और धोखा से बचने की शिक्षाएँ भी देती हैं। ये कहानियाँ एक सच्चे मित्र में निहित गुणों से मनुष्यों को अवगत कराने में सहायक सिद्ध होती हैं।

• ईमानदारी :

पंचतंत्र की कहानियों में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के महत्व को उजागर किया गया है। ताकि प्रत्येक मनुष्य इन नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में ढाल सके। वैसे भी ईमानदारी को सर्वोत्तम नीति बताया गया है।

• साहस :

पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से साहस के साथ मुश्किलों का सामना करने और डर को दूर करने की सीख दी गई है। वैसे भी ठीक ही कहा गया है- डर के आगे जीत है। किसी भी विषम परिस्थिति का सामना साहस के साथ डट कर करने की सीख देती है।

• नियमों का पालन :

पंचतंत्र की कहानियाँ हमें नियमों और व्यवस्था का पालन करना सिखाती हैं। ये मनुष्य के जीवन में अनुशासन के महत्व को समझाती हैं। इन नियमों का पालन करके ही कोई भी मनुष्य महान बन सकता है।

• धैर्य :

इन कहानियों में धैर्य और सहनशीलता के महत्व को दर्शाया गया है। ये दो गुण मानव को महान बनाते हैं। ये ऐसे गुण हैं जो कि किसी भी मनुष्य को कठिन से कठिनतम परिस्थितियों में भी शांत और स्थिर रहने में मदद करते हैं। धैर्य मनुष्य

को मुश्किलों व चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है।

पंचतंत्र की कई कहानियों में मनुष्य-पात्रों के अलावा कई बार पशु-पक्षियों को भी कथा का पात्र बनाया गया है तथा उनसे कई शिक्षाप्रद बातें कहलवाने की कोशिश की गई है। इन्हें ही दंतकथा की संज्ञा भी दी गई है। पंचतंत्र ही हितोपदेश की रचना का आधार है। यद्यपि यह पुस्तक अपने मूल रूप में नहीं रह गयी है, फिर भी उपलब्ध अनुवादों के आधार पर इसकी रचना तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आस-पास की मानी जाती है।

पंचतंत्र की कहानियाँ बहुत ही जीवंत हैं। इनमें लोकव्यवहार को काफी सरल तरीके से समझाया गया है। बहुत से लोग इस पुस्तक को नेतृत्व क्षमता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं। इस पुस्तक की महत्ता इसी से प्रतिपादित होती है कि इसका अनुवाद विश्व की लगभग हर भाषा में हो चुका है। आज के समय में मनुष्यों को गुणवान एवं सामर्थ्यवान बनाने के लिए यह जरूरी हो गया है कि बाल्यवस्था से ही पंचतंत्र की कहानियों की सहायता से उन्हें नैतिक मूल्य सिखाए जाएं। ताकि बच्चे खेल-खेल में उपयोगी शिक्षा भी ग्रहण कर लें व उन पर अतिरिक्त भार भी ना पड़े। पंचतंत्र की कहानियाँ बच्चों व बड़ों दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती हैं। ये शिक्षाएं जीवन पर्यंत मनुष्य के काम आती हैं।

पंचतंत्र की कहानियों में कई नीति श्लोक हैं। ये जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि मित्रता, नैतिकता, राजनीति और सामाजिक व्यवहार इत्यादि पर पाठकों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। ये कहानियों में निहित ज्ञान की गहराई को उजागर करते हैं। श्लोक विचार के सार को इस तरह प्रस्तुत करते हैं जो कि किसी अन्य भाषा में प्रकट करना संभव ही नहीं हो पाएगा। उदाहरणस्वरूप यहाँ उनमें से प्रमुख प्रस्तुत है:

1. “अतिथिदेवो भव, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव।”

अर्थात् अतिथि को देवता समझो, माता को देवता समझो, पिता को देवता समझो, आचार्य को देवता समझो। यह श्लोक सम्मान और आदर के महत्व को दर्शाता है। यह बताता है कि अपने माता-पिता, आचार्य और अतिथियों का सम्मान करना चाहिए। उन्हें देवता स्वरूप समझा जाना चाहिए।

**2. “उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयःपानं भुजंगाणां केवलं विषवर्धनम्॥”**

अर्थात् मूर्खों को दिया गया उपदेश उनके क्रोध को बढ़ाता है ना कि शांत करता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार साँपों को दूध पिलाने से उनका विष कम होने के बजाय बढ़ता है। यह श्लोक मूर्खों को उपदेश देने के परिणाम को दर्शाता है। यह सत्य है कि मूर्खों को उपदेश देने से वे शांत नहीं होते अपितु अधिक क्रोधित हो जाते हैं। यह किसी भी व्यक्ति को सलाह देते समय विवेक और परिस्थिति का ध्यान रखने की आवश्यकता पर बल देता है।

यह भारत की सर्वाधिक अनूदित साहित्यिक रचना है। मनोविज्ञान, व्यवहारिकता तथा राजकाज के सिद्धांतों से परिचित कराती ये कहानियाँ सभी विषयों को बड़े ही रोचक तरीके से हमारे सामने रखती हैं। साथ ही साथ मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रत्येक कहानी एक नई सीख देने की कोशिश करती है। पंचतंत्र की कहानियों की सार्थकता को प्रकट करती एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है-

**“करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान,
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान ।”**

अर्थात् जिस प्रकार लगातार आती-जाती रस्सी पत्थर के इतने कठोर होने के बावजूद भी उस पर निशान बना देती है, ठीक उसी प्रकार सतत अभ्यास किसी भी बुद्धिहीन को बुद्धिमान बना देता है।

(Practice turns a fool into a wise as a running rope makes it's mark on a stone tablet.)

श्री गुरु रविदास जी: एक महान संत, कवि और समाज सुधारक



संजीव कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़

श्री गुरु रविदास जी, जिन्हें संत रैदास के नाम से भी जाना जाता है, 15वीं-16वीं शताब्दी के मध्यकालीन भारत के एक महान संत, कवि, दार्शनिक और समाज सुधारक थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास सीर गोवर्धनपुर में एक चर्मकार परिवार में हुआ था। गुरु रविदास जी भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक थे, जिन्होंने जाति-पात, छुआछूत और सामाजिक असमानता के विरुद्ध अपनी वाणी और कर्मों के माध्यम से आवाज उठाई। उनकी शिक्षाएं आज भी सामाजिक समरसता, समानता और आध्यात्मिक मुक्ति के लिए प्रासंगिक हैं। उनकी रचनाएं सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ *गुरु ग्रंथ साहिब* में शामिल हैं, और वे रविदासिया समुदाय के केंद्रीय आध्यात्मिक व्यक्तित्व हैं।

श्री गुरु रविदास जी का जन्म माघ मास की पूर्णिमा को 1377 ईस्वी में वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम संतोख दास और माता का नाम कलसा देवी था। उनके दादा कालूराम और दादी लखपती थीं। उनकी पत्नी का नाम लोना देवी और पुत्र का नाम विजय दास था। श्री गुरु रविदास जी का परिवार चर्मकार समुदाय से था, जो उस समय समाज में निम्न माना जाता था। वे जूते बनाने का कार्य करते थे और इसे पूरी लगन व निष्ठा से करते थे। उनकी मेहनत और ईमानदारी ने उन्हें समाज में सम्मान दिलाया। बचपन से ही वे आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और साधु-संतों की संगति में रहकर उन्होंने आत्मज्ञान और भक्ति का मार्ग अपनाया। कहा जाता है कि श्री गुरु रविदास जी स्वामी रामानंद जी के शिष्य थे, जो वैष्णव भक्ति परंपरा के महान संत थे। स्वामी रामानंद की शिक्षाओं ने उन्हें सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध लड़ने और निर्गुण भक्ति का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

गुरु रविदास जी का दर्शन निर्गुण भक्ति पर आधारित था, जिसमें ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापी माना जाता है। उन्होंने बाहरी अनुष्ठानों, कर्मकांडों और जाति-पात के भेदभाव को खारिज किया। उनकी शिक्षाओं के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- सामाजिक समानता:** गुरु रविदास जी ने जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध किया। उनकी वाणी में बार-बार यह संदेश मिलता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं और कोई भी जाति ऊँच-नीच नहीं है।
- आध्यात्मिक मुक्ति:** उन्होंने सच्ची भक्ति को आत्मज्ञान का मार्ग बताया। उनके अनुसार ईश्वर का नाम जपने और सच्चे गुरु के उपदेशों का पालन करने से ही मुक्ति संभव है।
- कर्म की महत्ता:** गुरु रविदास जी ने कर्म को धर्म का आधार माना। उन्होंने कहा कि निष्काम कर्म और मेहनत से किया गया कार्य ही व्यक्ति को ईश्वर के करीब ले जाता है।
- प्रेम और एकता:** उनकी शिक्षाएं समाज में प्रेम, एकता और भाईचारे को बढ़ावा देती हैं। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों को एक समान माना और सभी को एक ईश्वर की संतान बताया।

गुरु रविदास जी की रचनाएं उनकी गहरी आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना को दर्शाती हैं। उनकी वाणी में सादगी, मिठास और गहन दार्शनिकता का समन्वय है। उनकी कुछ

प्रमुख रचनाएं गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं, और उनके दोहे आज भी लोगों के बीच लोकप्रिय हैं।

**“जनम जात मत पूछिए, का जात अरू पात।
रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहिं जात कुजात ॥”**

अर्थ: किसी की जन्मजात जाति या कुल न पूछें। रविदास कहते हैं कि सभी प्रभु की संतान हैं, कोई भी अच्छी या बुरी जाति नहीं है। यह श्लोक सामाजिक समानता पर जोर देता है।

**“पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रैदास दास पराधीन सौं, कौन करैहै प्रीत ॥”**

अर्थ: पराधीनता (गुलामी) एक पाप है, यह समझ लो, मित्र। रविदास कहते हैं कि जो व्यक्ति पराधीन है, उससे कोई प्रेम नहीं करता। यह श्लोक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की महत्ता को दर्शाता है।

“मन चंगा तो कठौती में गंगा ॥”

अर्थ: यदि मन शुद्ध है, तो एक छोटे से बर्तन में भी गंगा का पवित्र जल समा सकता है। यह प्रसिद्ध उक्ति यह दर्शाती है कि सच्ची भक्ति और शुद्ध मन ही ईश्वर तक पहुँचने का साधन है।

गुरु रविदास जी ने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों, जैसे जातिवाद, छुआछूत और धार्मिक कट्टरता, के विरुद्ध खुलकर



आवाज उठाई। उन्होंने बेगमपुरा नामक एक आदर्श समाज की कल्पना की, जहाँ कोई भेदभाव, दुख या असमानता न हो। यह दृष्टि आज भी सामाजिक न्याय और समानता के लिए प्रेरणा देती है। उनके अनुयायियों में राजा-रानी, जैसे चित्तौड़ के राणा सांगा और उनकी पत्नी झाली रानी, साथ ही प्रसिद्ध भक्ति कवयित्री मीराबाई शामिल थीं। मीराबाई ने गुरु रविदास जी को अपना गुरु माना और उनकी शिक्षाओं से गहरी प्रेरणा ली।

गुरु रविदास जी भक्ति आंदोलन के निर्गुण धारा के प्रमुख संत थे। उन्होंने निर्गुण ईश्वर की भक्ति को प्रचारित किया, जिसमें बाहरी कर्मकांडों के बजाय आंतरिक शुद्धता और प्रेम पर जोर दिया गया। उनकी वाणी ने सिख धर्म, रविदासिया धर्म और अन्य भक्ति परंपराओं को प्रभावित किया। उनके समकालीन संत कबीर और गुरु नानक भी उनके समान विचारों को प्रचारित करते थे। कुछ स्रोतों के अनुसार, गुरु रविदास और संत कबीर गुरु रामानंद के शिष्य थे और गुरुभाई थे।

ऐसा माना जाता है कि गुरु रविदास जी ने 1540 ईस्वी में वाराणसी में देह त्याग किया। कुछ कथाओं के अनुसार, वे चित्तौड़ से स्वर्गारोहण कर गए। उनकी जयंती माघ पूर्णिमा को पूरे भारत में धूमधाम से मनाई जाती है, विशेष रूप से वाराणसी के सीर गोवर्धनपुर में उनके जन्मस्थान मंदिर में। श्री गुरु रविदास जी एक ऐसे संत थे, जिन्होंने अपनी वाणी और कर्मों के माध्यम से समाज को एकता, समानता और प्रेम का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएं और श्लोक आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। वे न केवल एक आध्यात्मिक गुरु थे, बल्कि एक समाज सुधारक भी थे, जिन्होंने जातिवाद और भेदभाव के खिलाफ क्रांति की शुरुआत की। उनकी वाणी में निहित मिठास और गहनता आज भी सामाजिक न्याय और आध्यात्मिक मुक्ति की खोज करने वालों के लिए मार्गदर्शक है।

भाषिणी: भारत की भाषाई विविधता से डिजिटल समावेशन की ओर



अमिताभ नाग

मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
डिजिटल इंडिया भाषिणी डिवीजन
नई दिल्ली

माननीय प्रधानमंत्री ने अपने वक्तव्यों में बार-बार यह भाव प्रकट किया है कि **भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि समाज की चेतना का एक जीवंत रूप होती है।** भारत में यह चेतना हर जगह दिखाई देती है। **संसद के विमर्श से लेकर गांव की बैठकों तक, कक्षा की चर्चाओं से लेकर डॉक्टर के परामर्श तक, हर स्तर पर अलग-अलग भाषाएं** हमारे फैसलों और व्यवहार को दिशा देती हैं। सदियों से यही **भाषाई विविधता** हमारी **संस्कृति और सामूहिक स्मृति** की वाहक रही है।

लेकिन जब भारत तेजी से **डिजिटल-प्रथम अर्थव्यवस्था** की ओर बढ़ा, तो एक **खाई** भी साफ दिखाई देने लगी। तकनीक कुछ **गिनी-चुनी भाषाओं** में आगे बढ़ रही थी, जबकि करोड़ों नागरिक अपनी **मातृभाषाओं** में सोचते, बोलते और काम करते हैं। जैसे-जैसे **डिजिटल प्रणालियों** का दायरा बढ़ा, यह साफ हुआ कि जब व्यवस्था उनकी भाषा नहीं समझती, तो लोग अनजाने में पीछे रह जाते हैं। यह नागरिकों की नहीं, बल्कि **रूपरेखा की कमी** थी।

इसी सोच को बदलने के लिए **जुलाई 2022 में राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन, डिजिटल इंडिया भाषिणी मिशन** की शुरुआत की गई। इसने **डिजिटल परिवर्तन** की दिशा ही बदल दी। भाषा को अब किसी **बाद में जोड़े जाने वाले तत्व** की तरह नहीं, बल्कि **डिजिटल अवसंरचना के मूल स्तंभ** के रूप में देखा गया। संदेश बिल्कुल स्पष्ट था कि **कोई भी नागरिक केवल भाषा के कारण डिजिटल सेवाओं से वंचित नहीं रहेगा।**

भाषिणी का **आधारभूत सिद्धांत** बहुत स्पष्ट है। **तकनीक को लोगों के अनुरूप ढलना चाहिए, न कि लोगों को तकनीक**

के अनुरूप। सैकड़ों **जीवित भाषाओं** और हजारों **बोलियों** वाले देश में एक जैसी **डिजिटल आदतों** की उम्मीद न तो व्यावहारिक है और न ही न्यायसंगत। यदि **डिजिटल इंडिया** को वास्तव में बड़े पैमाने पर सफल होना है, तो उसे **भारत की तरह बोलना और समझना होगा।**

भाषिणी की विशेषता यह है कि यह एक साथ **तीन बड़ी बाधाओं** को संबोधित करता है।

पहली, भाषा की बाधा, जहां तंत्र स्थानीय **बोली या लहजे** को नहीं समझ पाते।

दूसरी, डिजिटल बाधा, जहां **जटिल इंटरफेस** लोगों को दूर कर देते हैं।

तीसरी, साक्षरता की बाधा, जहां **पढ़ना और टाइप करना** अनिवार्य हो जाता है।

वॉइस, अनुवाद और दस्तावेज़ समझ जैसी क्षमताएं इन तीनों दीवारों को एक साथ कमजोर करती हैं।

यह दृष्टिकोण केवल **तकनीकी** नहीं, बल्कि गहराई से **मानवीय** है। जैसा कि **हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित कवयित्री महादेवी वर्मा** के विचारों में भी **भाषा** के भावनात्मक और चेतनात्मक आयाम दिखाई देते हैं, भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि अनुभव और पहचान की अभिव्यक्ति है। जब **डिजिटल प्रणालियां** भाषा को नहीं पहचानतीं, तो वे पहचान को भी अनदेखा कर देती हैं।

नेतृत्व के नजरिए से, **वॉइस** केवल **समावेशन का औजार** नहीं, बल्कि **उत्पादकता का सशक्त माध्यम** भी है। जब **बोली गई बात सीधे प्रतिलिपि, सारांश और संरचित डेटा** में बदल जाती है, तो **काम तेज होता है, सटीकता बढ़ती है और**

बड़े पैमाने पर काम करना संभव होता है। यही तकनीक पहली बार डिजिटल सेवाओं से जुड़ने वाले नागरिकों के लिए भी उतनी ही उपयोगी है, जितनी अनुभवी पेशेवरों के लिए।

तकनीकी स्तर पर, भाषिणी आज बहुभाषी कृत्रिम बुद्धिमीत्ता (AI) को राष्ट्रीय डिजिटल अवसंरचना के रूप में खड़ा कर रहा है। इसमें 22 संवैधानिक भाषाओं में वाक पहचान, 36 भाषाओं में अनुवाद, टेक्स्ट टू स्पीच, स्पीच टू स्पीच, ओसीआर, लिप्यंतरण और भारतीय संदर्भ पर आधारित डिजिटल शब्दावलि शामिल हैं। यह कोई सीमित प्रयोग नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर काम करने के लिए तैयार प्रणाली है।

पिछले दो वर्षों में भाषिणी ने ठोस प्रगति की है। आज मंच पर 350 से अधिक एआई मॉडल और डेटासेट, 22 भाषाओं में वॉइस समर्थन, 36 भाषाओं में टेक्स्ट समर्थन और अब तक 4 अरब से अधिक इनफेरेंस पूरे किए जा चुके हैं, जिनका औसत प्रतिदिन लगभग 1.4 करोड़ है। इस पूरे तंत्र को राष्ट्रीय भाषा प्रौद्योगिकी केंद्र संचालित करता है, जो सरकारी, उद्यम और नागरिक सेवाओं को बहुभाषी बनाता है।

भाषिणी के पास देश के सबसे बड़े भाषा डेटासेट हैं, जिनमें 24.6 करोड़ समानांतर डेटासेट, 37 लाख एकभाषी डेटासेट, 14,000 घंटे का एसआर ऑडियो, 25 लाख ओसीआर चित्र, 476 घंटे का टीटीएस ऑडियो और 2.05 करोड़ लिप्यंतरण शब्द युग्म शामिल हैं। 500 से अधिक संस्थान और भागीदार इन संसाधनों और एपीआई का उपयोग कर अपनी सेवाओं को अधिक सुलभ बना रहे हैं।

इस पैमाने को संभव बनाने वाली सबसे बड़ी ताकत इसका सहयोगात्मक पारिस्थितिकी तंत्र है। अनुसंधान संस्थान, भाषा विशेषज्ञ, स्टार्टअप, राज्य सरकारें और उद्योग मिलकर इसे आगे बढ़ा रहे हैं। निरंतर प्रतिक्रिया से मॉडल केवल कागज पर नहीं, बल्कि जमीन पर बेहतर बनते हैं। भाषा स्थानीय होती है, इसलिए स्थानीय सहभागिता अनिवार्य है।

परिनियोजन की रणनीति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। भाषिणी सीमित लेकिन प्रभावी उपयोग मामलों से शुरुआत करती है, जल्दी सीखती है और फिर विस्तार करती है। खुले और

अंतःक्रियाशील एपीआई, वास्तविक दुनिया का डेटा और उपयोगकर्ताओं के साथ सह निर्माण इसे लगातार बेहतर बनाते रहते हैं।

जमीनी स्तर पर असर अब साफ दिख रहा है। पंचायती राज संस्थाएं बैठकों को रिकॉर्ड, ट्रांस्क्रिप्शन और अनुवाद कर विश्वसनीय डिजिटल अभिलेख बना रही हैं, जिससे शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही मजबूत हो रही है। कल्याण, परिवहन, रोजगार और शिकायत निवारण जैसे क्षेत्रों में बहुभाषी और वॉइस सक्षम प्लेटफॉर्म तेजी से अपनाए जा रहे हैं।

निजी क्षेत्र के लिए भी इसके निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं। टियर दो और टियर तीन बाजारों में विस्तार की सबसे बड़ी चुनौती अक्सर मांग नहीं, बल्कि भाषाई पहुंच होती है। वॉइस-प्रथम और बहुभाषी इंटरफेस इस दूरी को पाटते हैं और व्यवसायों को नए उपभोक्ताओं तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं।

आर्थिक दृष्टि से, भाषा आधारित एआई नए रोजगार पैदा कर रहा है, जैसे डेटा निर्माण, एनोटेशन, भाषावैज्ञानिक विशेषज्ञता और मॉडल विकास। इससे एआई अर्थव्यवस्था में अधिक व्यापक और समावेशी सहभागिता संभव हो रही है।

कई वर्षों तक भारत की भाषाई विविधता को चुनौती माना गया। भाषिणी उस दृष्टि को बदलता है और इसे रणनीतिक डिजिटल शक्ति के रूप में स्थापित करता है। जैसे-जैसे तकनीक संवादात्मक और वॉइस आधारित होती जाएगी, वही प्रणालियां टिकाऊ होंगी जो लोगों की भाषा में बात कर सकें और उनके संदर्भ को समझ सकें।

यह मानी हुई बात है कि सहानुभूति के बिना मानदंड टिकाऊ नहीं होते। केवल तकनीक काफी नहीं, भरोसा भी जरूरी है और भरोसा भाषा से बनता है। जब व्यवस्था हमारी आवाज सुनती है, तो हम भी उन्हें अपनाते हैं।

भारत के डिजिटल भविष्य में हर आवाज का मूल्य है और हर भाषा की भूमिका है। और जब तकनीक सचमुच लोगों को समझने लगती है, तब प्रगति किसी आदेश से नहीं, बल्कि स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ती है।

कहानी



आश्रय



राजीव भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(ले.प.-प्रथम), राजस्थान, जयपुर

कडी चिलचिलाती धूप में चल रहे विरोध प्रदर्शन के बीच बीच अचानक एक वृद्ध चक्कर खाकर गिर पड़े। जैसे तैसे भीड़ में मौजूद कुछ लोगों ने उन्हें उठाकर पास के अस्पताल में भर्ती कराया। उनकी हालत काफी गम्भीर थी क्योंकि वो पिछले तीन दिनों से लगातार घंटों हाथों में एक तख्ती लिये चुपचाप विरोध प्रदर्शन वाली जगह पर बैठे रहते थे। यह प्रदर्शन सुप्रीम कोर्ट के उस आदेश को लेकर था जिसके तहत दिल्ली की सड़कों पर घूमने वाले बेघर कुत्तों को पकड़ कर "शेल्टर होम" में रखा जाना था। ये बुजुर्ग थे - श्री धर्मराज सिंह, एक सेवानिवृत्त महानगरपालिका अधिकारी। सिंह साहब कोर्ट के इस फैसले के विरुद्ध इसलिये थे क्योंकि वो जानते थे कि ये शेल्टर होम कभी भी इन बेजुबान जानवरों का आश्रय नहीं बन पाएंगे। जब वे महानगरपालिका में कार्यरत थे, उसी दौरान उन्होंने इस बात पर गौर किया था कि जब भी कोई शहरी नीति बनाई जाती है, तो उसके सबसे निचले पायदान पर होते हैं- कमजोर, निरीह एवं बेसहारा वर्ग जो अपने लिये आवाज नहीं उठा सकते। कागजों पर तो ऐसे वर्ग को बहुत सारी सुविधाएं मिलती हैं, लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत होती है। और इस बार इस भयावह सच का शिकार थे -बेघर कुत्ते।

श्री धर्मराज सिंह जी को कुत्तों से विशेष प्यार था। जब वे सेवा में थे, तब भी उन्होने नगरपालिका द्वारा बेघर कुत्तों के लिये चलाए जाने वाले टीकाकरण एवं नसबंदी अभियान की बागडोर अपने हाथों में ले रखी थी। वे हमेशा सुनिश्चित करते थे कि चिकित्सकीय प्रक्रिया पूरी होने के बाद कुत्तों को उनके वास्तविक इलाके में छोड़ दिया जाए। श्रीमती सिंह का देहावसान कई वर्ष पूर्व ही हो गया था। सिंह साहब ने अपने

एकमात्र पुत्र की अच्छी परवरिश की और आज उनका पुत्र विदेश में बहुत अच्छी कंपनी में कार्यरत है, और अपने परिवार के साथ वहीं बस गया। उसने कई बार अपने पिता को भी साथ चलने को कहा, लेकिन सिंह साहब माने नहीं। वे हमेशा कहते थे, "बेटा, अगर मैं तेरे साथ चला गया तो मेरे दूसरे बच्चों का क्या होगा?"

"दूसरे बच्चे...! ये कौन थे?"

असल में सिंह साहब ने अपने आस पास रहने वाले चार कुत्तों से प्रगाढ़ मित्रता कर ली थी। उनकी दिनचर्या सुबह के भ्रमण से शुरू होती थी और समाप्त होती थी रात को टहलने पर। और इस दौरान उनके सहचर होते थे - चार मासूम जीव। कभी किसी बारिश के दिनों में शिशुओं को जन्म देने के दौरान उनकी मां की मृत्यु हो गई थी। जब ऐसा हुआ तब सिंह साहब ने अनाधिकारिक तौर पर इन बच्चों को गोद ले लिया। यूं तो वे सभी जीवों से प्यार करते थे, और रास्ते में मिलने वाले बेघर गाय, कुत्ते सभी को भोजन देते थे, पर इन चारों पिल्लों (जो अब बड़े हो चुके थे) से उनको विशेष स्नेह था। दरअसल उनकी मां हर रोज सिंह साहब के घर के बाहर आकर खड़ी रहती थी और खाना खाकर ही जाती थी। बदले में वो उनकी अवैतनिक सुरक्षाकर्मी भी थी। जब वह गर्भवती थी, संयोग से सिंह साहब उन दिनों अपने बेटे से मिलने विदेश गए थे। जब तक वे लौट कर आए तब तक बहुत देर हो चुकी थी और वो कुपोषण के कारण बच्चों को जन्म देते समय ही चल बसी। उसी दिन सिंह साहब ने निर्णय लिया कि अब वे अपना बचा हुआ जीवन इन चारों को और भविष्य में होने वाले इनके बच्चों को ही पालने में ही व्यतीत करेंगे।

चारों कुत्ते अब बड़े हो चुके थे। उनका रहना, खाना-पीना, खेलना सब कुछ सिंह साहब के साथ ही होता था। मोहल्ले के कई लोग उनको समझाते थे कि “चाचाजी, इस उम्र में गली के कुत्तों के सानिध्य में रहना सही नहीं है, अगर कुछ हो गया या इन्होंने आपको काट लिया तो आप क्या करेंगे? कुछ लोग तो सिंह साहब से लड़ने तक आ जाते थे कि “क्यों आपने इन आवारा कुत्तों को शह दे रखी है, ये हमारा जीना दूभर कर रहे हैं। हमारे बच्चे इनके डर से बाहर भी नहीं निकल पाते हैं।”..... वगैरह-वगैरह। लेकिन सिंह साहब पर इन बातों से कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। लेकिन बीमारी और संक्रमण के खतरे को समझते हुए वे नियमित रूप से उन कुत्तों का टीकाकरण करवाते थे। यहां तक कि अगर कुत्ते बीमार पड़ते थे तब वे अपनी पेंशन का अच्छा खासा हिस्सा उनपर खर्च कर देते थे। वे अपने पड़ोसियों को भी समझाते थे कि “ये आपका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। ये पशु बस प्रेम के भूखे हैं और आपका प्रेम चाहते हैं, और यदि आप इन्हें प्यार करेंगे तो ये भी बदले में आपको उसको कहीं ज्यादा लौटाएंगे।” ऐसा बोलने पर लोग कहते थे कि “इतना ही प्रेम है आपको इनसे तो इन्हें अपने घर के अंदर क्यों नहीं रख लेते?” तब सिंह साहब चुप हो जाते थे। वे क्या कहते? कैसे बोलते कि प्रेम अगर सोने के पिंजरे में रख कर किया जाए तो वह प्रेम नहीं है। जो जीव जिस वातावरण में रहना चाहता है, वही उसका हक है और पशुओं को घर के अंदर रखना उनकी स्वाधीनता पर कुठराघात है। लेकिन सिंह साहब ने कुछ सोच रखा था, बस जबतक वो कुछ कर पाते, कोर्ट का आदेश आ गया।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश आते ही नगरपालिका वाले इतने फुर्तीले हो गए कि अगले दिन से ही उन्होंने दौड़ा दौड़ा कर कुत्तों को पकड़ना शुरू कर दिया। सिंह साहब ने दो तीन दिनों तक उन चारों को अपने घर में छुपा कर रखा। इन दिनों वो रोज कुत्तों को भोजन पानी देकर प्रदर्शन में हिस्सा लेने पहुंच जाते थे। और आज इसी कारण वो जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहे थे। दो दिनों के बाद उनको होश आया। होश

आते ही वो चीखे “मेरे बच्चे कहां हैं? वो दो दिनों से भूखे प्यासे होंगे।। कहीं उन्हें कोई ले तो नहीं गया?” वो बदहवास थे, अपने बच्चों की चिंता में। भाग्यवश, प्रदर्शन के दौरान उन्होंने एक व्यक्ति से अपनी और अपने बच्चों की कहानी साझा की थी। वह व्यक्ति वहां मौजूद था। उसने सिंह साहब को सम्भाला और मुस्कुरा कर बोला, “सिंह साहब, आप घबराइये नहीं, सुप्रीम कोर्ट ने अपना आदेश बदल दिया है। अब कोई आपके बच्चों को आपसे दूर नहीं ले जाएगा। और रही बात आपके बच्चों के भूख की, तो जल्दी से उनका व्रत खुलवाइये। जब से आप बिस्तर पर पड़े हैं, ये चारों अस्पताल के बाहर भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। आपके जेब में आपका आधार कार्ड था, वहीं से मुझे आपका पता मिला। लेकिन ये चारों आपके बिना खाने के लिये तैयार नहीं थे सो मैं इन्हें यहां लेता आया। इतना सुनते ही सिंह साहब दौड़ पड़े और उन चारों से लिपट गए। चारों कुत्ते खुशी से फूले नहीं समा रहे थे, मानो कह रहे हों कि आपकी और हमारी जीत हो ही गई।

सिंह साहब अब घर लौटे। रास्ते में ही उन्होंने निश्चय कर लिया था कि उन्हें क्या करना है। अब वो कोर्ट कचहरी और नगरपालिका के हाथों की कठपुतली बन कर नहीं रहना चाहते थे। घर पहुँचते ही उन्होंने सबसे पहला काम किया- अपने अकाउंटेंट को घर बुलाना। कुछ पैसों एवं संपत्ति का मोलभाव करने के बाद वे सो गए। अगले दिन से उनके बंगले के नवीकरण का काम शुरू हो गया और सबसे आगे एक बड़ी सी तख्ती लगी थी जिस पर लिखा था

“ आश्रय—एक प्राकृतिक आवास”

यहाँ सभी बेघर और बेसहारा जीवों का स्वागत है

उन्होंने आज के सभी अखबारों में अपने आश्रय का विज्ञापन भी दिया। जो लोग आश्रय के साथ काम करने के इच्छुक थे, उन्हें नियुक्ति प्रस्ताव भी दिए गए। आज सिंह साहब बहुत खुश थे क्योंकि उनके पास आज लोगों के सवालियों का एक जवाब था- आश्रय के रूप में।

पछतावा



अमित उपाध्याय

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
निरीक्षण स्कन्ध, सीएजी मुख्यालय,
नई दिल्ली

विवाह के कुछ दिनों बाद मम्मी की आज्ञानुसार उनके और अपनी पत्नी के साथ चित्रकूट की धार्मिक और पावन यात्रा पर निकला। मम्मी अपनी धार्मिक प्रवृत्तिनुसार जहाँ भी किसी मंदिर या धार्मिक स्थान पर जाती थीं, वहाँ परिवार की कुशलता और समृद्धि के लिए कुछ न कुछ भगवान से मन्त्रत मांग ही लेती थीं जिसको कार्य सिद्धि के पश्चात् उस धार्मिक स्थान पर धन्यवाद ज्ञापित करने हेतु सिर नंवाने जाना हमारा परम् कर्तव्य बन जाता था। ऊपर से घर का बड़ा पुत्र होने के नाते इस जिम्मेदारी के निर्वहन का दायित्व भी अनचाहे में सबसे ज्यादा मेरे ऊपर ही आ जाता था।

अच्छा तो खैर चाहे या अनचाहे मैं प्रयागराज से चित्रकूट पहुंचा। वहाँ पहुंचकर सबसे पहले जिस चीज पर मैंने गौर किया वो ये कि प्रत्येक घाट की दीवारों पर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित चौपाई लिखी हुई है, वो चौपाई इतने समय पश्चात् भी मुझे कंठस्थ है :

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर,
तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुबीर।

घाटों पर भजनों की घंटियां, आरती की लौ, मंत्रों की गूंज और मंदाकिनी नदी का निर्मल प्रवाह- सब कुछ जैसे मन को शांति देने के लिए आया था। परन्तु मम्मी के मंदिरों और घाटों के दर्शनों की संख्या खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। हनुमान धारा की सैंकड़ों सीढियां चढ़ने-उतरने के बाद शरीर भी थक कर 'अब बस कर' का आह्वान कर रहा था।

अंत में थक कर मैं अकेला एक मंदिर के बाहर प्रांग में खड़ा था, तभी भिखारियों की भीड़ के बीच से एक वृद्ध साधु समान व्यक्ति मेरे पास आए। उनकी आंखों में थकान और सूनापन था, लेकिन स्वर विनम्र – “बेटा भूखा हूँ, कुछ पैसा या खाने को दे दो”।

मैं दिनभर की थकान से चिड़चिड़ा सा था। झुंझलाहट में बिना कुछ सोचे-समझे उनको झिड़क कर बोल दिया – “चलो-चलो आगे जाओ, यहां कुछ नहीं मिलेगा”। ये सुनकर साधु की सूनी आंखें मेरे चेहरे के शून्य को घूरती हुई कुछ ही पल में भीड़ में गुम हो गईं।

उनके जाने के बाद मुझे अपने इस कृत्य पर आत्मग्लानि का एहसास हुआ और ये सोचकर और ज्यादा कष्ट हुआ कि जहां इतने सारे लोगों को सबेरे से दान दिया, वहां एक और को दे देता तो क्या चला जाता।

यात्रा तो पूरी हो गई, लेकिन वो सूनी आंखें जैसे मेरे दिल की गहराइयों में पत्थर बनकर बैठ गईं। सालों बाद, जीवन में जब भी कोई कठिनाई आती है तो मुझे वो पल और वो सूनी आंखें जरूर याद आ जाती हैं और लगता है कि शायद उस दिन भगवान ने मुझे साधु के रूप में परखा था और मैं उस परीक्षा में असफल हो गया। अब तो मुझे लगता है -

दुनिया में मदद का हर मौका ईश्वर का दिया हुआ प्रसाद है, अगर उसे ठुकराओगे तो वह जीवन भर याद दिलाता रहेगा कि तुमसे क्या छूट गया।

वजूद

अमरेंद्र कुमार चौधरी

स. ले. प. अ. (वाणिज्यिक)

ए एम जी ।।। / लेखापरीक्षा - II

प्र म ले (लेखापरीक्षा-II), कार्यालय,
बंगलोर, कर्नाटक

अपनी पत्नी को मुखाग्नि देने के बाद घर लौटते वक्त सुभाष का चेहरा काफी शांत था। आँखें नम तो थी परन्तु आंसू की एक भी बूँद को नीचे नहीं गिरने दिया था। एक बेटी थी रश्मि जो महज सात साल की थी उसका तो जैसे गला ही सूख गया था। श्राद्ध की तैयारियां चल रही थी। आनन फानन में कब तेरह दिन बीत गए पता ही नहीं चला। अतिथियों के विदाई का भी समय आ गया और धीरे-धीरे सभी अतिथिगण सुभाष को सांत्वना देते हुए कि "जब भी मेरी जरूरत होगी मैं हमेशा तुम्हारे साथ खड़ा रहूंगा", अपने-अपने गंतव्य स्थान को प्रस्थान किये। सगे-सम्बन्धी ऐसी सांत्वना देते तो जरूर हैं परन्तु वास्तव में जब भी कोई आवश्यकता आन ही पड़े तो वह किनारा कर लेते हैं।

चुपचाप घर के बरामदे पर पड़े आरामकुर्सी पर सुभाष लेटा हुआ था। घर आये हुए सभी जन-परिजन जा चुके थे। घर में उसकी बेटी रश्मि के अलावा कोई और नहीं था। अपनी पत्नी के यादों में सुभाष की कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला।

सुभाष अपने माता – पिता की इकलौती संतान था परन्तु दोनों की मृत्यु बचपन में हो जाने के कारण सुभाष का बचपन अनाथ की तरह ननिहाल में बीता। जैसे-तैसे बोर्ड की परीक्षा पास कर कॉलेज में दाखिला लिया। कॉलेज से डिग्री प्राप्त करने के बाद सुभाष अपने ननिहाल से अलग रहने लगा। अपना गुजारा वह एडहॉक बेसिस पर नौकरी एवं ट्यूशन पढ़ाकर करने लगा।

समय बीतता गया, सुभाष की उम्र अब विवाह के लायक हो चुकी थी। ननिहाल वालों ने सुभाष का विवाह एक सामान्य घराने की परन्तु सुशील लड़की से करवा दिया। "जीवन में कभी किसी से प्रेम व सम्मान न मिलने के कारण पत्नी से

थोड़ा सा प्रेम व सम्मान मिलने पर दिखने में एक सामान्य स्त्री उसे सौंदर्य की प्रतिमा लगने लगी थी"। धीरे-धीरे वह उसी में भाव विभोर होने लग गया था। सुभाष भी देखने में ज्यादा आकर्षक न था सो दोनों की जोड़ी ठीक-ठाक ही थी।

अब कहीं जाकर उसे समझ में आ रहा था कि परिवार व समाज में उसका कोई 'वजूद' है, और इसका सारा श्रेय वह अपनी पत्नी को ही दे रहा था। **बात भी सही थी उसकी...**
"पुरुष का वजूद स्त्री से ही है व स्त्री का भी सौंदर्य भी पुरुष से ही है"।





जीवन दोनों का अच्छी तरह से चल रहा था। परन्तु शांति किसे रास आती है, न नीचे वालों को और न ऊपर वाले को। सुभाष की पत्नी अचानक एक दिन बीमार हो गयी। हल्का सा ज्वर था उसे। पहले तो सुभाष ने इसे सामान्य रूप से लिया उसे लगा कि सामान्य ज्वर है, दो-तीन दिन में ठीक हो जायेगा।

एक सप्ताह बीत गया था कभी ज्वर कम तो कभी अधिक। घर में छोटी सी बेटी के अलावा कोई और सदस्य न होने के कारण वह अकेला पड़ गया था। धीरे धीरे उसका ट्यूशन भी छूटता गया। आय का स्रोत भी कम हो गया था। कभी ये डॉक्टर कभी वो डॉक्टर, कभी यहाँ झाड़फूँक कभी वहाँ टोना टोटका। इस तरह एक महीना बीत गया था ज्वर में कोई ज्यादा असर नहीं था।

काफी जांच पड़ताल के बाद पता चला कि उसकी पत्नी को आखिरी स्टेज का कैंसर है। अब वह काफी शांत हो चुका था,

आँखें नम हो चुकी थी, क्योंकि डॉक्टर ने उसे बता दिया था कि उसकी पत्नी अब ज्यादा दिन का मेहमान नहीं है। अब वह कुछ भी कर सकने में सक्षम नहीं था। चुपचाप अपनी पत्नी के पास पड़ी कुर्सी पर बैठा रहता और उसे निहारता रहता। "मृत्यु अचानक आ जाए तो ठीक है, परन्तु यदि मृत्यु की तारीख पता चल जाये तो वह अत्यंत कष्टदायक होता है। देखते देखते एक दिन वह समय भी आ गया जब सुभाष को सौंदर्य की प्रतिमा लगने वाली 'जीवन संग्राम' से हारकर उसे अलविदा कह चुकी थी।

अचानक से किसी ने उसे झकझोरा और कहा खाना खा लो 'पापा'। सुभाष की आँखें खुली तो सामने उसकी बेटी खड़ी थी। तभी उसने दुबारा कहा खाना खा लो 'पापा'। सुभाष की जान में जान आई। सुभाष ने अपने मन को धिक्कारा भी और हिम्मत भी दी। धिक्कारा इसलिए कि महज सात साल कि बच्ची यदि अपनी माँ को खोकर हिम्मत बांधकर खड़ी है तो फिर मैं क्यों ऐसे पड़ा हूँ, और हिम्मत इसलिए दी कि क्योंकि उसकी बेटी को देखने वाला अब इस दुनिया में उसके अलावा कोई और नहीं है। सुभाष उठ खड़ा हुआ।

धीरे- धीरे समय बीतता गया और समय के साथ- साथ बेटी भी बड़ी होती चली गयी। बेटी पराया धन होती है और दूसरे के घर जाने के लिए ही होती है, इस बात से अनजान न था

एक दिन हुआ भी यही बेटी का रिश्ता तय हो गया। लड़का शहर का ही था, डॉक्टर था सो वह व्यस्त ही रहता था।

प्रारम्भ में उसने शादी के बाद सुभाष को भी साथ में रखने की बात कही थी परन्तु विवाह के बाद केवल रश्मि को ही साथ में लेकर गया, सुभाष कुछ भी न बोल सका विदाई के समय, आखिर लड़की का पिता जो ठहरा।

सुभाष फिर से अकेला हो गया, और आज उसे समझ में आया कि स्त्री के बिना पुरुष का कोई "वजूद" नहीं है।

कविता



“ऑडिट दिवस”



मीना कुमारी

डाटा एंट्री ऑपरेटर
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा, केंद्रीय व्यय
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
नई दिल्ली

हर साल की तरह इस साल भी हम
चलो ऑडिट दिवस का जश्न हर्षोल्लास से मनायेंगे
नई उमर्गें-नई तरंगें दुनिया को हम दिखलायेंगे
ऑडिट की महत्ता जन-जन तक पहुंचाएंगे
अब तो भ्रष्ट अधिकारी बच नहीं पाएंगे
उनकी पोल ऑडिट से अब हम तो खुलवायेंगे
छुपा हुआ धन अब तो निकलवाएंगे
कड़ी मेहनत और सच्ची निष्ठा अपने अन्दर हम जगाएंगे
सपनों से भी प्यारा हिन्दुस्तान बनाएंगे
आज ऑडिट दिवस के शुभ अवसर पर
सभी अधिकारी और कर्मचारी मिलकर शपथ खायेंगे
जीवन के सभी क्षेत्रों में कड़ी मेहनत और ईमानदारी से
काम करते नज़र आयेंगे
कानून के शासन का हर समय पालन करते जायेंगे
कंपनी और विभागों का ऑडिट करके
देश को रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार से मुक्त करवाएंगे !!

गज़ल

कुछ करने की पहल

रामानन्द शर्मा

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) राजस्थान जयपुर

करो तुम कुछ करने की पहल
तभी जीवन में तुम हो पाओगे सफल ॥

सितारों को छू पाने की हिम्मत रखो
बदल जाएगी किस्मत सितारे जाएंगे बदल ॥
कीचड़ में घुसकर देखो तो सही,
डूबो उसमें तभी तो खेल पायेगा कमल ॥

न सो पाओगे लगातार जो तुम जगते रहे
इसी तरह पड़ेगा तुम्हारी नींद में खलल ॥

बीज बोकर जमीं में बस भूल जाओ तुम
खाद पानी दो तभी तो लहलहाएगी फसल ॥

तोड़ डालो सारे वचन जो तुम्हारे अटूट है।,
टूटन तो होगी पर तभी होगा समस्याओं का हल ॥

कौन चित्रकार

देवेन्द्र कुमार

सहा. प्रशा. अधि. (मुख्यालय-सीमा
शुल्क)

आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ?
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।
गोलू मोलू हूँ या मां का दुलार हूँ।
राजा बेटा हूँ या पापा का प्यार हूँ।
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।
अभिमान हूँ या अश्व बने दादा का सवार हूँ।
बोझ हूँ या दादी के गले का हार हूँ।
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।
कान्हा हूँ या नाना-नानी की बसंत बहार हूँ।
जिम्मेदारी हूँ या मामा के नाव की पतवार हूँ।
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।
हौसला हूँ या भाई का संसार हूँ।
रखवाला हूँ या बहन की राखी का तार हूँ।
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।
आखिर मैं कौन चित्रकार हूँ।

जनधन के प्रहरी

बिभुदत्त दोरा

सहायक लेखा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं
हकदारी) ओडिशा

जैसे सीमा पर सिपाही, देश के रखवाले,
वीरता की मिसाल, साहस के उजाले।
माँ की रक्षा में, खून बहा देते,
अपना समय, जीवन सब अर्पित कर देते।
हर संकट को हराते, हर दुश्मन को पछाड़ते,
अडिग रहते, मातृभूमि का मान बढ़ाते।
वैसे ही हम सब भी निभाते हैं काम,
मंत्री, कलेक्टर, पुलिस - सबका है नाम।
वैसे, सीएजी भी है प्रहरी, शांति में तैनात,
जनधन की रक्षा में रहते हैं बिना पक्षपात।
ना भय, ना लोभ, बस कर्तव्य की बात,
भ्रष्टाचार की परतें खोले, दिखाएँ सच्ची बात।
जहाज़ की तरह हम देश को चलाते,
हर लीक, हर छेद को वक्त पे पकड़ पाते।
अर्थव्यवस्था की रक्षा में, हैं वह महान,
लाखों करोड़ बचाए, बनाए भारत की शान।
बाबा साहेब ने कहा था साफ-साफ,
सीएजी का काम है सबसे खास।
कल भी ज़रूरी था, आज भी है,
हर एक पैसे का हिसाब यही तो कहे।
हर दिन हम आगे बढ़ते हैं, सपने सजते,
तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने को चलते।
लेखा, लेखापरीक्षा और रिपोर्ट तीन स्तंभ महान,
इनके बल पर बढ़े देश का सम्मान।
तो आओ मिलकर एक नयी सुबह सजाए,
अंधकार के दिन अब पीछे छोड़ आए।
भविष्य हमारा है, चमकता हुआ प्रकाश,
अगर मिलकर करें काम. तो न होगा कोई हताश।

पहलगाम



आरती शर्मा

लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) पश्चिम बंगाल

संभालते रह गए पगड़ियां
हम करत-पूछत जात-जात ।

जात न पूछी, कर्म ना पूछा
पूछ धर्म ले गए शीश काट-काट ।

"आतंकवाद" करता हवन और
जलता भारत अहो - अहो ।

अब कब तुम्हारी आँख खुलेगी?
ओ भारतीयों कहो - कहो ?

हुआ रक्तिम पुनः वो ममतामयी आँचल
कभी था जो उजला दुग्ध समान

कुतर रहे धर्म के कीड़े
खोखला हो रहा अपना "भारत महान" ।।

क्षत-विक्षत हो रहा हृदय
भारत मां का
कर रहा चीत्कार सुनो

बहुत रह चुके खामोश अब
तोड़ो समाधि, प्रतिकार चुनो

और कब तक यूँ इतराते फिरेंगे
लिए हाथ में झूठी शान,

बोलो ना ओ मेरे देशवासियों
क्या ना लौटेगा भारत मां को उनका मान ।।

मुश्किलों का हल

हरिओम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ) कोलकाता

"मुश्किलों से जूझकर ही मुश्किलों का हल मिलेगा,
ऊँची शाखों तक चढोगे तब रसीला फल मिलेगा,

प्यास है तो व्यर्थ की निंदा ना आनी काम कोई,
खोदना कुआं पड़ेगा तो ही मीठा जल मिलेगा,

चाह जो भी है तुम्हारी, स्वयं ही करनी पूर्ण होगी,
जब अकेले चल पड़ोगे, राह में फिर दल मिलेगा,

हौसला मन में जगा कर, स्वयं का विश्वास रखना,
कुछ कदम पे साथ देंगे, कुछ पगों में छल मिलेगा,

पुष्प की खुशबू तो विरले ही मिले तुमको घरों में,
पंक में पग जाएंगे तो ही तुम्हें कमल मिलेगा,

ये नहीं मुमकिन सफलता खुद गले तुमको लगा ले,
कोशिशें करनी पड़ेंगी तो ही स्वर्णिम पल मिलेगा,

शांत-चित्त हो दृढ-प्रतिज्ञ, आशा की ज्योति जलाना,
नाम ले लेना हरि का, मन को तेरे बल मिलेगा,

भय, परेशानी, समस्या; मार्ग तो रोकेंगे लेकिन,
आज जितना श्रम करोगे उतना बेहतर कल मिलेगा..."

बुरा ना मानो होली है

नवीन दैया

"एकांत" नई दिल्ली

क्या कहे यारों.....

बुरा ना मानो होली है.....

फाल्गुन ऋतु आई है होली

मन को भाई है प्रेम प्रीत की रीत

मानुस को होली ने सिखाई है *

रंग गुलाल अब्बीर की मस्ती हर दिल में छाई है

राधा संग कान्हा जी खेले,

युगों से परम्परा चली आई है

क्या कहे या.....बुरा ना मानो होली है....

लोग लुगाई खेले है होली,

गोकुलधाम है मस्त पगलों की टोली

पिचकारी लेकर घूमे होलियारे,

फेंके है रंगों की गोली भंग ठंडाई

खूब घुटे, गुजिया की मिठास ना छूटे,

रंग भंग के नशे में सारे,

सुध-बुध कहीं खो जाती है

लट्ट और कोड़ों की होली,

यारों निशान बदन पे दे जाती है

क्या कहे यारों बुरा ना मानो होली है.....

होली की मस्ती में वो,

नाच नाच के आँगन टेढ़ा कर देते है जो,

जोरू की उँगली पे हर रोज नाचते रहते है

.... और जो ना नाचे होली पे, वो जोर से डरते है

क्या कहे यारों..... बुरा ना मानो होली है.....

पूरे साल रहती प्रतीक्षा होली कब आएगी ?

गोकुलधाम वालों जरा बता दो गब्बर को, होली... होली को
ही आएगी जो गैर ना खेले होली पे वो बैर दिलों में रखते है

खूब फेंको रंग इक दूजे पे, फिर होली अगले साल को आएगी

क्या कहे यारों..... बुरा ना माने होली है.....

होली दहन बुराई जलाती, प्रह्लाद हमेशा बच जाता है बुराई पे
अच्छाई की जीत यहीं होली का त्यौहार बताता है

"एकांत" कवि सबको कहता है, अपने हृदय में मुझको रखना
सच्ची कड़वी मीठी बोली मेरी, नहीं कोई बंदूक की गोली।

क्या कहे मारों.....बुरा ना मानो होली है.....



"भारत के वीर सपूत"

विक्रम सिंह

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

जब रणभूमि में गर्जन हो,
शत्रु दलों में कम्पन हो।
वीर सपूत जब हुंकार भरे,
धरती-आकाश में खड़े अड़े।

भारत भूमि की रक्षा में जो लड़े,
बलिदान पथ पर जो आगे बढ़े।
उनके चरणों में शीश नवाएं,
उनकी गाथा हम सब गाएं।

सीमा पर जो प्रहरी बनते,
दिन-रात सजग हैं रहते।
उनके साहस को नमन करें,
उनके जज़्बे को हम प्रणाम करें।

शत्रु के सम्मुख जो न डरे,
हर संकट से जो लड़े।
उनकी वीरता का गुणगान करें,
हम सब मिलकर उनका सम्मान करें।

देशभक्ति की यह मशाल,
जलती रहे हर दिल में लाल।
वीरों की यह अमर कहानी,
बन जाए हर पीढ़ी की निशानी।

भारत माँ के कितने लाल,
खड़े हैं बनकर ढाल,
आओ उनका वंदन करें,

उनकी आँखों में बस एक सपना,
भय मुक्त हो भारत अपना,
बलिदान देकर जो मुस्काएं,
ऐसे वीरों को शीश नवाएं।

चलो दीप जलाएं हर द्वार,
वीरों की गाथा करें स्वीकार,
इनकी गाथा अमर रहे,
जन-जन के मन में सदा बसे।

बूटों की थापों में गीत है वतन के,
धड़कनें चलती हैं मातृभूमि की धुन पे,
हर कदम पे कहानी है त्याग की,
हर साँस में बसी है आग बलिदान की।

भारत माँ के कितने लाल,
खड़े हैं बनकर ढाल।

भारत माँ के कितने लाल,
खड़े हैं बनकर ढाल।

सफर और वो

नीतीश कुमार

लेखाकार / प्रशासन-III

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), बिहार, पटना



आइये आप सब को एक मंजिल की सैर कराता हूँ
मेरी और उनके साथ के सफर की कहानी सुनाता हूँ
वर्ष 2014 और माह सितंबर की बात थी
मेरे जीवन के उन्नीसवें साल की वो एक खूबसूरत रात थी।
जिंदगी कट रही थी यारो मेरी खेल खेल मे,
जब पहली बार वो लड़की दिखी थी मुझे रेल में,



वक्त और पटरियों के साथ-साथ, मैं भी चलता रहा
खामोश इतनी थी वो कि मैं जलता रहा
खिड़की वाली सीट पर हवा और उनके जुल्फ अठखेलियाँ
कर रही थी
उनके चेहरे की शिकन उनकी परेशानी को साफ साफ बयां
कर रही थी
क्या कहूँ उस वक्त मेरे भी लफ्ज कैद थे जेल मे
जब मेरे ठीक सामने बैठी थी वो उस रेल में।



सरपट दौरती रेल उनके और मंजिल की दूरी पाट रही थी
हमे अकेला छोड़ वो खुद से खुद का दर्द बाँट रही थी
कुछ पल बाद वो नजरे मेरी ओर घुमाई-थोड़ी शरमाई



बढ़ते वक्त के साथ मेरे अरमाँ भी बढ़ते गए,
 मैं भी बस उन्हे ही निहार रहा था जैसे बाजारी
 सेल में,
 बड़ी मासूम थी वो, जो पहली बार मिली थी
 मुझे रेल में

दोस्तों उनके जुल्फ उनके मासूम चेहरे को
 सहला रही थी

उन्हे दो लफ्ज कहने की अगन हमे अब जला
 रही थी,

न जाने कितनी बार मुंह पर हाथ रख हिचक रहा था
 उनके पास जाने को मैं अब थोड़ा-थोड़ा खिसक रहा था
 उनका दर्द बाटने ये दिल कह रहा था जा मिलूँ अकेल मे
 थोड़ी उदास थी जब करीब से दिखी थी मुझे रेल में

अब बस हुआ मेरा सब्र खतम, मैंने उनसे उनकी मंजिल की
 पूछ ली,
 किधर जा रहीं हैं अकेले, कहाँ उतरेंगी कोई दिक्कत है आदि
 सुध ली



बंद आंखो मे ही उन्होने हाँ में अपना सिर हिलाया
 बनारस जा रहे थे ऐसा उन्होने दबी जुबान मे मुझे बताया।
 उनकी मीठी आवाज, उनकी खूबसूरती से थी एकदम मेल मे
 हाय बहुत स्वीट सी थी जो पहली बार मिली थी मुझे रेल में।

छुक छुक करती रेल बनारस की ओर दौड़ती जा रही थी
 धीरे धीरे ही सही पर अब उनकी मंजिल करीब आ रही थी,
 अपने सीट से उठ अपना सारा समान बांध
 उतरने को तैयार थी वो भीड़ ऐसी की ठेलम ठेल मे,
 बड़ी प्यारी थी वो जो कुछ वक्त के लिए मिली थी मुझे रेल मे।



" सेहत के दोहे"



पूनम मुन्जाल

पर्यवेक्षक

महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ)
का कार्यालय, दिल्ली

1. पानी करके गुनगुना, मेथी देव भिगाय ।
सुबह चबाकर नीर पी, रक्त जाय सुधराय ॥
- मेथी भिगोकर सुबह खाएं।
वही पानी पिएं, रक्तचाप नियंत्रित होगा।
2. फल या मीठा खाइके, तुरन्त न पीजे नीर ।
ये सब छोटी आंत में बनते विषधर तीर ॥
- फल या मीठा खाने के बाद तुरन्त पानी नहीं पीना चाहिए,
आंतों को तकलीफ हो सकती है।
3. रोज मुलहठी चूसिए, कफ बाहर आ जाए।
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाय ॥
- कफ की समस्या होने पर मुलहठी चूसने से आराम
मिलता है।
4. लौकी का रस पीजिए, चौकर पुक्त पिसान ।
तुलसी, गुड़, सेंधा नमक, हृदय रोग निदान ॥
- हृदय रोग होने पर लौकी का रस, चोकर युक्त आटा,
तुलसी, गुड़, सेंधा नमक फायदा करता है।
5. प्रातः काल पानी पिए, घूंट-घूंट कर आप ।
बस दो-तीन गिलास हैं, हर औषधि का बाप ॥
- सुबह खाली पेट घूंट-घूंटकर दो गिलास पानी पीने से
स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
6. अर्थराइटिस या हर्निया, अपैडिक्स का त्रास ।
पानी पीजे बैठकर कभी ना आवे पास ॥
- अगर बैठकर पानी पिया जाये तो अर्थराइटिस या हर्निया,
अपैडिक्स की समस्या कभी नहीं होगी।
7. प्रातः संध्या पीजिए, खाली पेट सनेह ।
जामुन - गुठली पीसिये, नहीं रहे मधुमेह
- जामुन की गुठली पीसकर, सुबह शाम पानी के साथ पीने
से डायबिटीज में फायदा होता है।
8. आलू का रस अरु शहद, हल्दी पीस लगाव ।
अल्प समय में ठीक हों, जलन, फँफोले, घाव ॥
- आलू के रूस में शहद और हल्दी मिलाकर लगाने से जले

- हुए घाव जल्दी ठीक हो जाते है।
9. चैत्र माह में नीम की पत्ती हर दिन खावो ।
ज्वर, डेंगू या मलेरिया बारहमील भगाये ॥
- गर्मियों की शुरुआत में नीम की कोमल पत्ती खाने से बुखार,
डेंगू या मलेरिया जैसी बीमारी नहीं होती।
10. ठंड लगे जब आपको, सर्दी से बेहार ।
नींबू मधू के साथ में, अदरक पियें उबार ॥
- अदरक को पानी में उबालकर उसमें नींबू का रस और
शहद डालकर पीने से सर्दी जुकाम में फायदा होता है।
11. दो-दो चम्मच शहद और रस ले नीम का पात ।
रोग पीलिया दूर हो, उठे पियें जो प्रातः ॥
- शहद और नीम की पत्तियों का दो-दो चम्मच रस सुबह
उठकर पीने से पीलिया में फायदा होता है।
12. मछली के संग दूध या दूध चाय, नमकीन ।
चर्म रोग के साथ में, रोग बुलाते तीन ॥
- मछली के साथ दूध, दूध मिली चाय या नमकीन खाने से
चर्म रोग हो सकता है।
13. तेल तड़का छोड़कर जित घुमन के जाय ।
मधुमेह का नाश हो, जो जन अलसी खाय ॥
- ज्यादा तला खाना न खाने और नियमित सैर करने के
अलावा अलसी खाने से डायबिटीज में फायदा होता है।
14. गाजर का पियो स्वरस नींबू अदरक लाए।
भूख बढ़े आलस भागे, बदहजमी मिट जाए ॥
गाजर के रस में नींबू और अदरक का रस मिलाकर पीने से
भूख बढ़ती है और बदहजमी दूर होती है।
15. चना चून बिन नून के, जो चौसठ दिन खाएं।
दाद, खाज और सेहुआ बवासीर मिट जाए ॥
- चने के बराबर चूना रोजाना खाने से दाद, खाज, सेहुआ
और बवासीर की तकलीफ दूर होती है।

हर सुबह के नाम एक वादा



कुसुम लता

वरिष्ठ अनुवादक
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली

ए सुबह...!
किस लम्हे में कैद करूँ तुझे?
तू कभी मेरी जागती आंखों की
चमक में उतर आती है—
जैसे कोई अधूरी ख्वाहिश
रोशनी की चुनरी ओढ़े
चुपचाप मेरे सामने आ खड़ी हो।

तो कभी थरथराते लफ़्ज़ों में
धीमे-धीमे बसी मिलती है,
जैसे कोई जज़्बात हों
जो कहे बिना भी
सीधे दिल तक उतर जाएं।

कभी तू हर तरफ होकर भी
मेरे पास नहीं होती—
एक हल्का-सा डर बनकर आती है,
कि कहीं फिर से
अधूरे ना रह जाएं वो पल
जिन्हें तेरी रोशनी पूरा कर सकती थी।

और कभी तू कहीं नहीं होती,
फिर भी इतनी करीब लगती है
कि जैसे रंगों में बह रही हो—
एक अजनबी अपनापन
जो स्पर्श किए बिना भी
छू जाता है रूह को।

तू बिखरी-बिखरी सी है...
हर एहसास तेरा
अलग चोला पहनकर आता है—
एक को पकड़ूं तो दूसरा
फिसलकर धुंध बन जाता है,
जैसे कोई बच्चा
रेत से सपनों के किले बना रहा हो—
पल में बनें, पल में ढह जाएं।

तेरी खामोशी भी
अपना एक शब्दकोश रखती है,
तेरे रंग भी अनगिनत हैं—
कभी हल्का गुलाबी सुकून,
तो कभी गहरा पीला उत्साह।

कभी तू भीगी पलकों की नमी है,
तो कभी मुस्कराहट की धूप है।
कभी तू रूठा हुआ इंतज़ार है,
तो कभी बिना मांगे मिला चैन है।

और अब...
जब तुझे समेटना नहीं चाहती मैं।
तू यूँ ही बहती रह
मेरी सांसों की धड़कनों में,
छूती रहे मुझे
जैसे ठंडी हवा
गर्म दोपहर की थकान पर मरहम रख
दे।

मैं तुझसे लड़ना नहीं चाहती,
तेरे साथ बहना चाहती हूँ—
हर सुबह के साथ
अपने ही भीतर
एक नई मैं को जन्म देते हुए।

तू अब एक सिलसिला बन गई है—
हर दिन की शुरुआत,
हर उम्मीद की मशाल।
तू बन गई है एक अनकहा वादा—
खुद से, जीवन से,
और उन ख्वाबों से
जिन्हें मैं बेझिझक जीना चाहती हूँ।

अब मैं तुझसे नहीं पूछती —
"कहाँ है तू?"
अब मैं तुझमें डूबकर
खुद को तलाशती हूँ,
हर बिखरे एहसास में
एक नई दिशा चुनती हूँ।

क्योंकि तू ही तो सिखाती है—
कि जब तक सुबह आती है,
उम्मीदें कभी सोती नहीं।

हिसाब-किताब

कृष्ण मुरारी जयपुरियार

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी /
सी ए -III मुख्यालय

आओ बैठकर अपने आप से बात करते हैं
क्या खोया क्या पाया
उसका हिसाब करते हैं ।

बचपन गया, जवानी जा रही,
हंसी ठिठोली चुपके से निकाल रही ,
चिंताएं सर चढ़ के चिढ़ा रही,
बढ़ते उम्र के साथ कुछ तरीके बदल कर
नए सिरे से जीने का
आज से ही आगाज करते हैं ।

आओ बैठकर अपने आप से बात करते हैं
क्या खोया क्या पाया
उसका हिसाब करते हैं ।

किसी ने हमें क्या कहा,
हमने किसी को क्या कहा,
इसका दुख छोड़,
खुश रहने के बेहतर प्रयास का,
आज से ही आओ हम शुरुआत करते हैं।

आओ बैठकर अपने आप से बात करते हैं
क्या खोया क्या पाया
उसका हिसाब करते हैं ।

चलो किसी बच्चे के चेहरे पर हंसी लाते हैं,

दोस्तों के साथ बैठकर अपने मन को गुदगुदाते हैं।
अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं से परे ,
आओ सामने वालों से भी स्वयं से अपेक्षित
बर्ताव करते हैं।

आओ बैठकर अपने आप से बात करते हैं
क्या खोया क्या पाया
उसका हिसाब करते हैं ।

अनंत ब्रह्मांड में, असंख्य तारों के बीच,
इस छोटी सी धरा पर,
जीवन मृत्यु के चक्र के बीच,
किस बात के होने का घमंड
आप जनाब करते हैं।

आओ बैठकर अपने आप से बात करते हैं
क्या खोया क्या पाया
उसका हिसाब करते हैं । ।



मेरी अभिलाषा



ऐनी जीजो

व.ले.अ./पीएओ

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, गुजरात, राजकोट-360001

सजदे में, दो शब्द लिखूँ।
यह मेरी अभिलाषा।

तेरी चौखट पर पाई
आन, बान और शान।

मेरे लिए तू ही मंदिर, मस्जिद और गिरजा।
भारत के सीएजी के संगठन से जुड़ना ये मेरा सौभाग्य।

एक ही मुराद - बस इस कार्यालय से जुड़े रहें हम।
हर पल फक्र से कहूँ - ये प्रधान महालेखाकार का कार्यालय हमारा।

बचपन में, इस इमारत के सामने से गुज़रते,
तो कभी सोचा न था, एक दिन ये ही होगा मुकाम मेरा।

जीवन के चक्रकाल में बिताए 40 साल।
इन यादगार पलों को शब्दों में जुटाना चाहूँ।
आधिकारिक कर्तव्य से ज्यादा पारिवारिक संबंध से जुड़े हम।

समय के इस काल में - सीखते-सिखाते बीत गया एक लम्बा सफ़र।
कुछ खट्टी-मिट्टी यादें, कुछ मित्र जो हमेशा याद रहेंगे।
कैसे कर्ज चुकाऊँ तेरा?
इस चौखट पर खुद को, और मेरे अपनों को भी महफूज पाऊँ।

यहीं मुराद मेरी - बना रहें ये आश्रय हमारा।
हर जन्म में- 'कर्म के फल स्वरूप तुझे ही पाऊँ।

यह ही 'मेरी अभिलाषा।

शुचिता का स्वर : लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

डा० प्रदीप अग्रवाल

लेखापरीक्षक/वाराणसी मण्डल
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा पूर्वोत्तर रेलवे,
गोरखपुर

आंकड़ों और प्रविष्टियों की जांच करना हमारा कर्तव्य है,
हम भारत के लेखापरीक्षण की सबसे बड़ी इकाई के सदस्य हैं।
लोकहित के लिए सत्य और निष्ठा की भावना से हमारी उत्पत्ति
होती है,

146 करोड़ नागरिकों के मन की आस हमें काम करने की
शक्ति देती है।

रेल, तेल, सामाजिक, रक्षा, व्यवसाय के क्षेत्रों के कार्यों पर हम
नज़र रखते हैं,

क्या सही है, क्या गलत है, कैसा होना चाहिए, इस पर हम
टिप्पणी करते हैं।

इनके अतिरिक्त हम खेल और कला के क्षेत्र में भी कमाल
करते हैं,

हमारे सदस्य विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं को जीत कर
धमाल करते हैं।

पक्ष और विपक्ष हर किसी को हमारी रिपोर्टों का इंतज़ार रहता
है,

कितना सफल हुआ है कोई भी मिशन, संसद में फिर इस बात
का सवाल रहता है।

हम अपने कर्तव्यों से देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं,

नीतियों, व्यवस्थाओं, कार्यप्रणाली का मूल्यांकन कर हम
विभागीय कार्य सुनिश्चित कराते हैं।

पारदर्शिता और सुशासन का हम एक अटूट पैमाना हैं,

भ्रष्टाचार के अंधेरे में हम शुचिता का परवाना हैं।

न किसी का पक्ष, न कोई द्वेष, बस आंकड़ों का सम्मान है,
हमारी कलम की स्याही में ही जनता का स्वाभिमान है।

हर खर्च की पाई-पाई का हम सटीक हिसाब देते हैं,

अनियमितताओं के हर कठिन सवाल का जवाब देते हैं।

डिजिटल युग की नई लहर में अब हम खुद को ढाल रहे हैं,
तकनीक और डेटा की शक्ति से सुदृढ़ कल को पाल रहे हैं।

कहने को हम सरकारी व्यवस्था का मात्र एक छोटा सा अंग हैं,
फिर भी हमारे कार्यों से होने वाले फायदों से ये दुनिया दंग है।

सिर्फ कमियां ढूंढना नहीं, हम सुधार का मार्ग दिखाते हैं,

राष्ट्र के संसाधन व्यर्थ न हों, यह बोध हम कराते हैं।

उम्मीद है हम सब यूं ही व्यवस्था को सशक्त बनाते रहेंगे,

अपनी लगन और ऊर्जा से भारत के काम आते रहेंगे।

जब तक रहेगा यह संस्थान, लोकतंत्र का प्रहरी कहलाएगा,
'सत्यमेव जयते' का आदर्श ही सदा हमें मार्ग दिखाएगा।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग को समर्पित...

निजी यादों के नूर

- रचनाकार

श्री सियाशरण

-प्रधान निदेशक, जी ए एस ए बी

निजी यादों के नूर
कहीं लुट न जाएं

यादें जो निजी है उन्हें
पर्दे में रहने दो,
पड़े उन्हें दिल की गहराईयों में रहने दो

यादों के नूर
कहीं लुट न जाएं
उन्हें पर्दे में रहने दो

यादें जो निजी है
उन्हें पर्दे में रहने दो

चली जाएगी
मेरे साथ
मेरे फना होने के बाद

दिल के तहखाने में
रखी है
रखी ही रहने दो

यादें जो निजी है
उन्हें पर्दे में रहने दो

बड़ी कोमल है
संभाल कर रखा है मैंने
बरसों से इनको

बचाए रखा है मैंने इनको
गैरों के सायों से
कहीं वो आम ना हो जाए

यादें जो निजी हैं
रूह में उन्हें घुलने दो
दिल के अनछुए दर्द
के संग उन्हें मिलने दो

यादें जो निजी हैं
दिल के कोने में उपजी हैं,
कोई छू ना ले
लम्हों की कोमल पंखुड़ियां को
दुनियादारी के भंवरो से बचकर उनको रहने दो

यादें जो निजी हैं
उनको पर्दे में रहने दो

प्रेसक प्रसंग

सत्संग की महिमा

-संपादक के विचार

एक बार एक चोर जब मरने लगा तो उसने अपने बेटे को बुलाकर एक नसीहत दी:- "अगर तुझे चोरी करनी है तो किसी गुरुद्वारा, धर्मशाला या किसी धार्मिक स्थान में मत जाना बल्कि इनसे दूर ही रहना और दूसरी बात अगर कभी पकड़े जाओ, तो यह मत स्वीकार करना कि तुमने चोरी की है, चाहे कितनी भी सख्त मार पड़े।"

चोर के लड़के ने कहा:- "सत्य वचन"। इतना कहकर वह चोर मर गया और उसका लड़का रोज रात को चोरी करता रहा।

एक बार उस लड़के ने चोरी करने के लिए किसी घर के ताले तोड़े, लेकिन घर वाले जाग गए और उन्होंने शोर मचा दिया। आगे पहरेदार खड़े थे। उन्होंने कहा:- "आने दो, बच कर कहां जाएगा"? एक तरफ घरवाले खड़े थे और दूसरी तरफ

पहरेदार।

अब चोर जाए भी तो किधर जाए। वह किसी तरह बच कर वहां से निकल गया। रास्ते में एक धर्मशाला पड़ती थी। धर्मशाला को देखकर उसको अपने बाप की सलाह याद आ गई कि धर्मशाला में नहीं जाना। लेकिन वह अब करे भी तो क्या करे ? उसने यह सही मौका देख कर वह धर्मशाला में चला गया। जहाँ सत्संग हो रहा था।

वह बाप का आज्ञाकारी बेटा था, इसलिए उसने अपने कानों में उंगली डाल ली जिससे सत्संग के वचन उसके कानों में ना पड़ जाए। लेकिन आखिरकार मन अडियल घोड़ा होता है, इसे जिधर से मोड़ो यह उधर नहीं जाता है। कानों को बंद कर लेने के बाद भी चोर के कानों में यह वचन पड़ गए कि देवी



देवताओं की परछाई नहीं होती। उस चोर ने सोचा की परछाई हो या ना हो इस से मुझे क्या लेना देना।

घर वाले और पहरेदार पीछे लगे हुए थे। किसी ने बताया कि चोर, धर्मशाला में है। जांच पड़ताल होने पर वह चोर पकड़ा गया।

पुलिस ने चोर को बहुत मारा लेकिन उसने अपना अपराध कबूल नहीं किया। उस समय यह नियम था कि जब तक मुजरिम, अपराध ने स्वीकार कर ले तो सजा नहीं दी जा सकती।

उसे राजा के सामने पेश किया गया वहां भी खूब मार पड़ी, लेकिन चोर ने वहां भी अपना अपराध नहीं माना। वह चोर देवी की पूजा करता था। इसलिए पुलिस ने एक ठगिनी को सहायता के लिए बुलाया। ठगिनी ने कहा कि मैं इसको मना लूंगी। उसने देवी का रूप भर कर दो नकली बांहें लगाई, चारों हाथों में चार मशाल जलाई और नकली शेर की सवारी की।

क्योंकि वह पुलिस के साथ मिली हुई थी इसलिए जब वह आई तो उसके कहने पर जेल के दरवाजे कड़क कड़क कर खुल गए। जब कोई आदमी किसी मुसीबत में फंस जाता है तो अक्सर अपने इष्ट देव को याद करता है। इसलिए चोर भी देवी की याद में बैठा हुआ था कि अचानक दरवाजा खुल गया और अंधेरे कमरे में एकदम रोशनी हो गई।

देवी ने खास अंदाज में कहा:-" देख भक्त! तूने मुझे याद किया और मैं आ गई। तूने बड़ा अच्छा किया कि तुमने अपना अपराध स्वीकार नहीं किया। अगर तूने चोरी की है तो मुझे सच-सच बता दे। मुझसे कुछ भी मत छुपाना। मैं तुम्हें फौरन आजाद करवा दूंगी।"

चोर, देवी का भक्त था। अपने इष्ट को सामने खड़ा देखकर बहुत खुश हुआ और मन में सोचने लगा कि मैं देवी को सब सच सच बता दूंगा। वह बताने को तैयार ही हुआ था कि उसकी नजर देवी की परछाई पर पड़ गई। उसको फौरन सत्संग का वचन याद आ गया कि देवी देवताओं की परछाई

नहीं होती। उसने देखा कि इसकी तो परछाई है वह समझ गया कि यह देवी नहीं बल्कि मेरे साथ कोई धोखा है।

वह सच कहते कहते रुक गया और बोला:-" मां! मैंने चोरी नहीं की। अगर मैंने चोरी की होती तो क्या आपको पता नहीं होता। जेल के कमरे के बाहर बैठे हुए पहरेदार चोर और ठगनी की बातचीत नोट कर रहे थे। उनको और ठगिनी को विश्वास हो गया कि यह चोर नहीं है।

अगले दिन उन्होंने राजा से कह दिया कि यह चोर नहीं है। राजा ने उसको आजाद कर दिया। जब चोर आजाद हो गया तो सोचने लगा कि सत्संग का एक वचन सुनकर मैं जेल से छूट गया हूं। अगर मैं अपनी सारी जिंदगी सत्संग सुनने में लगाऊं तो मेरा तो जीवन ही बदल जाएगा। अब वह प्रतिदिन सत्संग में जाने लगा और चोरी का धंधा छोड़ कर अच्छा इंसान (महात्मा) बन गया।

शिक्षा:-

कलयुग में सत्संग ही सबसे बड़ा तीर्थ है।

पापी कौन

यात्रियों से भरी बस चली जा रहा थी, तभी अचानक मौसम बदला और भारी बारिश चालू हो गयी और बिजली भी चारों तरफ चमकने लगी सभी देख रहे थे कि बिजली कभी भी बस को चपेट में ले सकती है।

अकाशीय बिजली से बचने के 2 या 3 कठिन प्रयास के बाद, चालक ने पेड़ से पचास फुट की दूरी पर बस बंद कर कहा कि -

"हमारी पास बस में कोई है जिसकी मृत्यु आज निश्चित है।"

उस व्यक्ति की वजह से बाकी सब लोग भी मारे जाएंगे। अब ध्यान से सुनिये जो मैं कह रहा हूं ..मैं चाहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति बस से उतर एक-एक कर बाहर जाकर पेड़ के तने को स्पर्श करे और वापस आ जाए।



"जिसकी मौत निश्चित है वह बिजली से पकड़ा जाएगा और मर जाएगा और बाकी सभी को बचा लिया जाएगा।"

उसने पहले व्यक्ति को जाने और पेड़ को छूने और वापस आने के लिये कहा वह अनिच्छा से बस से उतर गया और पेड़ को छुआ।

उसका दिल प्रसन्न हो गया जब कुछ भी नहीं हुआ और वह अभी भी जीवित था।

यही क्रम बाकी यात्रियों के लिए जारी रहा और उन सभी को राहत मिली जब वे पेड़ को छू कर लौटे और कुछ भी नहीं हुआ। लेकिन जब आखिरी यात्री की बारी आई, तो सभी उसे आँखों से घूरने लगे।

वह यात्री बहुत डर गया और अनिच्छुक था क्योंकि वही केवल अकेला बचा था। सभी ने उसे नीचे उतरने और जाने और पेड़ को छूने के लिए मजबूर किया। मृत्यु के 100% भय के साथ, अंतिम यात्री पेड़ के पास गया और उसे छुआ।

उसी समय वहाँ गड़गड़ाहट की एक बड़ी आवाज़ गूँजी और बिजली ने बस को चपेट में ले लिया। बिजली के चपेट में आने से बस के अंदर सभी मारे गये।

इस घटना से यह स्पष्ट हो गया कि पूरी बस इस आखिरी यात्री की उपस्थिति के कारण सुरक्षित थी।

कई बार, हम अपनी वर्तमान उपलब्धियों के लिए स्वयं श्रेय लेने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि यह हमारे साथ जुड़े एक व्यक्ति के कारण है। शायद उस व्यक्ति की वजह से हम अपनी वर्तमान खुशी, सम्मान, प्रेम, नाम, प्रसिद्धि, वित्तीय सहायता, शक्ति, स्थिति और क्या आनंद नहीं ले रहे हैं।

अपने चारों ओर देखिए शायद आपके माता-पिता, आपके पति या पत्नी, आपके बच्चे, आपके भाई-बहन, आपके मित्र आदि के रूप में आपके आस-पास कोई है, जो आपको नुकसान से बचा रहे हैं ...!!

इसके बारे में सोचिये और उस आत्मा को धन्यवाद दीजिए!

मुख्यालय समाचार



1. सीएजी ने प्रौद्योगिकी आधारित लेखापरीक्षा और लेखांकन को विकसित भारत 2047 के मार्ग के अनुरूप ढाला।
2. सीएजी के अनुसार, वे सार्वजनिक वित्तीय निगरानी के लिए एक प्रौद्योगिकी आधारित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करेंगे।

श्री के. संजय मूर्ति ने विश्व लेखाकार मंच को संबोधित किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति ने कहा कि 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ते हुए, लेखापरीक्षा एवं लेखांकन के क्षेत्र में प्रगति और बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग करना होगा। वे भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) द्वारा आयोजित विश्व लेखापरीक्षा मंच को संबोधित कर रहे थे। सीएजी ने कहा, “विकसित भारत के मार्ग में हमें देश को प्रौद्योगिकी-संचालित और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में देखना होगा, जिसमें मजबूत सार्वजनिक वित्त और एक लचीला वित्तीय क्षेत्र हो। लेखांकन एवं लेखापरीक्षा पेशे को इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।”

सीएजी ने डिजिटल प्रौद्योगिकी की प्रमुख भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि यह हमारे समय में एक महत्वपूर्ण सहायक होने के साथ-साथ व्यवधान उत्पन्न करने वाली भी है: “आज उपलब्ध तकनीकी समाधानों की विस्तृत श्रृंखला ने संगठनों द्वारा उच्च प्रदर्शन परिणाम प्राप्त करने की क्षमता और पैमाने को बदल दिया है। हमारे लिए यह एक रोमांचक चुनौती है क्योंकि 2025 का भारत 2047 के विकसित भारत बनने की ओर अग्रसर है, जिसका लक्ष्य 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाना है। मौजूदा संरचनाओं और प्रक्रियाओं को हूबहू दोहराकर अधिक कंपनियों और बड़े सरकारी बजटों का प्रबंधन नहीं किया जा सकता। इन चुनौतियों से निपटने

और परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना आवश्यक होगा।”

श्री मूर्ति ने कहा, “30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का डिजिटल होना अनिवार्य होगा, क्योंकि संगठन उभरते क्षेत्रों में विस्तार कर रहे हैं और वैश्विक स्तर पर अग्रणी कंपनियां उभर रही हैं। लेखांकन और लेखापरीक्षा पेशेवरों को आवश्यक सहयोग प्रदान करना होगा। नई तकनीकों को अपनाने से लेखांकन और लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में अपेक्षित दक्षता लाने में मदद मिलेगी। नवोन्मेषी तकनीकी पद्धतियों को विकसित करने और अपनाने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने से भारतीय कंपनियों को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनने में भी मदद मिलेगी।”

सीएजी के संबोधन में लेखापरीक्षा और लेखांकन में प्रौद्योगिकी और नवाचार के सभी पहलुओं को शामिल किया गया, जिसमें बताया गया कि एआई, मशीन लर्निंग, रोबोटिक ऑटोमेशन और ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी ने इस क्षेत्र में किस प्रकार क्रांति ला दी है। उन्होंने कहा, “प्रौद्योगिकी के विकास और अनुकूलन के लिए बौद्धिक और अवसंरचनात्मक क्षमताओं में परिवर्तन की आवश्यकता होगी।” विश्व आर्थिक मंच की हालिया ‘द फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025’ का हवाला देते हुए, सीएजी ने बताया कि इसमें परिवर्तन के कारकों और आने वाले वर्षों में आवश्यक कौशल पर प्रकाश डाला गया है। रिपोर्ट में कहा गया है, “प्रौद्योगिकी से संबंधित भूमिकाएं प्रतिशत के

हिसाब से सबसे तेजी से बढ़ने वाली नौकरियां हैं, जिनमें बिग डेटा विशेषज्ञ, फिनटेक इंजीनियर, एआई और मशीन लर्निंग विशेषज्ञ और सॉफ्टवेयर और एप्लिकेशन डेवलपर शामिल हैं। सीएजी ने रिपोर्ट के हवाले से कहा कि 2025-2030 की अवधि में मौजूदा कौशल सेटों का दो बटा पांचवां हिस्सा परिवर्तित हो जाएगा या अप्रचलित हो जाएगा।”

सीएजी संस्था की विशाल जिम्मेदारी को रेखांकित करते हुए श्री मूर्ति ने कहा कि हम समय के साथ और विकसित भारत मिशन की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, “हमने एक व्यापक डिजिटलीकरण यात्रा शुरू की है। हम लेखापरीक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों को और अधिक एकीकृत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एआई और एमएल की परिवर्तनकारी क्षमता को पहचानते हुए, हमने पहले ही इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए आवश्यक बुनियादी ढांचे और प्रक्रियाओं का निर्माण शुरू कर दिया है ताकि इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग लेखापरीक्षा

प्रक्रियाओं में और एआई अनुप्रयोगों की स्वयं लेखापरीक्षा करने के लिए किया जा सके।”

अपने विस्तृत संबोधन में श्री मूर्ति ने कहा, “मूल बात यह है कि हम सार्वजनिक वित्तीय निरीक्षण के लिए एक प्रौद्योगिकी-संचालित पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहे हैं।”

वर्ल्ड फोरम ऑफ अकाउंटेंट्स एक वार्षिक सम्मेलन है, और इस वर्ष आईसीएआई ने इसकी मेजबानी की। सीएजी ने अपने संबोधन की शुरुआत में कहा, “जैसा कि मैं समझता हूं, वर्ल्ड फोरम ऑफ अकाउंटेंट्स लेखाकारों, लेखापरीक्षकों और वित्त पेशेवरों, व्यापारिक नेताओं और लेखांकन एवं लेखापरीक्षा पेशे के नियामकों में से कुछ सबसे प्रतिभाशाली लोगों को एक साथ लाता है।”

मंच पर सीएजी श्री के संजय मूर्ति के साथ भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के अध्यक्ष श्री रणजीत के अग्रवाल एवं श्री चरण जोत नन्दा सनदी लेखाकार हैं।



24 फरवरी 2025, नई दिल्ली

आईआईटी मद्रास के साथ हस्ताक्षरित दो समझौता ज्ञापनों से लेखापरीक्षा कौशल में वृद्धि होगी और सतत लेखापरीक्षा में सुधार होगा : सीएजी

आईआईटी मद्रास के निदेशक ने “डिजिटल दुनिया में शासन” विषय पर अंबेडकर स्मृति व्याख्यान दिया।

आईआईटी मद्रास के निदेशक डॉ. वी. कामाकोटी ने आज यहां भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में डॉ. भीम राव अंबेडकर व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत एक भाषण दिया और इस बारे में विस्तार से बताया कि आईआईटीएम और सीएजी कार्यालय लेखापरीक्षा कार्य को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी साझा करने में किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं।

अपने संबोधन में सीएजी श्री के. संजय मूर्ति ने कहा कि जल्द ही सब कुछ डिजिटल रूप में दर्ज हो जाएगा और हमें इस कार्य को प्रभावी और कुशल तरीके से करने के लिए अपनी क्षमता का विस्तार करना होगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए हमने कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिनमें सबसे पहला समझौता ज्ञापन आईआईटी मद्रास के साथ है, और इनमें दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर काम किया जा रहा है। पहला साइबर सुरक्षा से संबंधित है, जिसमें हमारे मैनुअल और प्रोटोकॉल सिस्टम आदि को अद्यतन करने की आवश्यकता है। दूसरा, उन संस्थाओं का ऑडिट करने के लिए दिशानिर्देश विकसित करना है, जिनमें डिजिटल डेटा की मात्रा लगातार बढ़ती जाएगी। ऑडिट करते समय हमें किस प्रकार के डेटा का सामना करना पड़ेगा?

सीएजी ने कहा, ‘अगले पांच वर्षों में हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि मेरे पास प्रोटोकॉल का एक निर्धारित सेट हो। मैं यह सारा जमीनी काम कर लूं कि जब मैं किसी संस्थान से ऑडिट के लिए संपर्क करूं, तो यह स्वतः स्पष्ट हो जाए कि उनसे क्या

अपेक्षा की जा रही है? उन्हें किन चीजों के लिए तैयार रहना होगा और हम उन संस्थाओं का दूरस्थ रूप से ऑडिट करने की क्षमता कैसे विकसित कर सकते हैं। इस समझौता ज्ञापन से हमारी यही एक बड़ी अपेक्षा है। हमें उम्मीद है कि आप श्रोताओं को कुछ उदाहरणों के माध्यम से यह समझाएंगे कि किस प्रकार का खतरा मौजूद है और उन चुनौतियों का सामना करने के लिए हम सभी को किस प्रकार की क्षमताएं विकसित करने की आवश्यकता है।’

सीएजी ने आगे कहा कि ‘कार्यक्रम का दूसरा हिस्सा सतत लेखापरीक्षा से संबंधित है। आईआईटी मद्रास में एक शानदार सतत आईआईटी स्कूल है, जो उसी परिसर में कार्यरत है। वहां काफी काम चल रहा है और हम सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के बारे में बात कर रहे हैं। मेरा मानना है कि हमें इन संस्थाओं के लिए सार्थक लेखापरीक्षा प्रदान करने की अपनी क्षमता का निर्माण करने की आवश्यकता है।’

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (आईआईटी-एम) के साथ हुए समझौता ज्ञापन का उद्देश्य सीएजी और आईआईटी-एम (जो कि प्रमुख तकनीकी संस्थानों में से एक है) के बीच रणनीतिक सहयोग स्थापित करना है। इसका लक्ष्य नवाचार को बढ़ावा देना, डेटा विश्लेषण क्षमताओं को बढ़ाना और प्रौद्योगिकी-संचालित विकास में योगदान देना है।

यह सहयोग लेखापरीक्षा प्रक्रिया की प्रभावशीलता और दक्षता को बढ़ाने के लिए दोनों संगठनों की विशेषज्ञता और संसाधनों को संयोजित करेगा।

प्रमुख फोकस क्षेत्र हैं: डेटा गवर्नेंस और सुरक्षा; बिग डेटा और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की तैयारी; अकादमिक और अनुसंधान सहयोग; उन्नत ऑडिटिंग पद्धतियां; स्थिरता और शासन तथा संयुक्त अनुसंधान और विकास पहल।

आईआईटी - मद्रास और इंटरनेशनल सेंटर फॉर एनवायरनमेंट ऑडिट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (आईसीईडी), जयपुर के

बीच हस्ताक्षरित दूसरा समझौता ज्ञापन पर्यावरण लेखापरीक्षा और पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन (ईएसजी) के क्षेत्र में क्षमता निर्माण और अनुसंधान के लिए सहयोग हेतु है। यह साझेदारी लेखापरीक्षा के इन क्षेत्रों की प्रभावशीलता में सुधार के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल) और अन्य तकनीकी प्रगति का लाभ उठाएगी।



सीएजी श्री के संजय मूर्ति, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के निदेशक डा वी कामकोटि को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए

4 मार्च, 2025, नई दिल्ली

सीएजी ने आर्थिक क्षेत्र में लेखापरीक्षा के प्रभाव को बढ़ाने के लिए आईआईएम अहमदाबाद के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने आर्थिक क्षेत्र में लेखापरीक्षा के प्रभाव को बढ़ाने के लिए कल भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद (आईआईएमए) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। आईआईएमए और सीएजी के बीच यह साझेदारी लेखापरीक्षा परिदृश्य में हो रहे परिवर्तनों के अनुरूप लेखापरीक्षा ढांचे को मजबूत करने के अवसरों की पहचान करने में सहायक होगी। इस एमओयू के तहत किए जाने वाले अध्ययन में प्रारंभ में दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों - विद्युत और रेलवे - पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

विकासशील भारत की दिशा में आर्थिक क्षेत्र के मंत्रालयों, विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और निकायों की महत्वपूर्ण भूमिका है। नियामक परिदृश्य, प्रौद्योगिकी और सेवा वितरण के दृष्टिकोण में परिवर्तनकारी बदलावों के साथ यह क्षेत्र लगातार विकसित हो रहा है।

भारत के विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य में विद्युत क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योंकि यह आर्थिक विकास, औद्योगीकरण और रोजगार सृजन को गति प्रदान करता है, साथ ही ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करता है। इसके अलावा, एक सुदृढ़ विद्युत क्षेत्र समावेशी विकास, जीवन स्तर में सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है। आधुनिक अवसंरचना की रीढ़ होने के नाते, विद्युत क्षेत्र 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने की दिशा में भारत की यात्रा में केंद्रीय भूमिका निभाता है। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाने, विश्वसनीय बिजली तक पहुंच में सुधार करने और तकनीकी

नवाचारों को अपनाने की योजनाओं के कारण यह क्षेत्र लेखापरीक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु बन जाता है।

रेलवे क्षेत्र कनेक्टिविटी और राष्ट्रीय एकता के माध्यम से आर्थिक विकास को गति देने का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। विश्व के सबसे बड़े परिवहन नेटवर्कों में से एक के रूप में, भारतीय रेलवे माल और लोगों की आवाजाही को सुगम बनाता है, जो औद्योगीकरण, व्यापार और वाणिज्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। गतिशीलता बढ़ाकर और रसद लागत को कम करके, रेलवे क्षेत्र 2047 तक भारत को विकसित करने के लक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके अलावा, भारतीय रेलवे को तकनीकी रूप से उन्नत, पर्यावरण के अनुकूल और ग्राहक-केंद्रित संगठन में परिवर्तित करने की योजना इस क्षेत्र को लेखापरीक्षा के लिए एक प्रमुख केंद्र बिंदु बनाती है।

आईआईएमए के साथ समझौता ज्ञापन का उद्देश्य सीएजी और आईआईएमए के बीच एक रणनीतिक सहयोग स्थापित करना है, ताकि दोनों क्षेत्रों में हाल के और नियोजित विकासों का अध्ययन किया जा सके, लेखापरीक्षा ढांचे और प्रथाओं का अध्ययन किया जा सके, हितधारकों के साथ परामर्श किया जा सके और वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन किया जा सके, जिससे इन क्षेत्रों में सार्वजनिक लेखापरीक्षा को और मजबूत करने के अवसरों की पहचान की जा सके।

इस सहयोग का उद्देश्य लेखापरीक्षा संबंधी सिफारिशों के माध्यम से इन क्षेत्रों में परिचालन और सेवा वितरण में सुधार लाना है। यह सहयोग लेखापरीक्षा प्रक्रिया की प्रभावशीलता

और दक्षता को बढ़ाने के लिए दोनों संगठनों की विशेषज्ञता और संसाधनों को संयोजित करेगा।

इस व्यापक अध्ययन में वर्तमान लेखापरीक्षा पद्धतियों का आकलन, साहित्य समीक्षा और वैश्विक मानकों के साथ तुलना, अंतर्दृष्टि और प्रतिक्रिया के लिए हितधारकों से परामर्श और सिफारिशों सहित एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना शामिल होगा।

आईआईएमए के निदेशक प्रोफेसर भारत भास्कर और एसएमयू की प्रधान निदेशक (कार्मिक एवं समन्वय) सुश्री स्वाति पांडे ने भारत के सीएजी श्री के संजय मूर्ति और सीएजी

कार्यालय के अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। आईआईएमए की ओर से इस समझौता ज्ञापन के कार्यान्वयन का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर अजय पांडे और प्रोफेसर सोमेश कुमार अगरवाला भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

यह साझेदारी सीएजी कार्यालय द्वारा हाल ही में किए गए अन्य रणनीतिक सहयोगों के बाद हुई है, जिसमें पिछले महीने आईआईटी मद्रास के साथ हस्ताक्षरित दो समझौता ज्ञापन भी शामिल हैं, जो साइबर सुरक्षा और सतत लेखापरीक्षा प्रथाओं पर केंद्रित हैं।



सीएजी श्री के संजय मूर्ति, भारतीय प्रबंधन संस्थान के निदेशक प्रो. भारत भास्कर को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए (03-03-2025)

5 मार्च, 2025, नई दिल्ली

सीएजी और सोलहवें वित्त आयोग ने सार्वजनिक वित्त पर परामर्श किया

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) श्री के. संजय मूर्ति ने आज भोपाल में डॉ. अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में सोलहवें वित्त आयोग के साथ बैठक की। यह उच्च स्तरीय परामर्श आयोग द्वारा केंद्र और राज्यों के वित्तीय परिदृश्य के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विचार-विमर्श मुख्य रूप से तीन प्रमुख क्षेत्रों: संघ और राज्य वित्त, स्थानीय निकाय और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (पी.एस.ई.) पर केंद्रित था। संघ, राज्य, स्थानीय निकाय और पी.एस.ई. सीएजी की लेखापरीक्षा के अधीन हैं। इसके अलावा, सीएजी राज्यों के लेखाओं का भी रखरखाव करता है।

सीएजी ने विभिन्न क्षेत्रों में संघ और राज्यों के लिए विभिन्न लेखापरीक्षा निष्कर्षों, राजकोषीय चुनौतियों और तनाव बिंदुओं को साझा किया, जिसमें केंद्र और राज्यों के लिए व्यय और गैर-ऋण प्राप्ति के बीच का अंतर भी शामिल है। प्रमुख विचारणीय बिंदुओं में राज्यों के स्वामित्व वाले कर राजस्व (एस.ओ.टी.आर.) में गिरावट और राज्यों के एस.ओ.टी.आर. और गैर-कर राजस्व के अलग-अलग स्तर शामिल हैं, जो अधिक मजबूत राजस्व संग्रह तंत्र की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। सीएजी ने बजट से बाहर उधारी की नियमित रिपोर्टिंग, एफ.आर.बी.एम. लक्ष्यों को पूरा करने तथा सीएजी द्वारा अपनी रिपोर्टों में गणना की गई लेखापरीक्षा के बाद की देनदारियों को ध्यान में रखने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित किया। यह संघ और राज्यों के लिए राजकोषीय समेकन की सीमा की जांच करते समय वित्त आयोग के लिए सूचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है।

सीएजी की प्रस्तुति ने अप्रयुक्त राजस्व स्रोतों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उल्लेखनीय रूप से, स्टाम्प ड्यूटी, पंजीकरण शुल्क और राज्य उत्पाद शुल्क संग्रह जैसे क्षेत्रों की पहचान ऐसे क्षेत्रों के रूप में की गई है जिनमें राजकोषीय प्रदर्शन को

बढ़ाने की पर्याप्त संभावना है। इस संबंध में सिफारिशों में बाजार मूल्य दिशानिर्देशों के लिए नियमित अद्यतन, संपत्ति के प्रकारों का बेहतर वर्गीकरण, और राजस्व रिसाव को कम करने और आंकड़ों की सटीकता में सुधार करने के लिए आधुनिक तकनीक जैसे सेंसर-आधारित सिस्टम और क्यूआर कोड को अपनाना शामिल हैं।

वस्तु एवं सेवा कर (जी.एस.टी.) प्रशासन के क्षेत्र में, सीएजी ने कर आधार को व्यापक करने और पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से कई सुधारों का भी प्रस्ताव किया है। सुझाए गए उपायों में संशोधित करदाता सत्यापन प्रक्रियाओं के साथ-साथ स्वचालित आंकड़ों का संग्रह और वास्तविक समय की सूचना प्रणाली के माध्यम से जी.एस.टी. ढांचे में अपंजीकृत वस्तुओं और सेवा प्रदाताओं का एकीकरण शामिल है। इन पहलों से न केवल कर संग्रह प्रक्रिया सुव्यवस्थित होने की उम्मीद है, बल्कि अंतर राज्य कर प्रवाह का अधिक सटीक विभाजन भी हो सकता है।

सीएजी ने तुलनीय राजकोषीय सूचना की पारदर्शी और तत्काल उपलब्धता के लिए सरकार के सभी स्तरों पर लेखांकन प्रथाओं को मानकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रस्तुति में व्यय के वस्तु शीर्षों के सामंजस्य और विचलन के बिना राज्य सरकारों द्वारा एक समान 6-स्तरीय वर्गीकरण प्रणाली को अपनाने का आह्वान किया गया। इस बात पर भी प्रकाश डाला गया कि तत्काल उपाय के रूप में शीर्ष 100 शहरों में केंद्र और राज्य खातों के साथ स्थानीय निकायों के खातों के सामंजस्य का प्रयास किया जा सकता है। इस तरह के कदम राजकोषीय आंकड़ों के निर्बाध समेकन की सुविधा प्रदान करेंगे और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता को मजबूत करेंगे, जिससे नीति निर्माताओं को राजस्व और व्यय दोनों में स्पष्ट जानकारी के साथ सशक्त बनाया जा सकेगा।

चर्चा का एक महत्वपूर्ण आकर्षण अच्छी प्रथाओं का समर्थन था, जैसे कि अधिशेष राजस्व वाले क्षेत्राधिकारों द्वारा बजट स्थिरीकरण कोष की स्थापना। यह निधि, खनिज संसाधनों जैसे विशिष्ट राजस्व स्रोतों से प्राप्त आय का उपयोग करके अप्रत्याशित बजटीय कमी या चक्रीय व्यवधानों से निपटने के लिए तैयार की गई है, तथा इसे समान राजकोषीय प्रोफाइल वाले अन्य क्षेत्रों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस उपाय को अपनाने से वित्तीय लचीलेपन में वृद्धि और सभी क्षेत्राधिकारों में अधिक स्थिर राजकोषीय प्रबंधन में बढ़ोतरी हो सकती है।

बैठक का एक प्रमुख घटक स्थानीय निकायों के वित्तीय प्रबंधन पर केंद्रित है। सीएजी ने कई शहरी स्थानीय निकायों और पंचायती राज संस्थानों में निष्पादन लेखापरीक्षा के अंश साझा किए, जिसमें कार्यों के अधूरे हस्तांतरण, केंद्रीय और राज्य अनुदान पर भारी निर्भरता और स्वयं के राजस्व स्रोत के निम्न स्तर जैसे मुद्दों की ओर इशारा किया गया। इस संबंध में, सिफारिशों में राज्यों द्वारा यू.एल.बी. और आर.एल.बी. को किए गए भुगतान/निधि हस्तांतरण के लिए एकीकृत वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (आई.एफ.एम.एस.) के स्थानीय

निकाय उपयोग को एकीकृत करना और जमीनी स्तर पर सुसंगत और पारदर्शी वित्तीय रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के लिए लेखांकन प्रथाओं को सुव्यवस्थित करना शामिल है। यू.एल.बी./आर.एल.बी. के लेनदेन के प्रसंस्करण तथा उनके लेखाओं के लिए विशेष रूप से उपयुक्त प्रणाली के विकास की आवश्यकता का सुझाव दिया गया था, जिसे एफ.सी. द्वारा प्रोत्साहित किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, 16वें वित्त आयोग के साथ सीएजी की बातचीत ने राजकोषीय पारदर्शिता को मजबूत करने, राजस्व प्रदर्शन को बढ़ाने और सरकार के सभी स्तरों पर मजबूत वित्तीय प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए एक विस्तृत रोडमैप प्रदान किया। अनुशंसित उपायों की परिकल्पना जवाबदेही को बढ़ावा देने, कुशल संसाधन आवंटन के संचालन और संघ और राज्यों के दीर्घकालिक राजकोषीय समेकन का समर्थन करने के लिए की गई है।

एफ.सी. के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगढ़िया ने अपने समापन भाषण में आयोग को ये जानकारी प्रदान करने में सीएजी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की, जो उनकी सिफारिशें तैयार करते समय बहुत मूल्यवान होगा।



दिनांक 05.03.2025 को भोपाल में आयोजित बैठक में सीएजी श्री के. संजय मूर्ति और 16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगढ़िया अपने अधिकारियों के साथ।

26 मार्च, 2025, नई दिल्ली

सीएजी ने लेखापरीक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए बीआईएसएजी-एन के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भौगोलिक सूचना प्रणाली और रिमोट सेंसिंग में उन्नत प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाने के लिए, भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने आज यहां गांधीनगर, गुजरात स्थित भास्करचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना विज्ञान संस्थान (बीआईएसएजी-एन) के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

यह समझौता ज्ञापन श्री टी.पी. सिंह, महानिदेशक-बीआईएसएजी-एन और श्री एस. रामन, उप सीएजी/सीटीओ द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति की उपस्थिति में हस्ताक्षरित किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री मूर्ति ने कहा कि बीआईएसएजी-एन जैसे तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर संगठन के साथ सहयोग करने से न केवल लेखापरीक्षा क्षमताओं में वृद्धि होगी, बल्कि हमारे सार्वजनिक संस्थानों की तकनीकी क्षमताओं का प्रदर्शन भी होगा। उन्होंने कहा कि हम इस उत्पाद को डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) के हिस्से के रूप में विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

बीआईएसएजी-एन के साथ साझेदारी से सीएजी को अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों को एकीकृत करके लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने हेतु भू-स्थानिक परामर्श सेवाएं प्राप्त होंगी। इस सहयोग का उद्देश्य लेखापरीक्षा ढांचे को सुदृढ़ करना और लेखापरीक्षा से संबंधित परियोजनाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और बिग डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाते हुए अनुकूलित भू-स्थानिक समाधान विकसित करना है। इसका लक्ष्य लेखापरीक्षा पद्धतियों में भू-स्थानिक उपकरणों के एकीकरण के लिए तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करना और लेखापरीक्षा अनुप्रयोगों के लिए भू-स्थानिक विश्लेषण, रिमोट सेंसिंग

और उपग्रह छवि विश्लेषण में संयुक्त अनुसंधान करना है। यह लेखापरीक्षा में भू-स्थानिक अनुप्रयोगों से संबंधित केस स्टडीज की पहचान और विकास पर भी ध्यान केंद्रित करेगा, साथ ही सीएजी अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करेगा।

यह साझेदारी लेखापरीक्षा में अत्याधुनिक तकनीकी समाधानों और समग्र कौशल विकास को शामिल करने के लिए सीएजी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिससे भारत में वित्तीय जवाबदेही और शासन सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका और मजबूत होती है।

दोनों संगठनों ने पीएम-गतिशक्ति पाइपलाइन में उपलब्ध भू-स्थानिक डेटा और अन्य संबंधित डेटा का उपयोग करके ऑडिट विश्लेषण के लिए एक अनुकूलित प्लेटफॉर्म बनाने का निर्णय लिया है।



नई दिल्ली में 26 मार्च 2025 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने के पश्चात श्री टी पी सिंह महानिदेशक बीआईएसएजी – एन को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सीएजी श्री के. संजय मूर्ति



26 मार्च 2025 को समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित होने के अवसर पर सीएजी श्री के संजय मूर्ति, श्री टी पी सिंह, महानिदेशक बीआईएसएजी – एन, श्री एस रमन उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक/मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं अन्य अधिकारी गण

28 मार्च, 2025, नई दिल्ली

भारत के सीएजी ने शहरी विकास में क्षमता निर्माण के लिए एनआईयूए के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

सीएमआई के साथ समझौता ज्ञापन का उद्देश्य उन गैर-संज्ञानात्मक कौशलों को बढ़ाना है जो लेखापरीक्षा की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने शहरी विकास में लेखापरीक्षा योजना, प्रक्रियाओं और क्षमता निर्माण को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शहरी मामलों के संस्थान (एनआईयूए) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। हस्ताक्षर समारोह आज यहां भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति और संबंधित संस्थानों के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य लेखापरीक्षा के दृष्टिकोण से शहरी क्षेत्र से संबंधित विषयवस्तु और पाठ्यक्रम विकसित

करने में सहयोग करना है, जिससे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (आईए एंड ए डी) के अधिकारियों के लेखापरीक्षा कौशल को बढ़ाने में मदद मिल सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि शहरी विकास से संबंधित भविष्य की लेखापरीक्षाएं तेजी से विकसित हो रहे शहरी परिदृश्य के अनुरूप हों। इस साझेदारी का लक्ष्य क्षमता निर्माण पहलों को मजबूत करना और पेशेवरों को शहरी विकास के क्षेत्र में विशेष कौशल से लैस करना है, जिसमें आईए एंड ए डी के अधिकारियों और कर्मचारियों की लेखापरीक्षा क्षमताओं को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

क्षेत्रीय जटिलताओं की गहरी समझ को बढ़ावा देकर, यह पहल न केवल आईए एंड ए डी कर्मियों की व्यावसायिक क्षमता को बढ़ाएगी बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगी कि शहरी

विकास कार्यक्रमों के भविष्य के ऑडिट शहरी शासन के बदलते परिदृश्य के अनुरूप हों।

इस पहल में ऑनलाइन स्व-अध्ययन मॉड्यूल, शहरी लेखापरीक्षा उपकरण और उत्पाद, ऑनलाइन और आमने-सामने प्रशिक्षण के माध्यम से संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना और साथ ही चिन्हित शहरों में जाकर प्रत्यक्ष शिक्षण प्रदान करना शामिल है। इसके अलावा, समझौता ज्ञापन में सीएजी अधिकारियों और शहरी स्थानीय निकायों के लेखापरीक्षकों के बीच ज्ञान साझा करने और नेटवर्किंग के लिए एक ऑनलाइन मंच के रूप में कम्युनिटी ऑफ प्रैक्टिस के विकास की परिकल्पना की गई है।

इसमें शहरी क्षेत्र में सामने आने वाले नए मुद्दों और चुनौतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए सेमिनार, ऑडिट परामर्श और कार्यशालाओं का आयोजन शामिल है।

यह साझेदारी अनुसंधान और विकास में सहयोग तक विस्तारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य शहरी लेखापरीक्षा उपकरण और उत्पाद तैयार करना, केस स्टडी और शहरी क्षेत्र के लिए नवीन लेखापरीक्षा पद्धतियों का विकास करना है, ताकि इन्हें सीएजी अधिकारियों के साथ साझा किया जा सके। इसके अतिरिक्त, सीएजी अधिकारियों के साथ पारस्परिक परामर्श से, संयुक्त लेखापरीक्षा या अनुसंधान परियोजनाओं के लिए संसाधन व्यक्तियों की उपलब्धता, उन्नत लेखापरीक्षा योजना पद्धतियों

पर मार्गदर्शन, घरेलू सर्वेक्षण प्रश्नावली का विकास, क्षेत्र सर्वेक्षण डिजाइन, साक्षात्कार तकनीक, लेखापरीक्षा निष्पादन और रिपोर्टिंग रणनीतियों पर सलाह देना भी परिकल्पित है।

सीएजी श्री के. संजय मूर्ति की उपस्थिति में प्रतिस्पर्धात्मक मानसिकता संस्थान (सीएमआई) के साथ एक और समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह सहयोग लेखापरीक्षा की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले गैर-संज्ञानात्मक कौशलों को बढ़ाने पर केंद्रित है। इस साझेदारी का उद्देश्य सीएमआई विशेषज्ञों द्वारा संचालित विशेष प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करना है, ताकि लेखापरीक्षा दक्षता बढ़ाने के लिए कर्तव्यनिष्ठा, पहल, नवाचार, दृढ़ता और समस्या-समाधान जैसे महत्वपूर्ण गैर-संज्ञानात्मक कौशलों पर संरचित कार्यक्रम प्रदान किए जा सकें। इसके अतिरिक्त, आईएएडी के भीतर व्यापक कौशल विकास सुनिश्चित करने के लिए सीएजी कार्यालय और सीएमआई के बीच प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पारस्परिक समन्वय किया जाएगा।

ये साझेदारियां लेखापरीक्षा में विशेषज्ञता विकसित करने, व्यावहारिक अंतर्दृष्टि को बढ़ावा देने और निरंतर व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सीएजी की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, जिससे भारत के शहरी क्षेत्र में जवाबदेही और शासन सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका और मजबूत होती है।

बीएससी/एसएस/टीटी/14-25

08 अप्रैल, 2025, नई दिल्ली

समझौता ज्ञापन

जनाग्रह सेंटर फॉर सिटीजनशिप एंड डेमोक्रेसी एवं भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) कार्यालय ने 8 अप्रैल 2025 को हस्ताक्षरित एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से पांच वर्षीय अ-वित्तीय साझेदारी को औपचारिक रूप दिया। इस समझौते पर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (स्थानीय सरकार लेखापरीक्षा) श्री सुबीर मलिक और जनाग्रह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री श्रीकांत विश्वनाथन ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के संजय मूर्ति और भारत

के पूर्व उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक तथा नई दिल्ली स्थित जनाग्रह के वरिष्ठ सलाहकार श्री केशवन श्रीनिवासन की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। यह सहयोग तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित होगा: -

"शहरी स्थानीय सरकारों में वित्तीय रिपोर्टिंग और डेटा प्रणालियों को बेहतर बनाने के लिए एक नए और उन्नत राष्ट्रीय नगरपालिका लेखा नियमावली (एनएमएएम) और नगरपालिका वित्त संहिता का विकास।"

"बड़े शहरों में जीवन यापन और व्यापार करने की सुगमता की अग्रणी स्थान-आधारित लेखापरीक्षा करने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता सहित, शहरी स्थानीय निकायों में ऑडिट प्रणालियों को मजबूत करना।"

"शहरी स्थानीय निकायों (यूएलजी) में पारदर्शिता और जवाबदेही पर नागरिक समाज और शिक्षाविदों के साथ जुड़ाव, लेखापरीक्षा रिपोर्टों को अधिक सुलभ बनाना और एक अधिक मजबूत शहरी डेटा पारिस्थितिकी तंत्र को उत्प्रेरित करना।"

यह साझेदारी भारत के सीएजी की ऐतिहासिक नगरपालिका लेखांकन और लेखापरीक्षा पहलों और हमारे पिछले सफल

सहयोगों पर आधारित है। सम्मिलित रूप से, हमारा लक्ष्य भारत भर के शहरों और कस्बों में वित्तीय प्रबंधन और सेवा वितरण संबंधी चुनौतियों का समाधान करना है।



22 अप्रैल, 2025, नई दिल्ली

सीएजी और आईसीएआई ने क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) ने चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य सीएजी संस्थान में वाणिज्यिक लेखांकन और वित्तीय लेखापरीक्षा, कराधान और अन्य संबंधित पहलुओं के क्षेत्रों में क्षमता निर्माण ढांचे को मजबूत करना है।

हस्ताक्षर समारोह कल यहां भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति और संबंधित संस्थानों के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित किया गया था।

सीएजी ने कहा, "यह समझौता ज्ञापन आर्थिक विकास और उन्नति में योगदान देने के व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक क्षमता को मजबूत करने में सहायक होगा। मानव संसाधनों की क्षमता निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण है और आईसीएआई का व्यावसायिक अनुभव और विशेषज्ञता संबंधित क्षेत्र के ज्ञान को मजबूत करने में सहायक होगी।"

इस समझौता ज्ञापन में नए भर्ती हुए लोगों के लिए प्रवेश स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुभवी अधिकारियों के लिए उन्नत स्तर के कार्यक्रम और आईसीएआई के साथ साझेदारी में सतत व्यावसायिक शिक्षा (सीपीई) तंत्र शामिल होंगे।

इस साझेदारी का उद्देश्य लेखांकन मानकों, लेखापरीक्षा मानकों, ईआरपी जैसे डिजिटल सिस्टम और क्षेत्र-विशिष्ट अनुप्रयोगों पर लेखापरीक्षा, फॉरेंसिक लेखांकन और धोखाधड़ी जांच आदि को कवर करने वाले व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना है। ये कार्यक्रम व्यावहारिक और अनुप्रयोग-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाएंगे, जिसका उद्देश्य संबंधित क्षेत्रों में विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ाना है।

यह साझेदारी सीएजी की लेखापरीक्षा में विशेषज्ञता विकसित करने, व्यावहारिक अंतर्दृष्टि को बढ़ावा देने और निरंतर व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, ताकि हमारे हितधारकों के लिए लेखापरीक्षा उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके।



सीएजी श्री के. संजय मूर्ति, भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के अध्यक्ष श्री चरणजोत सिंह नन्दा के साथ भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान एवं सीएजी के मध्य हस्ताक्षरित ज्ञापन के दस्तावेजों का आदान प्रदान करते हुए

22 अप्रैल, 2025, नई दिल्ली

सीएजी ने तालमेल और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक नेतृत्व सम्मेलन का आयोजन किया

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) कार्यालय ने आज यहां दो दिवसीय "ब्रेकिंग साइलो - फॉस्टरिंग सिनर्जीज" रणनीतिक नेतृत्व सम्मेलन का सफलतापूर्वक समापन किया। अपने ज्ञानवर्धक मुख्य भाषण में सीएजी श्री के. संजय मूर्ति ने हितधारकों की सहभागिता को मजबूत करने, लेखापरीक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार करने और संगठन के सभी स्तरों पर नैतिक नेतृत्व को सुदृढ़ करने के महत्व पर बल दिया। सीएजी ने विशेष रूप से संस्था के उन मूल मूल्यों को बनाए रखते हुए तकनीकी नवाचारों को अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जो लंबे समय से संस्था की विशिष्टता रहे हैं। यह सम्मेलन लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं और कार्यप्रणालियों में सार्थक तालमेल स्थापित करने के स्पष्ट उद्देश्य से संगठन के विभिन्न विभागों के बीच संवाद के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ।

केंद्रीय राजस्व, लोक निर्माण, आयकर और स्टाम्प एवं पंजीकरण विभागों सहित विभिन्न क्षेत्रों में दूरस्थ लेखापरीक्षा

क्षमताओं का व्यापक रूप से परीक्षण किया गया, जिससे लेखापरीक्षा की प्रभावशीलता से समझौता किए बिना बदलते परिचालन संदर्भों के प्रति सीएजी की अनुकूलन क्षमता का प्रदर्शन हुआ।

नवाचार और उत्कृष्टता के उत्सव के रूप में आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से प्राप्त 70 से अधिक प्रविष्टियों में से चयनित विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों की सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। उल्लेखनीय नवाचारों में विभिन्न राज्यों के लेखापरीक्षा कार्यालयों द्वारा कार्यान्वित दूरस्थ अनुपालन लेखापरीक्षा पद्धतियाँ, लेखापरीक्षा में व्यापक हितधारक परामर्श और पेंशन प्रणालियों का पूर्णतः डिजिटलीकरण शामिल थे।

इस उच्चस्तरीय कार्यक्रम में सभी राज्यों के अटॉर्नी जनरल कार्यालयों और विभाग के कार्यात्मक विंगों के क्षेत्रीय कार्यालयों के विभागाध्यक्षों सहित 150 से अधिक अधिकारियों, साथ ही मुख्यालय से उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक और

अतिरिक्त उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक सहित वरिष्ठ प्रबंधन एक साथ आए, ताकि सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा में बेहतर सहयोग और उत्कृष्टता के लिए संगठन के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया जा सके।

सम्मेलन में उपस्थित विशिष्ट बाहरी विशेषज्ञों ने शिक्षा जगत और सरकार के बहुमूल्य दृष्टिकोणों से इसे समृद्ध बनाया। आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर सुधीर के. जैन ने सीएजी से बाहरी हितधारकों की अपेक्षाओं पर एक विचारोत्तेजक प्रस्तुति दी, जबकि आईआईटी मद्रास के प्रोफेसर मधुसूदनन भास्करन ने लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स के अभूतपूर्व अनुप्रयोगों का प्रदर्शन किया। बीआईएसएजी-एन के विशेष महानिदेशक डॉ. विनय ठाकुर ने प्रतिभागियों को स्थानिक लेखापरीक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए जीआईएस मानचित्रण और गतिशक्ति प्लेटफॉर्म की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी। सम्मेलन को लेखा महानियंत्रक श्री एस.एस. दुबे की विशेषज्ञता से भी लाभ हुआ, जिन्होंने बेहतर वित्तीय जवाबदेही के लिए सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली का लाभ उठाने पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा की।

सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण पहलू तकनीकी प्रगति और डेटा-आधारित कार्यप्रणालियों पर व्यापक ध्यान केंद्रित करना था। कई सत्रों में डेटा विश्लेषण-आधारित जोखिम के लिए रूपरेखाओं का पता लगाया गया।

यह मूल्यांकन लेखापरीक्षा नियोजन और क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है। स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सेवा संस्थान (MoSPI) के सचिव श्री सौरभ गर्ग द्वारा लाभार्थी सर्वेक्षणों और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटासेटों के उपयोग पर दी गई प्रस्तुति में साक्ष्य-आधारित लेखापरीक्षा के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए, जो भविष्य की लेखापरीक्षाओं की गहराई और प्रभाव को बढ़ाने का वादा करते हैं।

इस सम्मेलन में प्रमुख संस्थानों के साथ रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से क्षमता निर्माण पर विशेष बल दिया गया। आर्थिक क्षेत्र लेखापरीक्षा में क्षमताओं को बढ़ाने के लिए आईआईएम अहमदाबाद, प्रदर्शन लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने के लिए आईआईएम कोझिकोड और सूचना सुरक्षा लेखापरीक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुप्रयोगों में क्षमता निर्माण के लिए आईआईटी मद्रास के साथ की गई पहलों को प्रदर्शित किया गया। ये साझेदारियां सीएजी के उस दूरदर्शी दृष्टिकोण को दर्शाती हैं जिसके तहत वह अपने कर्मियों को जटिल आधुनिक लेखापरीक्षा चुनौतियों के लिए आवश्यक विशेष कौशल से लैस करता है।

सम्मेलन के समापन पर, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एचआर, आईआर, समन्वय एवं विधिक) श्री के.एस. सुब्रमण्यम ने प्रमुख निष्कर्षों को प्रस्तुत किया और आगे की राह की रूपरेखा बताई, जिसके बाद सीएजी ने उत्साहवर्धक समापन टिप्पणी दी।



सेवानिवृत्ति

सुश्री ऐतरेयी दास

स्वभाव से मृदुल किन्तु कार्य में पाबंद सुश्री ऐतरेयी दास ने भी गत जून 2025 को विभाग को अलविदा कह दिया। अपने सेवा काल में कई महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करने वाली सुश्री दास ने अपनी शासकीय सेवा का प्रारम्भ प्रधान महालेखाकार के कार्यालय (लेखा एवं हकदारी-द्वितीय) मध्य प्रदेश, ग्वालियर से की थी। इस कार्यालय में उनकी नियुक्ति सहायक महालेखाकार के पद पर वर्ष 1992 के अगस्त माह में हुई थी जबकि भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा में उन्होंने 20 अगस्त 1990 को प्रवेश किया था। सीएजी मुख्यालय में उन्होंने प्रथम बार निदेशक के पद पर अपनी सेवा वर्ष 1999 से प्रारम्भ की। महालेखाकार का ग्रेड उन्होंने वर्ष 2006 के मई माह में प्राप्त किया जब उनकी नियुक्ति पूर्व तट रेलवे लेखापरीक्षा के कार्यालय भुवनेश्वर में प्रधान निदेशक के पद पर हुई हालांकि उससे पूर्व वे पूर्वी अफ्रीका के हॉर्न ऑफ अफ्रीका देश एरीट्रिया में स्थानिक लेखापरीक्षक के रूप में एक वर्ष से अधिक समय तक कार्य कर चुकी थीं। आपने वर्ष 2021 में एडीएआई (अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक) का ग्रेड प्राप्त किया जब आपकी नियुक्ति सीएजी मुख्यालय में एडीएआई (प्रशिक्षण) के पद पर हुई। आपने वर्ष 2023 में डीएआई का ग्रेड प्राप्त किया जब आपकी नियुक्ति उत्तर रेलवे स्कन्ध के डीएआई (उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक) के पद पर हुई।

अपने सेवा काल में आप कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा रही जिनमें प्रमुख हैं : “प्रत्यक्ष कर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम”, “प्रभावी रणनीतिक नेतृत्व” एवं “रेलवे का परिचालन” आदि। विदेशों में कई स्थानों पर महत्वपूर्ण पदों पर आपने अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया। खाद्य एवं कृषि संगठन की लेखापरीक्षा हेतु आपने इटली एवं रोम में कार्य किया। रूस जापान, आयरलैंड, जॉर्जिया, नार्वे आदि देशों में भी आपने समय समय पर विभिन्न प्रकार के लेखापरीक्षा से संबंधित कार्यों में अपनी सेवाएँ दीं।



सुश्री देविका नायर

सरल स्वभाव की सुश्री देविका नायर भारत के सुदूरतम प्रांत केरल की निवासी हैं जिन्होंने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा में 20 अगस्त 1990 को प्रवेश किया। प्रबंधन में परास्नातक उपाधिधारी सुश्री नायर ने इस सेवा में प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) के कार्यालय तमिलनाडु चेन्नई से अपने सेवाकाल का प्रारम्भ किया जहां वे सहायक महालेखाकार के रूप में नियुक्ति हुई। उत्तरोत्तर प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उन्होंने वर्ष 1997 में वरिष्ठ उपमहालेखाकार ग्रेड में प्रवेश कर लिया जहां उन्हें अपने गृहराज्य केरल में नियुक्ति मिली जब प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के कार्यालय में उन्हें वरिष्ठ उपमहालेखाकार के पद पर नियुक्त किया गया। इसी दौरान उन्हें दिल्ली स्थित आईसीजीईबी की लेखापरीक्षा के संदर्भ में ट्रिस्टी (इटली) में भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ जहां उनहोंने अपनी योग्यता सद्धि की।



महालेखाकार ग्रेड में उन्होंने वर्ष 2006 में प्रवेश किया जब उन्हें प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा) के पद पर दक्षिण पश्चिम रेलवे नियुक्त किया गया जहां वे लगभग तीन वर्षों तक पदस्थापित रहीं। इसके बाद उन्होंने महालेखाकार गोवा का पद संभाला जहां उन्होंने छः वर्षों का एक लम्बा समय बिताया। फरवरी 2023 में उन्हें एडीएआई ग्रेड प्राप्त हुआ और उन्हें गोवा छोड़कर दिल्ली स्थित सीएजी मुख्यालय आना पड़ा जहां वे मई 2025 में अपने सेवानिवृत्त होने रहीं।

उन्होंने विदेशों में भी उतनी ही लगन से कार्य किया जितनी लगन से वे भारत में कार्य करती थीं। नीदरलैंड में आयोजित रासायनिक हथियारों के संगठन की कार्यकारिणी परिषद में उन्होंने सहभागिता की। पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय के व्हार्टन विद्यालय द्वारा आयोजित उन्नत प्रबंधन विकास कार्यक्रम में भाग लेने के लिए भी उन्हें आमंत्रित किया गया।

अपने सम्पूर्ण सेवाकाल के दौरान समूचे विभाग में उनकी छवि एक सरल स्वभाव किन्तु अनुशासन पसंद अधिकारी की रही।

सेवानिवृत्ति

श्री बिभाष रंजन मण्डल

31 मई 2025 को सेवानिवृत्त होने वाले श्री बिभाष रंजन मण्डल अपने सहकर्मियों के मध्य एक सक्षम अधिकारी के रूप में पहचान बनाने वाले अधिकारी थे मूलतः पश्चिम बंगाल के उत्तर चौबीस परगना जिले के निवासी श्री मण्डल ने वित्तीय प्रबंधन



(एमबीए – फ़ाइनेंस) में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। ग्यारह सितंबर 1994 को भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा में प्रवेश करने वाले श्री मण्डल ने इस सेवा में अपने कैरियर का प्रारम्भ प्रधान महालेखाकार के कार्यालय, भुवनेश्वर उड़ीसा से सहायक महालेखाकार के पद से किया। कालांतर में उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों एवं कार्यालयों में अपनी सेवाएँ दीं। कुछ समय के लिए वे प्रशांत महासागरीय देश नौरू के महालेखापरीक्षक के रूप में भी

रहे जहाँ के उनके संस्मरणों को पाठक इसी पत्रिका के पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं। वे कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी हिस्सा बने जिनमें से प्रमुख है : “लेखापरीक्षा के लिए अभियांत्रिकी के आधारबिन्दु”, “पर्यावरण लेखापरीक्षा”, “भारतीय लेखाकरण मानक” आदि। इसी दौरान विश्व बैंक के नई दिल्ली कार्यालय द्वारा आयोजित किए गए एक सेमिनार में भी प्रतिभागिता की। त्रिपुरा के महालेखाकार एवं प्रधान महालेखाकार, दोनों पदों पर वे नियुक्त हुए। उन्होंने विदेशों में यथा, लंदन, दुबई, सिंगापुर, मनीला आदि देशों में भी अपनी सेवाएँ दीं। सीएजी मुख्यालय में भी वे कई स्कंधों जैसे पश्चिम क्षेत्र, निरीक्षण एवं रेलवे बोर्ड आदि में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। आपका एक बंगला काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। स्वभाव से अत्यंत मृदुभाषी श्री मण्डल सेवानिवृत्ति के समय महानिदेशक (निरीक्षण) के पद पर थे।

महिला दिवस उत्सव

दिनांक 08 मार्च को कार्यालय में महिला दिवस धूमधाम से मनाया गया जिसमें कार्यालय के हर स्तर पर कार्यरत महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ज़ोर शोर से भागीदारी की। इस दौरान युवा एवं उत्साही महिला अधिकारियों / कर्मचारियों ने अनेकों तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उच्च अधिकारियों में सुश्री रीमा प्रकाश, सुश्री कीर्ति तिवारी ने समारोह में उपस्थित होकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया। सुश्री अनामिका ने डीएआई महोदया का स्वागत किया। समाज में महिलाओं की स्थिति पर सुश्री सोनाली ने एक ओजस्वी भाषण दिया। सुश्री सुनीता, नेहा, दया एवं अंजनी लता ने कवितापाठ किया जबकि सुश्री सुष्मिता, छाया, मोनिका एवं सुचित्रा ने मधुर गायन की प्रस्तुति दी। सुश्री शांतिश्री ने लोकनृत्य की

मनमोहक प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। सुश्री निशा एवं बबीता के होली नृत्य ने सबको प्रेम की होली के रंगों से सराबोर कर दिया। सुश्री हेमा एवं मीनाक्षी के दल ने समूह नृत्यों की झांकी प्रस्तुत की। रंगारंग कार्यक्रम के अतिरिक्त समारोह में हास्य नृत्यों के दो कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनमें एक ‘बीए पास’ नामक नृत्य नाटिका भी थी। ध्यातव्य है कि ये सारी प्रस्तुतियाँ किन्हीं व्यावसायिक कलाकारों की न होकर कार्यालय में कार्यरत महिलाओं की थीं जिन्होंने इन गंभीर प्रस्तुतियों से यह सिद्ध कर दिया कि कार्यालय की नीरस दिनचर्याओं ने उनके अंदर की प्रतिभा को मलीन नहीं किया है। यदि अवसर मिले तो वे बड़े मंचों पर भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकती हैं।

महिला दिवस उत्सव की झलकियां









5 मार्च 2025 को 16वें वित्त आयोग के साथ बैठक

पंजीकरण सं-2 एल/8747177/87(90)



सीएजी मुख्यालय में सामूहिक ऊर्जा के साथ मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124